बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ

(हास्य-एकांकी)

बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ

(हास्य-एकांकी)

बचाओ, मुझे डॉक्टरों से बचाओ

[हास्य-एकांकी]

डॉ० शंकर पुणतांबेकर
अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग
एम. जे. कालेज, जलगांव



पुस्तक संस्थान
१०९/५० ए-नेहरु नगर, कानपुर-१२

● पुस्तक
बचाओ, मुझे डॉक्टरों से बचाओ
हास्य-एकांकी
● लेखक
डॉ० शंकर पुणतांबेकर
● प्रकाशक
पुस्तक संस्थान
१०९/५०-ए, नेहरूनगर
कानपुर–१२
● प्रकाशन काल
दिसंबर, १९७२
● मूल्य : ७.५०
● मुद्रक
विवेक प्रेस
ब्रह्मनगर, कानपुर-१२

अनुक्रम

बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ

पात्र

पिताजी, कैलाश, किशोर, भोला,
शांति, उषा

(एक बँगले का डाइग-रूम । टेबल पर खाना लगा हुआ है और पिताजी, शांति और उषा बैठे हुए हैं । परदा उठता है उस समय घड़ी में एक बजता है ।)

पिताजी – घड़ी जैसे हम सब लोगों को खाने के टेबल पर देखकर ही एक-बजाती है ।

शांति – हां, डरती है बेचारी डॉक्टरों से । जहां परिवार के सभी सदस्य डॉक्टर हों वहां यह कभी बीमार पड़ने की बात कभी सोच ही नही सकती ।

उषा – सो तो है । लेकिन शाति, हम लोग मनुष्य के डॉक्टर हैं, घडियों के नही ।

शांति – ऐसा क्यों नही कहती भाभी, कि हम लोग घड़ी साज नही हैं, मनुष्यसाज हैं ।

(सभी हँस पड़ते हैं ।)

पिताजी – तुम लोगों मे यहां टेबल पर आकर बैठता हूं तो अस्पताल की सारी थकान दूर हो जाती है ।

शांति – भाभी, कैलाश कहां है ? क्या वह अभी अस्पताल से नही लौटा ?

उषा – ओह, मैं यह तो कहने को भूल ही गई कि आज प्रातः हमारे यहां मेहमान आए हैं । उन्ही को लेकर कैलाश इधर आ रहे हैं ।

शांति – ओह मेहमान···

पिताजी – कौन आया है ?

उषा – देखो न । कैलाश मेहमान को लेकर इधर आ जो रहे हैं ।

(कैलाश का किशोर के साथ प्रवेश ।)

कैलाश – पिताजी, यह किशोर है मेरा दोस्त । लखनऊ यूनिवर्सिटी में फिजिक्स का रीडर है । आप तो जानते हैं साइंस कॉलेज में पढ़ते हुए हम दोनों होस्टल में एक ही रूम मे

रहते थे। बैठो किशोर।(किशोर एक कुर्सी पर बैठता है।) तुम्हे इन लोगो का परिचय करा दूं। ये है मेरे पिताजी-डॉक्टर रामनाथ, ई-एन-टी स्पेशलिस्ट। यह है मेरी बहन शांति-डॉक्टर शाति, हार्ट स्पेशलिस्ट। और पत्नी उषा से तो तुम्हारा परिचय आज प्रातः हो ही गया है।

किशोर – (हँसता हुआ)डॉक्टर उषा से कहो। आप किस बीमारी की स्पेशलिस्ट हैं ?

कैलाश – यह···यह हैं मेटर्निटी-स्पेशलिस्ट।

किशोर – ओ हो, मेटर्निटी स्पेशलिस्ट। लेकिन जमाने को देखते हुए आपको तो लाल-त्रिकोण स्पेशलिस्ट होना चाहिए।
(सुनकर सभी हँस पड़ते हैं। कैलाश भी अब तक एक कुर्सी पर बैठ गया है।)

पिताजी – अरे, हम लोग खाना क्यों नही शुरू कर रहे हैं ?

शांति – ओ हो, मेहमान के आने की खुशी में हम लोग खाने की बात ही भूल गए।
(सब लोग खाना शुरू कर देते हैं।)

पिताजी – तुम हमारे यहां पहली बार ही आए हो किशोर।

किशोर – हां। कैलाश की शादी में आना चाहता था, लेकिन ऐन मौके पर बीमार पड़ गया।

पिताजी – हां हां, याद आया। तुम्हारे पिताजी का पत्र आया था।

शांति – पिताजी, यह बेकार डर गए आने से। यहां आते ही हम डॉक्टरों के बीच इनकी बीमारी हवा हो जाती।

उषा – बात तो ठीक कही शांति।
(नौकर भोला का प्रवेश)

भोला – आपका फोन है बाबूजी।

पिताजी – लोग खाना भी चैन से नही खाने देते **(उठकर जाते हैं। भोला भी उनके पीछे जाता है।)**

किशोर – मैं आ तो जाता शांति । लेकिन सोचा आप लोग जब एक बीमार में व्यस्त हैं तो मैं चलकर और क्यों तकलीफ दूँ ।

शांति – हम···हम लोग किस बीमार मे व्यस्त थे ? हमारे यहाँ तो उस समय कोई भी बीमार नही था ।

किशोर – बीमार···एक बहुत बड़ा बीमार था उस समय आप लोगों के घर मे ।

उषा – क्या बात कर रहे हैं आप । कैलाश, कौन था उस समय बीमार ?

किशोर – उसे कुछ नहीं मालूम । मैं जानता हूँ । शांति, उस समय आप सब लोग कैलाश की शादी का ज्वर दूर करने में व्यस्त थे ।

(सुनकर सब लोग हँसते हैं)

कैलाश – किशोर तुम्हारी मजाक करने की पुरानी आदत अभी भी गई नही है ।

किशोर – होस्टल में तुम्ही तो कहा करते थे एक उम्र में पहुँच कर मनुष्य को एक बहुत बुरा ज्वर चढ़ता है ।

शांति – (हँसती हुई) और वह है शादी का ज्वर । नही ?

किशोर – हाँ ।

कैलाश – अब किसी दूसरे विषय पर बात करने के लिए क्या लोगे ?

किशोर – (आँखें मिचकाकर उषा की ओर देखते हुए)–ज्वर की दवा तो अच्छी रही कैलाश ?

(इसी समय पिताजी आते हैं और अपनी जगह आकर बैठ जाते हैं ।)

कैलाश – कौन था पिताजी ?

किशोर – कोई मरीज ही होगा, यदि नंबर राग न हुआ तो ।

पिताजी – नही, मरीज नही था ।

किशोर – तो फिर कौन था ?

पिताजी – (हँसते हुए)—उसका पिता था ।

(सुनकर सभी हँस पड़ते हैं ।)

कैलाश – लो लो, ये कचौरियाँ लो किशोर ।

किशोर – बस बस, ले चुका ।

कैलाश – होस्टल में थे तब तो खूब खाया करते थे ।

किशोर – होस्टल में तुम न जाने क्या क्या किया करते थे । अब करते हो ?

कैलाश – चुप, चुप किशोर । पिताजी बैठे हैं ।

किशोर – (उषा की ओर देखकर) भाभीजी, आप जानती हैं हम जब होस्टल में रहते थे तो कैलाश ·····

कैलाश – किशोर, प्लीज । कहो तो तुम्हारे पैरों पड़ता हूँ ।

पिताजी – किशोर, इन दिनों तो छुट्टियाँ होंगी यूनिवर्सिटी की ?

किशोर – जी, पिताजी ।

पिताजी – बस तो अब यहीं आराम से छुट्टियाँ बिताओ । इन दिनों यहाँ मौसम भी अच्छा रहता है ।

शांति – बस, बिलकुल घर जैसे रहो यहाँ ।

किशोर – (हँसकर) घर जैसे ? तब तो घर से बाहर रहने का आनंद ही जाता रहेगा मेरा ।

(सुनकर सब हँस पड़ते हैं ।)

किशोर – पिताजी, आपकी फेमिली भी एक टिपिकल फेमिली है । आप डॉक्टर, आपका बेटा डॉक्टर, बेटे की बहू डॉक्टर और और आपकी बेटी भी डाक्टर ··

शांति – बीमारी हमारे मोहल्ले गुजरते भी भय खाती है ।

किशोर – जरूर खाती होगी । और कैलाश मैं तो कहता हूं डॉक्टर बनाने के लिए तुम अपने बच्चे को मेडिकल कॉलेज भेजने के चक्कर में न पड़ना ।

कैलाश – क्यों ?

किशोर – इसलिए कि तुम दोनों के डॉक्टर रहते तुम्हारा बच्चा डॉक्टरी—सर्टिफिकेट के साथ ही जो जन्मेगा ।

(सभी हँस पड़ते हैं । पहले दृश्य का परदा गिरता है ।)

२ (दो दिन के बाद की शाम । एक कमरे में किशोर पलंग पर टिका हुआ अखबार पढ़ रहा है । पलंग के सिरहाने एक टीपाय पर कुछ शीशियाँ रखी हैं और कुछ फल की तश्तरियाँ । परदा खुलने के कुछ ही देर बाद कैलाश का प्रवेश । अपने साथ मेडिकल बॉक्स लिए है।)

कैलाश – अरे अरे किशोर, तुम इस तरह बैठकर अखबार नही पढ़ सकते । मैंने तुम्हें कल ही मना किया था । आखिर तुम बीमार हो ।

किशोर – बीमार मुझे बीमार क्यो बना रहे हो कैलाश ? कल मुझे एक के बाद एक दो–चार छीकें क्या आ गईं तुमने मुझे बीमार बना दिया ।

कैलाश – तुम्हारी वे छीकें सादा नही थी । तुम्हे वास्तव मे कभी भी बुखार चढ़ सकता है ।

किशोर – कैलाश, बुखार बढ़ने के भय से तुमने तो मेरा खाना भी बंद कर दिया है । आज दिनभर से मेरे पेट मे अन्न नहीं है ।

कैलाश – तुमने वे फल नही खाए क्या ? ये फल खाओ । दूध, काफी भी जितनी चाहो ले सकते हो । चलो, तुम्हारा हाथ इधर दो, मुझे तुम्हारी नाड़ी देखने दो ।

किशोर – *तुम सोचते हो उस तरह बुखार चढ़ा या नहीं —यही देखने* के लिए न । हाँ, बुखार न चढा तो तुम्हारी विद्या गलत पड़ जायगी । लो, देखो । (हाथ बढ़ाता है ।) कम से कम तुम्हारी विद्या की लाज रखने के लिए मुझे बुखार चढ़ना ही चाहिए ।

कैलाश – कितनी बड़बड़ करते हो किशोर। हाँ, दिनभर सुख आराम तो किया था। न ?

किशोर – इस तरह आराम कराओगे तो मैं जरूर ही बीमार पड़ जाऊँगा।)

(कैलाश साथ लाए अपने बॉक्स में से सिरिंज निकालता है।

किशोर – तो क्या अब तुम मुझे फिर इंजक्शन दे रहे हो ? सुबह जो दिया था उससे तुम्हारा पेट नहीं भरा ?

कैलाश – तो क्या तुम समझते हो किशोर कि डाक्टर अपना पेट भरने के लिए बीमार को इजक्शन देता है ?

किशोर – मैं ही क्या, सारी दुनियाँ यही समझती है कैलाश।

कैलाश – (सिरिंज भर लेने पर) अच्छा अच्छा, हाथ दो इधर।

किशोर – तुम नहीं मानोगे ?

कैलाश – कैसे मानूँगा। हुकूमत बीमार की नहीं, डाक्टर की चलती है।

किशोर – ठीक कहते हो। जिस पर हुकूमत चलानी हो उसे पहले बीमार बना दो। बीमार ही हुकूमत के गुलाम होते हैं। लो…लगा दो और जी भर लो अपना। (हाथ बढ़ाता है।)

(कैलाश इंजक्शन लगाता है। किशोर मुँह टेढ़ा बनाता है।)

कैलाश – (इंजक्शन लगा लेने पर) मेरे अच्छे किशोर।

किशोर – डॉक्टर के लिए हर बीमार अच्छा लगता है।

कैलाश – अच्छा अच्छा, अब आराम करो। ये चार टेवलेट्स रख रहा हूँ। अभी एक घंटे के बाद दो ले लेना पानी के साथ और रात को सोते समय दो।

किशोर – और ये गोलियाँ न खाऊँ तो ?

कैलाश – तो…तो जानते हो क्या खाना होगा ?

किशोर – क्या ?

कैलाश – गालियाँ (हँसता है।)

किशोर – डॉक्टर की गोलियों से गालियाँ भली ।

कैलाश – अब मैं चलता हूं । प्लीज, ये गोलियाँ जरूर ले लेना । हो सकता है रात को मैं जल्दी न लौट पाउँगा । मैं बगल के कमरे में सोता हूँ । रात कोई तकलीफ हो तो वह पलंग के पास का बटन दबा देना । मेरी नींद खुल जायगी ।

किशोर – मैं बटन दबा तो दूँ । लेकिन ···

कैलाश – लेकिन क्या ?

किशोर – उषा भाभी मुझे गालियाँ तो नहीं देंगी । (कैलाश हंस पड़ता है ।) हां, इधर तुम्हारी गोलियाँ उधर उनकी गालियाँ ।

(कैलाश फिर हँस पड़ता है। दूसरे दृश्य का परदा गिरता है।)

३. (और दो दिन के बाद सुबह । दूसरे दृश्य वाला ही कमरा । किशोर पलग पर बैठा अखबार पढ़ रहा है। कैलाश का प्रवेश । उसके साथ अपना मेडिकल बॉक्स है ।

कैलाश – रात तुम्हें नींद तो ठीक आई किशोर ?

किशोर – नहीं आई कहने की हिम्मत कैसे कर सकता हूं ?

कैलाश – क्यों, क्यों ?

किशोर – कहूँगा तो । 'लो नींद की गोली' यही होगा न ।

कैलाश – अच्छा अच्छा । अपनी नब्ज दिखाओ । (किशोर हाथ आगे करता है ।) अच्छा, अब जबान दिखाओ । (वह आ आ करता हुआ जीभ दिखाता है ।) छाती देखने दो । (स्टेथेस्कोप से देखता है ।) सांस खीचो जोर से ··· छोड़ो । हाँ, अब पीठ दिखाओ । हा ···सास खीचो ··छोडो । हाँ, अब यह थर्मामीटर लगाओ । (उसे थर्मामीटर देता है ।

टेंपरेचर देख लेने के बाद) हां, अब मुझे ब्लड-प्रेशर लेने दो । (ब्लड प्रेशर लेता है ।)

किशोर – दो दिन से रोज तुम यही कर रहे हो कैलाश । इन सब बातों की रोज रोज क्या आवश्यकता है।

कैलाश – हर बीमार इसी तरह की बातें पूछता है—खासकर पढा-लिखा बीमार । आजकल पढ़ेलिखो का इलाज करना भी बडा मुश्किल काम है ।

किशोर – हां, क्यों नही ? उसको बेमतलब ऊपर से भी सुई और नीचे से भी सुई ठूंस नही सकते न ?

कैलाश – तुम वह कहावत तो जानते हो किशोर ।

किशोर – कौन सी ?

कैलाश – डडे से भूत भी डरता है । हमारी इलाज की दुनियां मे हम कहते हैं —सुई से बीमारी भी डरती है ।

किशोर – बेचारी सुई । दर्जियो के हाथ से किन अनाडियो के हाथ आ पडी है ।

कैलाश – अनाडी क्या हम लोग अनाडी हैं ?

किशोर – नही तो क्या ? जहां दर्जी लोग सुई का उपयोग सीने मे करते हैं वहां तुम लोग · वैसे तुम लोग भी अपनी सुई का उपयोग सीने मे ही करते हो ।

कैलाश – बातें करने की तुम्हारी पुरानी आदत नही गई है । (सिरिंज निकालकर उसमें दवा भरता है ।)

किशोर – आगए अपनी सुई पर ।

कैलाश – हां । हाथ आगे करो ।

किशोर – इसे न देने का क्या लोगे कैलाश ?

कैलाश – मतलब ?

किशोर – आखिर डॉक्टर का भी तो इसके देने के पीछे इंटरेस्ट होता ही है ।

कैलाश – बस बातें बन्द । चलो, हाथ आगे करो ।(इंजक्शन दे लेने के बाद)—ये गोलियाँ है। (एक पुड़िया देता है ।) एक एक घंटे के बाद एक एक लेते रहना ।

किशोर – खाना तो आज मैं खा सकूँगा न ?

कैलाश – नही, नही । तुम्हें फलों के सिवा कुछ नही खाना है ।

किशोर – न मालूम किस करनी के ये फल खाने पड रहे है ।

कैलाश – दूध, चाय, काफी भी ले सकते हो ।

किशोर – मैं तो इन तीन दिनों मे तुम्हारी इन सब चीजों से उकता गया हूँ, कैलाश ।

कैलाश – आज तुम्हारा स्टूल और यूरिन भी दिखाने पहुँच गया है ।

किशोर – क्यो ? मेरा स्टूल और यूरिन क्यों मंगवा लिया है ? क्या स्टूल और यूरिन की आजकल बहुत डिमांड है ?

कैलाश – बीमार की हर चीज को हम टेस्ट करते हैं ।

किशोर – (हँसते हुए)–तो तुम मेरे स्टूल और यूरिन को टेस्टकरोगे ?

कैलाश – हां । (लेकिन फौरन अर्थ समझकर उसे मारने जैसा हाथ उठाते हुए)—किशोर, नालायक गधे क्या बकता है ।

किशोर – सचमुच, क्या मैं सीरियस हो जाउँगा कैलाश ?

कैलाश – मुझे लगता है तुम्हारा एक लंग अफेक्टेड है ।

किशोर – अफेक्टेड...मतलब कि कि मुझे टी० बी० है

कैलाश – हां । आसार ऐसे ही लगते है ।

किशोर – तुम किस बीमारी के स्पेशलिस्ट हो कैलाश ?

कैलाश – डरो नही । तुम्हारी टी० बी० बढ़ नही सकती । मैं टी० बी० स्पेशलिस्ट ही हूँ ।

किशोर – टी० बी० स्पेशलिस्ट हो । तब तो मुझे जरूर डरना चाहिए ।

कैलाश – क्यों ?

किशोर – मुझमें टी० बी० पैदा करके ही रख दोगे ।

कैलाश – मैं और स्पेशलिस्टों जैसा नहीं हूं किशोर ।

किशोर – हां जरूर नहीं होगे । वे टी० बी० का इलाज करते हैं और पेशेन्ट टी० बी० से ही मरता है । तुम्हारे टी० बी० के इलाज में वह कैंसर से मरता होगा ।

कैलाश – बेहूदा, बेहूदा तुम्हारी जबान काटकर फेंक देनी चाहिए । अच्छे हो तो जाओ, ऐसा मजा चखाऊँगा इन सब बातों का कि याद करते रहोगे ।

किशोर – (एक सेब मुँह से चबाकर)अभी तो सिर्फ तुम्हारे फल चख रहा हूं । बाद में मजा भी चखूंगा, अब आया ही हूं तुम्हारे यहां तो ।

कैलाश – अच्छा, अब मैं दवाखाने जा रहा हूँ । कोई परेशानी हो तो भोला से कहना । (जाता है दूसरी ओर से पिताजी आते हैं हाथ में थरमस है ।)

पिताजी – कैसी हालत है किशोर ?

किशोर – आइए, पिताजी बैठिये।

पिताजी – (पास की कुर्सी पर बैठकर) तुम्हें इस तरह बिस्तरे पर बैठना नहीं चाहिए। लेट जाओ बिस्तरे पर लेट जाओ ।

किशोर – मैं तो अब बिल्कुल अच्छा हूँ पिताजी ।

पिताजी – ऐसी बात न करो । नहीं बीमार हो तो क्या, हो सकते हो । इस तरह बैठोगे तो हृदय, लीवर, पेट पर बुरा असर पड़ सकता है ।

किशोर – (लेटते हुए) हां हां पड़ सकता है । आप ईएनटी के स्पेशलिस्ट जो हैं ।

पिताजी – हां, अब दिखाओ तो (किशोर अपना हाथ आगे करता, वे नब्ज देखते हैं।) जबान दिखाओ ।

किशोर – अभी अभी कैलाश देखकर गया है ।

पिताजी – और दिन में ही तुम्हारी हालत कितनी गिर गई है ।

लगता है छः महीनो से बीमार हो । हाँ दिखाओ तो जबान । (वह आ आ करके दिखाता है ।) अच्छा अब छाती देखने दो । (स्टेथेस्कोप से देखते हैं) सास जोर से खीचो . छोडो अच्छा, अब पीठ दिखाओ । पहले की ही तरह साँस खीचो छोडो । अब यह थर्मामीटर लगाओ (वह लगाता है और टेम्परेचर लेकर वापस करता है ।)

किशोर – ब्लड-प्रेशर तो नही देखना है ?

पिताजी – वह भी देख लेता हू । (देखते हैं) देखो, इस शीशी में मैं तुम्हारे लिए डोसेज लाया हूं । तीन-तीन घन्टे बाद लेते रहना (बाक्स में से शीशी निकाल कर देते हैं ।)

किशोर – मुझे बीमारी क्या है पिताजी ?

पिताजी – लगता है तुम्हारे गले की खराबी से है यह सब कुछ ।

किशोर – गला तो मेरा साफ है ।

पिताजी – मुझे भी यही लगता है कि साफ है । लेकिन कौन कह सकता है कि कल वह ऐसा ही रहे ।

किशोर – आप इयर और नोज के भी तो स्पेशलिस्ट हैं पिताजी ?

पिताजी – हाँ हाँ, हू न ।

किशोर – तो फिर मेरे इअर और नोज भी खराब हो जाने चाहिए ।

पिताजी – मुझे चिंता इस बात की है कि तुम्हारी सभावित गले की खराबी कही कैंसर का कारण न बन जाए ।

किशोर – अरे बाप रे । ..पिताजी, आप कैन्सर स्पेशलिस्ट भी हैं ?

पिताजी – नही । लेकिन तुम चिन्ता न करो ।

किशोर – नही है तो अब चिन्ता का कारण नही.. खाना तो मैं खा सकता हू ?

पिताजी – जरूर... ...

किशोर – कितने अच्छे डाक्टर हैं पिताजी आप ।

पिताजी – लेकिन आज नही । तीन दिन के बाद ।

किशोर – बाप रे । तो मुझे तीन दिन और इसी तरह बिना खाए रहना है . भूखों मर जाना है ?

पिताजी – भूखे न रहो । फल खाओ किशोर । जितने चाहो खाओ । दूध, चाय भी ले सकते हो । अच्छा अब मैं जाता हूं । कोई तकलीफ हो तो भोला से कहना । वह मुझे इत्तला कर देगा ।

किशोर – अच्छी बात है ।

(पिताजी जाते हैं किशोर उठकर एक लम्बी सांस लेता है । फिर अखबार पढ़ता है । उषा अपने बाक्स के साथ आती है ।)

उषा – कहो किशोर कैसी हालत है ? और यह क्या, आपको आराम से पड़ रहना चाहिए और आप तो अखबार पढ रहे है ।

किशोर – देख रहा हूं देश मे डॉक्टरो की सख्या कितनी बढ़ रही है ।

उषा – सख्या तो बीमारो की बढ रही है किशोर ।

किशोर – आप डॉक्टरो की ही वजह से न ।

उषा – (हँसती है) कैलाश ठीक ही कहते हैं कि आप बड़े मजाकिया हैं ।

किशोर – तो क्या आप समझती हैं मैं मजाक कर रहा हूँ ।

उषा – अच्छा, आप अपनी नब्ज दिखाइए ।

किशोर – मैं सब कुछ दिखा चुका हूं भाभीजी । एक बार नही दो दो बार ।

उषा – कोई हर्ज नही । बार बार दिखाने से बीमार का क्या जाता है ?

किशोर – (हाथ आगे करता है) देखिए । (वह जब नब्ज देखती है उस समय) नब्ज दिखाने के बाद जबान, छाती और पीठ भी दिखानी होगी, नही ? थर्मामीटर भी लगाना होगा ? अच्छी बात है । (जबान दिखाते हुए) आ आ... ...

उषा – हां, अब छाती देखने दो । सांस खीचो .. छोड़ो .. हाँ, अब पीठ देखने दीजिए सांस खीचो .... छोड़ो । और यह ले थर्मामीटर । उठने पर टेम्परेचर लिया था ?

किशोर – लिया था । जीरो था ।

उषा – जीरो . जीरो पर तो आदमी फ्रीज हो जाता है ।

किशोर – (थर्मामीटर वापस देता है) मेरा मतलब है नार्मल था ।

उषा – आज नार्मल हो, लेकिन कल टेंपरेचर हो सकता है, कौन कहे । (बाक्स में से सिरिंज निकालती है ।)

किशोर – अरे, यह क्या आप इंजेक्शन दे रही है ?

उषा – हां ।

किशोर – लेकिन .

मैं एक बात नही सुनूंगी । आपको अच्छा करना ही हमारा फर्ज है ।

किशोर – लेकिन भाभीजी ..

उषा – कह दिया न एक बात नही सुनूंगी । हाथ आगे कीजिए ।
(किशोर हाथ आगे करता है उषा इन्जक्शन देती है)

किशोर – मुझे ऐसी कौन सी बीमारी है जो इन्जक्शन पर इन्जक्शन दिए जा रहे हैं ।

उषा – अब आप आराम के साथ पड़ रहिए ।

किशोर – भाभी जी आप किस बीमारी की स्पेशलिस्ट हैं ? मै तो भूल ही गया

उषा – मैं किसी बीमारी की स्पेशलिस्ट नही । मेटर्निटी स्पेशलिस्ट हूं ।

किशार – भाभी जी एक बात पूछूं ?

उषा – हाँ हाँ, पूछिए ।

किशोर – कहीं मुझे मेंटर्निटी की तो बीमारी नही है ?
(सुनकर उषा एकदम हँस पड़ती है ।)

उषा – बस बस मजाक छोड़िए । अब मैं हास्पिटल जा रही हूँ । और हाँ, देखिए । ये टेबलेट्स दे रही हूँ । आध आध घंटे के बाद तीन तीन लीजिए । (टेबलेट्स की पुड़िया देती है ।)

किशोर – (पुड़िया लेकर) आध आध घंटे के बाद तीन या तीन तीन घटे के बाद आध आध ?

उषा – : हँसती है : मैंने इस पर लिख दिया है । कोई दिक्कत आ पड़े तो भोला घर मे है ।
(जाती है ।)

किशोर – बाप रे । आध आध घटे के बाद तीन तीन टेबलेट्स । कैलाश की अलग एक एक घटेवाली टेबलेट्स हैं । पिताजी डोसेज दे गए हैं सो अलग । इतनी दवाएँ लेकर तो बीमारी इस जनम की ही नही सात जनम तक की भाग जायेगी । और और अभी तो शाति और आने को बाकी है । लो-वह आ ही रही है ।
(शांति का अपने बाक्स के साथ प्रवेश ।)

शांति – कहो किशोर, कैसी हालत है ?

किशोर – बड़ी नाजुक है । लगता है दो दिन से ज्यादा नही जी पाऊँगा ।

शांति – नही नही, तुम मरोगे नही किशोर ।

किशोर – तो, नब्ज देख लो । (हाथ आगे करता है ।)

शांति – हाँ, अब तुम कैसे रास्ते पर आ गए । सीधे सीधे सबकुछ दिखाने लगे । : नब्ज देखती है । :

किशोर – (नब्ज देख लेने के बाद) अब तुम मेरी जबान, छाती और पीठ देख लो । फौरन थर्मामीटर निकालो और टॅपरेचर ले लो । …और हाँ ब्लड—प्रेशर भी देख लो ।

शांति – किशोर, मैं सब देख लेती हूँ । इस तरह घबराओ नही । तुम मर नही जाओगे । हम लोग तुम्हें मरने नहीं देंगे । हाँ,

बताओ जबान'''अब छाती ''हाँ, अब पीठ। लो, यह थर्मा-मीटर लो। ''''''हां, वापस दो। '''अब ब्लड-प्रेशर देखूं। (देखती है।)

किशोर – है न सीरियस मेरी हालत ?

शांति – घबराओ नही किशोर, सब कुछ ठीक हो जायेगा। वास्तव में हम लोगों के लिए यह कितनी शर्म की बात है कि हमारे यहाँ आकर कोई बीमार पड जाए।

किशोर – बीमारी तो आपके मोहल्ले से गुजरते भी भय खाती है।

शांति – मुझे लज्जित न करो किशोर। तुम जल्दी ही अच्छे हो जाओगे। विश्वास मानो।

किशोर – हाँ, क्यों नहीं अच्छा हो जाऊँगा। जब चार-चार डॉक्टर मेरा इलाज कर रहे हैं। अच्छा हुआ इस समय मैं अपने घर न हुआ।

शांति – क्यों ?

किशोर – घर पर होता तो मैं अब तक कभी का मर चुका होता।

शांति – यह कैसी बात कर रहे हो किशोर तुम।

किशोर – गलत नही कह रहा हूँ। वहाँ मैं चारचार डॉक्टरों को थोड़े ही बुला पाता। बुलाता सिर्फ एक। वह अकेला मेरी इस खतरनाक हालत के साथ कैसे जूझ पाता।

शांति – तुम व्यर्थ घबरा रहे हो तुम्हारी बीमारी खतरनाक नहीं है।

किशोर – खतरनाक नही है तब भी कफ टेस्ट हो रहा है, स्टूल और यूरिन टेस्ट हो रहा है। चारचार वार ब्लड-प्रेशर देखा जा रहा है। कल शायद एक्स-रे भी हो जाए। इधर इन्जक्शन पर इंजक्शन ठूँसे जा रहे हैं। गोलियाँ और डोसेज का तो शुमार नहीं। इतने पर भी कहती हो बीमारी खतरनाक नही है। यदि होती तो जरूर मुझे ऑक्सीजन पर रखने की नौबत आजाती। नही ? शांति, एक बात

कहूँ ?

शांति – कहो, क्या कहना चाहते हो ।

किशोर – मुझे इन फलों की जगह अगर भरपेट खाना मिल जाए और दो मील घूम आने की इजाजत तो मैं पहले जैसा चंगा हो जाऊँ ।

शांति – नहीं नहीं, किशोर । इससे तुम्हारे दिल पर बुरा असर पड़ेगा ।

किशोर – हां, जरूर पड़ेगा । तुम्हारे लिए दिल पर, पिताजी के लिए गले पर, कैलाश के लिए लंग्ज पर और उषा के लिए ·····

शांति – तुम नहीं जानते हार्ट की बीमारी के लिए कितने आराम की आवश्यता होती है ।

किशोर – *हार्ट की बीमारी · तो क्या मुझे हार्ट की बीमारी है ?*

शांति – हां । और इसमें बहुत संभलकर रहना चाहिए ।

किशोर – शांति, हार्ट की बीमारी तो तुम्हें होनी चाहिए, यह मुझे कैसे हो गई ?

शांति – मुझे क्यों ? मुझे क्यों होनी चाहिए ?

किशोर – (हँसकर)—तुम अभी कुंवारी जो हो ।

शांति – (लजाकर)—चलो·· कैसी बातें करते हो किशोर ।······
अच्छा, आज मैं तुम्हारा खून ले लेती हूँ टैस्ट के लिए ।

किशोर – खून क्या मेरी जान ही ले लो न ।

शांति – (सिरिंज लेकर)—हां, हाथ करो तो आगे । (खून लेती है ।) अच्छा अब आराम करो । मैं दवाखाने जाती हूँ । (जाने लगती है ।)

किशोर – देखो देखो, जरा एक बात सुनती जाओ ।

शांति – (पास आकर)–क्या है ?

किशोर – दवा खाने न जाओ ··· दवा देने जाओ ।

शांति – (अर्थ समझकर)–ओ हो, ठीक है ठीक है । (जाने लगती

है ।)

किशोर – हां, दिल की बीमारी हो तो बात अलग है । (शांति का चेहरा लज्जा से आरक्त हो जाता है ।) और दिल की बीमारी की दवा दवाखाने मे नही मिलती ।

शांति – और यदि कोई डॉक्टर ही दवा हो तो ? (कहती हुई एकदम चली जाती है ।)

किशोर – ऐसी बात है । चिअर्स चिअर्स ।···

(तीसरे दृश्य का परदा गिरता है ।

४. (इसके तीन दिन बाद सुबह । वही कमरा । पलंग पर किशोर बैठा है । घड़ी में आठ बजते हैं ।)

किशोर – सुबह हो गई । आठ बज गए । डॉक्टरों के आने का समय हो गया । पहले आएगा कैलाश । पूछेगा रात नींद तो ठीक आई । और फिर······

कैलाश – (प्रवेश करके) – अरे भाई किशोर, कैसे हो ? रात को नीद तो ठीक आई ?

किशोर – और इसके देख लेने के बाद आएंगे पिताजी । फिर आएंगी भाभीजी और फिर आयेगी शांति । सब मुझसे यही सवाल करेंगे । नहीं नही, अब यह मुझसे नही सहा जाता । एक हफ्ता हो गया इसी तरह । ···· मुझे अब छुट्टी दो कैलाश । मेरी नब्ज, जवान, छाती और पीठ आप मे से हरएक दस-दस बीस बीस बार देख चुका है । इंजक्शनों से मेरे हाथों की छलनी बन गई है । आप लोगों की गोलियों से तो बन्दूक की गोलियाँ खाना बेहतर है । बस बस, कैलाश तुम्हारा स्टेथेस्कोप दूर ही रखो । बिस्तर पर लेटे रहना भी अब मेरे लिए मुश्किल हो गया है । (उठकर दरवाजे की ओर भागता है ।)

कैलाश – अरे अरे, किशोर उठो नहीं । (उसे पकड़ता है और बिस्तरे

पर लाने का प्रयत्न करता है, पर विफल होता है।) अरे भोला, भोला, ……… पिताजी, पिताजी, …………उषा, शांति, …… । ('ओ हो, क्या हुआ, क्या हुआ,' कहते हुए सभी आते हैं और सब मिलकर किशोर को पलंग पर लाकर सुलाते हैं।)

किशोर – मुझे पकड़ कर क्यों सुला रहे हैं आप लोग ? नहीं, नहीं, मैं यहाँ नहीं लेटूँगा। हरगिज नहीं। नहीं नहीं, मुझे कुछ नहीं हुआ है। पिताजी, सचमुच मुझे कुछ नहीं हुआ है। मेरी नाड़ी देखने की जरूरत नहीं है। ब्लड-प्रेशर लेने की जरूरत नहीं है। कैलाश, मेरे लंग्ज अच्छे हैं, बिलकुल अच्छे हैं। न ही मुझे कैंसर होने का डर है। मैं भला चंगा हूँ… "बिलकुल भला चंगा हूँ। शांति, सच मानो, मुझे हार्ट की बीमारी नहीं है। " हां, नहीं है। " कैलाश …… भाभीजी "शांति" पिताजी –

पिताजी – कैलाश, तुम इसे और जोर से पकड़े रखो। लगता है डिलिरियम हो गया है। मैं डॉक्टर चोपड़ा को फोन करता हूँ। ऐसे केसेज में वह एकदम एक्सपर्ट हैं।

किशोर – अरे बापरे, एक और डॉक्टर…मर गया मैं तो। (पकड़ में से छूटकर दरवाजे की ओर भागता है। सब लोग पकड़कर पलंग की ओर खींचते हैं त्योंही) अरे, बचाओ, कोई मुझे इन डॉक्टरों से बचाओ।……

(परदा गिरता है।)

———

तितली

पात्र

किशोर,

रतना, राधा, शोभा

(रतना का कमरा। कमरे में आधुनिक ढंग की सजावट है। रेडियो, पुस्तकों की अलमारियाँ। एक छोटी-सी-टेबल कमरे में रखी है। उसके पास एक छोटी लिखने की मेज है। उस पर लिखने का सभी सामान है। कुर्सी पर बैठी हुई रतना कुछ लिख रही है। उसकी वेश-भूषा आधुनिक ढंग की है। कलाई में घड़ी बांधे है। रेडियो पर गाना हो रहा है।)

रतना – (लिखते लिखते एकदम)– राधा राधा। (कोई उत्तर न पाकर व्यग्र हो जाती है।) भगवान जाने कहाँ चली गई। अरी ओ राधा।

राधा – (अन्दर से ही) आई, बीबीजी। (कमरे में प्रवेश करती है।) क्या काम है?

रतना – यह रेडियो बन्द कर दे। नाक में दम कर रहा है। लिखने में बाधा हो रही है। (राधा रेडियो बन्द करती है।)

रतना – आज मुझे कितनी महत्वपूर्ण बातें लिखनी हैं। तुझे ज्ञात नहीं आज महिला-समाज की सभा है?

राधा – (आश्चर्य से) महिला-समाज की सभा! कहाँ?

रतना – राधा, तू कितनी भोली है। इतनी बड़ी बात भी नहीं जानती? आज महिला-समाज के भवन में स्त्रियों की एक विराट सभा होने वाली है। आज मैं स्त्री-स्वतंत्रता पर अपने विचार प्रकट करने वाली हूँ।

राधा – पर, बीबीजी, मैं पूछती हूँ स्त्री-स्वतन्त्रता है क्या? क्या अपने पति को छोड़ देना?

रतना – राधा, तू तो बिलकुल नासमझ स्त्री है। आज यूरोप के एक एक देश की स्त्री की ओर देख तू। अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करके वे कभी की स्वतन्त्र हो गई हैं। पुरुष के समान स्त्री भी आज समाज में स्थान पा सके, अपना

जीवन पुरुषों की जी–हुजूरी में न खोकर बिलकुल निरंकुश जीवन व्यतीत कर सके, यही स्त्री की स्वतन्त्रता है।

राधा – तो फिर, बीबीजी, घर में बच्चों को कौन संभालेगा? उनके पति ?

रतना – स्त्रियों का जीवन केवल रोटी पकाने और बच्चों को संभालने के लिए ही नही है। ससार में स्त्री फूल के समान है। फूल बाग मे स्वच्छद होकर खिलता और डोलता है। हम भी वैसा ही जीवन चाहती हैं।

(कमरे के बाहर से 'श्रीमती रतना पांडे' की आवाज सुनाई पड़ती है। आवाज सुनकर राधा जाती है और एक लिफाफा लेकर लौटती है।)

राधा – (लिफाफा रतना को देते हुए)–यह तार दे गया है अभी डाकिया।

(रतना लिफाफा फाड़कर तार पढती है।)

रतना – ओ हो, शोभा आ रही है। कितनी बार बुलाने के बाद आज आ रही है। हम दोनों विवाह के पश्चात पहली बारमिलेंगी।

राधा – यह शोभा कौन है, बीबीजी ?

रतना – मेरी सखी है। मेरा और उसका बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। कालेज मे जब हम दोनों पढ़ती थी सगी बहनों जैसी रहती थी। सच, राधा, मुझे कितना आनन्द हुआ है यह जानकर कि शोभा आ रही है।

राधा – कब आयेंगी वह ?

रतना – आज ही आएगी। पाँच की गाड़ी से। (कलाई की घड़ी में देखकर) साढ़े चार बज गए हैं। और मुझे तो अभी ही अपना व्याख्यान तैयार करना है। राधा, अभी जाओ और मोहन से कहो कि वह मोटर स्टेशन पर ले जाए और शोभा को ले आए। और यह देखो ·· यह तार दे दो उसे जिससे

शोभा समझ सकेगी कि मोहन अपना ही आदमी है।

राधा तार लेकर चली जाती है। रतना लिखने में मग्न हो जाती है। किशोर का प्रवेश। सूटबूट पहने हुए सुन्दर युवक है।)

किशोर – क्या लिख रही हो रतना ? कोई बड़ा सा लेख ? हाँ, क्यों न लिखो…आजकल सभी कलाओं में स्त्रियाँ ही निपुण होती जा रही हैं। पुरुषों में तो कोई कला निर्माण के गुण ही नहीं रहे। वे अरसिक बन गए हैं। आज कोई निबन्ध लिख रही हो ?

रतना – (उठकर)—आपको तो मजाक ही सूझता है। सोचते हो स्त्रियाँ किसी क्षेत्र में काम ही न करें। आप डाक्टर हैं, एक शिक्षित व्यक्ति हैं, तो भी आपके विचार कितने पिछड़े हुए हैं। स्त्रियाँ लेख न लिखें भाषण न दें, किसी भी कला मे निपुण न हों, अपने पति की चौबीस घंटे गुलामी करती रहें - यही है आजकल के पुरुषों की अपनी पत्नी से अभिलाषायें। यह नहीं सोचते कि स्त्रियों का भी अपना व्यक्तित्व होता है।

किशोर – रतना, मैं कोई बात पूछता हूँ और तुम एक लंबा भाषण देने लगती हो। भाषण ही देना हो तो महिलासमाज में जाकर दिया करो, मेरे सामने नहीं। ओ हो, आज तो तुमने बड़ा शृगार किया है। कितनी सुन्दर लगती हो।

रतना – पति के ऐसे उद्गारों से किसी सामान्य स्त्री के समान खुश होने वाली स्त्री मैं नहीं, किशोर। जिस दिन आप कहेंगे तुम कितना अच्छा भाषण देती हो।…तुम कितने सुन्दर लेख लिखती हो। उस दिन मैं खुश होऊँगी। मैं कला की उपासक हूँ, किशोर। कला मेरे जीवन का लक्ष्य है।

किशोर – पर, रतना, स्त्री होने के नाते पति के प्रति तुम्हारा कोई

कर्तव्य नही ?

रतना – तो क्या आपने स्त्री को खिलौना समझ लिया है ?

किशोर – रतना, पुरुषों ने स्त्रियों को कभी खिलौना नही समझा। उन्होंने उनका बराबर सम्मान किया है। प्रकृति की रचना ही ऐसी है कि स्त्री–पुरुष एक दूसरे के होकर रहें। पुरुषों के साथ जीवन व्यतीत करने में स्त्रियों को हीन भावना अपने मन मे नही लानी चाहिए। पुरुषों ने उन्हें अपने हृदय मे देवी मानकर स्थान दिया है।

रतना – प्रेमियो की परम्परागत भाषा बोलकर पुरुष स्त्रियो को धोखा देते हैं। उनके स्वच्छंद जीवन में बाधायें डाल देते हैं। देखिए, आप मेरे कमरे मे आए और आपने मेरी अनुमति भी न ली।

किशोर – मुझे माफ करो, रतना, तुम्हारे कमरे में मैं बिना पूछे ही आ गया। मेरी एक विनती है। आज कुछ ऐसी इच्छा हो रही है कि हम दोनों कार मे बैठकर बहुत दूर, शहर के बाहर जंगल में कही किसी झरने के किनारे जाएँ और वहाँ चाँदनी रात में घंटों बिता दें। जिंदगी है कितने दिन की··· कभी तो हसखेल लें।

रतना – जानवर भी ऐसा ही जीवन व्यतीत करते है। फिर हमारे और उनके जीवन में अंतर ही क्या रहा ? किशोर, माफ करो, मैं नही जा सकती आपके साथ। (घड़ी देखकर) अरे, पाँच बज गए। महिलामंडल में जाना है। चल रहे हैं आप मेरे साथ ? आज मेरा भाषण होगा।

किशोर – महिलामडल मे मुझ जैसे पुरुष का क्या काम ? तुम्हारे पीछे-पीछे क्या मैं तुम्हारी पूछ बनकर जाऊँ ? इस चहार दीवारी के अन्दर जो भाषण सुनाती हो वह क्या कम है ? नहीं, वहाँ जाकर मैं अपनी हँसी नही कराना चाहता।

रतना -- सब पुरुष एक ही विचारधारा के होते हैं वे अपनी पत्नियों का समाज में गौरव होते नही देख सकते ।

(शोभा का प्रवेश, वेशभूषा में सादापन)

शोभा -- माफ कीजिए, मैंने राजा रानी के संभाषण में विघ्न डाला ।

रतना -- नहीं नही, राजारानी का संभाषण काहे का ।

किशोर -- तो क्या रानी और गुलाम का ।

रतना -- छीः ! कैसी बातें करते हो ! शोभा यह मेरे .. ... यह किशोर हैं ।

शोभा -- हां तुम्हारे पति हैं न ? (शोभा किशोर को नमस्कार करती है और फिर किशोर उसे करता है)

रतना -- और किशोर, यह मेरी बचपन की सखी शोभा है ।

किशोर -- अच्छा अच्छा, ठीक अब मैं चलता हूं (चला जाता है)

रतना -- बैठो, शोभा । सफर कैसा रहा ? थक तो नही गई ; मैं आने वाली थी तुम्हें लेने स्टेशन । पर आ नहीं सकी । इधर कुछ काम अधिक था । भाषण देने जाना है । तुम तो वर्षों बाद मिली ।

शोभा -- क्या करूँ विवाहित स्त्रियों का घर से निकलना बड़ा मुश्किल होता है ।

रतना -- शोभा, क्या यह तुम बोल रही हो ? विवाह के पश्चात हम सामाजिक कार्य करेंगी, अपनी सहेलियों को नहीं भूलेंगी......यह तुम्हीं कहा करती थी न कालेज के दिनों में ?

शोभा -- विवाह के पश्चात स्त्रियों के जीवन मे परिवर्तन हो जाता है । इस बात का ज्ञान न होने के कारण विवाह के पूर्व हम स्त्रियां न जाने क्या क्या प्रोग्राम बना लेती हैं । कॉलिज में पढ़ने वाली प्रत्येक लड़की सोचती है कि विवाह के पश्चात भी वह अपना जीवन तितली सा व्यतीत करेगी,

पति के समान हक पाएगी, सामाजिक कार्य करेगी। पर वास्तव में, विवाह के बाद वे योजनायें हवा हो जाती हैं।

रतना – इन सब बातों के लिये हम ही जिम्मेदार होती हैं। परिवार मे रहकर स्त्रियां हकों का ध्यान रखें तो सबकुछ ठीक रहता है। नही तो पुरुष मीठे शब्दो से हमे मोह लेते हैं। सासारिक जिम्मेदारियाँ हमारे गले मे डाल देते हैं।

शोभा – पुरुषों पर भी कुछ जिम्मेदारियाँ होती हैं। उनका लक्ष्य होता है अपने परिवार को अधिक से अधिक सुखी। गृहस्थ जीवन की जिम्मेदारियाँ स्त्री-पुरुष दोनो मे बँट जाती हैं। एक प्रेम भरे संसार का निर्माण होता है।

रतना – प्रेम भरा संसार। बड़ा मीठा नाम दिया है, शोभा, तुमने इस मायावी फंदे को। पुरुष चार मीठे शब्द बोलकर स्त्री की प्रशंसा कर दे, स्त्री उन शब्दों को सुनकर, उनकी प्रशसा में भूलकर पुरुष को समर्पित कर दे—इसे तुम प्रेमपूर्ण पारिवारिक जीवन कहती हो ?

(राधा चाय की ट्रे लेकर प्रवेश करती है और मेज पर रखकर प्यालियों में उड़ेलती है।)

रतना – इन बातो पर बहस फिर हो लेगी। चाय पी लो।

(दोनों चाय पीने लगती हैं।)

रतना – राधा, किशोर अभी बाहर तो नही गए ?

राधा – नहीं, वह अपने कमरे मे हैं।

रतना – उनसे कहो यदि वह बाहर जायें भी तो कार न ले जायें। मुझे जाना है भाषण के लिए। और मोहन से कहना कार तैयार रखे। मैं अभी आती हू।

राधा – जी, बीबी जी। (दोनों चाय पीने के बाद ट्रे लेकर चली जाती हैं।)

शोभा – किसका भाषण है आज ?

रतना – यहाँ के महिलामंडल में मेरा ही भाषण है। यहाँ की स्त्रियाँ बहुत पिछड़ी हुई हैं। दिनरात अपने पति के ही कामों में व्यस्त रहती है। बालबच्चों का ढेर लगा रहता है घरों में। भाषण सुनने आयेंगी तो उनके छोटे बच्चों के ऊधम और रोने से सारा हॉल शोर से भर जाएगा। उस शोर में भाषण कुशलता से समाप्त हो जाए तो बहुत समझो। तुम चल रही हो ?

शोभा – मैं ? चलती तो, पर सफर में बहुत थक गई हू ।

रतना – अच्छा। तो मैं जाती हूं। राधा से कह जाती हूं तुम्हारा सब इन्तजाम कर दे। मैं आ रही हूं तुम बुरा तो न मानोगी ?

शोभा – (उसका हाथ पकड़ कर) नहीं, रतना, अपनी प्रिय सखी के सबन्ध में तुम ऐसा क्यों सोचती हो ?

रतना – अच्छा तो, शोभा, मैं जाती हूं ।

(रतना जाती है। वह भाषण के कागज साथ में लेने को नहीं भूलती। शोभा अब कमरे का निरीक्षण करती है तभी हाथ में खुला रजिस्टर लिए हुए किशोर का प्रवेश)

किशोर – माफ कीजिए, इस रजिस्टर में अपना पूरा नाम, पता, शिक्षा, उमर सब कुछ लिख दीजिए ।

शोभा – (आश्चर्य से) इन सब बातो की आपको ऐसी क्या आवश्यकता पड़ गई ?

किशोर – रतना के यहाँ आने वाली सब सखियों का विवरण रखने के लिए मैंने यह रजिस्टर तैयार किया है ।

शोभा – (रजिस्टर हाथ में लेती है और उसमें देखने के बाद) अरे, यह क्या ? क्रमांक १०८ ? क्या कहते हैं आप; तो क्या आज तक रतना की १०८ सखियाँ यहाँ आ चुकी हैं ?

किशोर – हाँ; मेरा और रतना का विवाह हुए कोई दो साल हुए होंगे, और इस अल्पकाल में एक सौ आठ सखियाँ आ चुकी हैं।

शोभा – आश्चर्य है। मेरे भी विवाह के दो साल हुए हैं। पर आज तक एक भी सखी चार दिन के लिये मेरे यहाँ नहीं आई। गृहस्थी के कामों में फँसी रहने वाली स्त्रियों को किसी को बुलाने का अवकाश ही नहीं मिलता।

किशोर – पर रतना को घर गिरस्ती से क्या मतलब। अपनी सखियों या महिला मंडल के सिवा उसे कुछ सूझता ही नहीं। एक सखी यहाँ विदा हुई नही कि वह दूसरी सखियों को बुला लेती है। और उसकी सखियाँ भी कौन हैं। चलते चलते किसी से बात करने का मौका मिला कि बन गई वह सखी। नाम, पता सब लिख लेती है वह।

शोभा – रतना के व्यवहार से तो स्पष्ट है कि उसका घर गिरस्ती मे जरा भी मन नहीं लगता।

किशोर – रतना स्वच्छंद बनकर रहना चाहती है। वह कार में बैठकर हवा मे बातें करती है। भव्य बंगले मे रहती है, बगीचे मे फूलो की सुगंध लेती तितली सी नाचती रहती है। वह यह भूल गई है कि इतना सब वैभव है किसके बूते पर ? पति के ही कमाए हुए वैभव में डूबी रतना, पति से अपने आपको स्वतन्त्र मानती है, स्त्री के अधिकारों का दावा करती है।

शोभा – उफ' जिस पति के भरोसे रतना इस विशाल वैभव का सुख ले रही है, उसी पति के सुख दुख की उसे परवाह नहीं है। शिक्षित होते हुए भी नासमझ बनी हुई है।

किशोर – शोभा, रतना के ऐसे व्यवहार से मेरा सुख मुझसे दूर भाग गया है। मैं डॉक्टर हूं। शहर में मेरी अच्छी

प्रेक्टिस है । वैभव, कीर्ति सभी कुछ मुझे प्राप्त है । जो भी व्यक्ति मुझे देखता है कहता है डॉक्टर कितना भाग्यवान है ! कितना सुखी है !

शोभा – क्यों नही कहेगा मैं भी तुम्हारे वैभव को देखकर चकित रह गई। सुन्दर बंगला, बंगले के सामने फूलों से भरा बाग, मोटर, रेडियो–ये सब देखते ही मैंने सोचा रतना कितनी भाग्यवान है । मैं रतना को समझाऊँगी ।

(राधा का प्रवेश, हाथ में चाय की ट्रे है ।)

राधा – डॉक्टर साहब चाय लाई हूं । और बीबी जी, आपके नहाने के लिए पानी गरम हो गया है

शोभा – *अच्छा (जाने लगती है)*

किशोर – आप चाय नही पिएँगी ?

शोभा – नहीं, मैंने अभी पी है (चली जाती है)

किशोर – लाओ राधा मुझे दे दो चाय ।

(राधा चाय देती है और चली जाती है)

किशोर – विवाह के पूर्व कितनी ही कल्पनायें करता था मैं कि विवाह के पश्चात खूब आनन्द से रहूंगा, मौज करूंगा पर मेरे पास इतना धन होते हुए भी, सुख की सभी सामग्रियाँ होते हुए भी मैं सुख से कोसों दूर हूँ । शोभा के विचार कितने ऊँचे हैं । उसका पारिवारिक जीवन कितना सुखी होगा । परमेश्वर, मुझे भी ऐसे विचारों वाली पत्नी देते तुम ।

(किशोर का प्रस्थान और रतना का प्रवेश)

रतना – मूर्ख हैं समाज के स्त्री-पुरुष । किसी की कद्र करना नही जानते । भाषण देना शुरू किया, कि शोर मचा दिया । चुप रहने को कहा तो और अधिक शोर होने लगा । बच्चों के रोने-धोने ने तो नाक मे दम कर दिया । न

जाने कब भारत के स्त्री-पुरुष परिवार-नियोजन का महत्त्व समझेंगे ?

शोभा – (प्रवेश करके) रतना, मैं यहाँ अधिक नहीं ठहर सकती । आज रात की गाड़ी से जा रही हूं ।

रतना – क्यों ?

शोभा – रतना, तुम्हारे पति किशोर कुछ भले आदमी नहीं मालूम पड़ते ।

रतना – यह क्या कहती हो तुम ?

शोभा – हाँ ठीक कह रही हू । पूछते थे तुम विवाहित हो या अविवाहित ? मैंने पूछा क्यों ?

रतना – तो क्या जवाब दिया उन्होंने ?

शोभा – बोले यदि तुम अविवाहित हो तो मैं तुमसे विवाह करना चाहता हू । मैं तो सुनकर डर गई । पर हिम्मत से पूछा, तुम तो विवाहित हो, क्या दो पत्नियां रखना चाहते हो ?

रतना – (घबराकर) तो क्या बोले ?

शोभा – बोले कि रतना को मैं तलाक दे रहा हूँ । रतना, क्या तुम दोनों में झगड़ा है ? मुझे डर है किसी दिन वह दूसरी पत्नी अवश्य ले आयेंगे ।

रतना – (खीझकर) किशोर दूसरा विवाह नही कर सकता—मैं नही करने दूंगी ।

शोभा – वह तुम्हें तलाक देकर चाहे जो कर सकते हैं । तुम अपना अधिकार जताने जाओगी तो वह और चिढ़ जायेंगे । तुम उन्हें खो बैठोगी । और, रतना, किशोर तुम्हे त्याग भी दे तो क्या ? तुम तो और स्वतन्त्र हो जाओगी । समाज-सुधार के लिए तुम्हारा मार्ग खुल जायेगा । अपने देश में कितनी ही अशिक्षित स्त्रियां हैं, पिछड़ी हुई महिलायें हैं–उनको शिक्षित और आदर्श नारियाँ बनाने के लिए तुम

पूर्णरूप से मुक्त हो जाओगी। पतिसेवा से समाजसेवा अधिक विस्तृत है। एक में स्वार्थ है, तो दूसरी में परमार्थ ही परमार्थ है।

रतना – (तेज होकर) शोभा, तुम चुप रहो। महिलामंडल मे आज बहुत अपमान हुआ। हँसती, तालियाँ बजाती औरतें मेरी उपेक्षा करके वहाँ से चली गई। वह कुछ कम नहीं था जो इधर तुम ये बातें मुझे सुना रही हो। मैं अभी जाकर देखती हूं किशोर को।

(गुस्सा होकर चली जाती है। दूसरी ओर से किशोर का प्रवेश)

किशोर – यह क्या किया, शोभा ? अब क्या होगा ?

शोभा – आप चुपचाप देखते रहिए। मेरी हाँ में हाँ मिलाते जाइये। अभी रतना ठिकाने पर आ जाएगी। आप कहीं छिपकर बैठ जाइए। आपको न पाकर रतना झुंझलाती हुई यहाँ अभी आएगी।

(किशोर जाता है। रतना का प्रवेश)

रतना – (गुस्से में लाल हैं) न जाने कहां गया है किशोर। तुमसे कुछ कह गया है, शोभा ?

शोभा – हाँ कह रहे थे वकील के यहां जा रहा हूं—तलाक के सम्बन्ध में पूछताछ करने।

रतना – शोभा, किशोर मेरी जिन्दगी बिगाड़ देगा। मैं कहीं की नहीं रहूंगी।

शोभा – किशोर से-अपने पति से-स्वतंत्र रहकर बराबर के हकों का दावा करने वाली तुम आज किशोर की तलाक की बातों से इतना क्यों डर रही हो ? वह तुम्हें पूरी स्वतन्त्रता दे रहे हैं।

रतना – शोभा !

शोभा – तुम बराबर के हकों की बातें करती हो, पुरुषों से अलग

अपना अस्तित्व कायम रखना चाहती हो। पर यह संभ है क्या ? क्या यह आवश्यक है कि पत्नी का मार्ग ए हो और पति का दूसरा ?

रतना – तो क्या हम उन्हीं के रास्ते पर चलें ? अपना जीवन उन्हें को समर्पित कर दें ?

शोभा – न स्त्री को पुरुष के रास्ते जाना है और न पुरुष को स्त्री के। उन दोनों का रास्ता एक ही है। दोनों को ही एक दूसरे के लिए समर्पित होना है।

रतना – शोभा।

शोभा – तुम चाहती हो कि पति से स्वतन्त्र रहो। उसकी विचार-धारा में अपनी विचारधारा न मिलने दो। फिर पति भी तुम्हारी परवाह क्यों करे ? क्यों दिनरात धन कमाने की चिन्ता में लगा रहे, सुख के साधन जुटाए ? तुम्हारी पुस्तकों की ये बड़ी-बड़ी अलमारियां, मकान, मोटर– ये सब किसके खूनपसीने की कमाई है ? तुम अपना अलग अस्तित्व चाहती हो, तो न करो इन सब चीजों का उप-योग। बसा लो अपनी एक अलग दुनिया।

रतना – यह तुम क्या कह रही हो, शोभा ?

शोभा – वही जो एक स्त्री को एक स्त्री से कहना चाहिए। रतना, कला, सामाजिक कार्य, भाषण—इनसे तभी हमें सच्चा सुख मिल सकता है जब हमे अपने घर में सुखसर्जन करने की कला आती हो। परिवार की सेवा कितना बड़ा सामाजिक कार्य है। परिवार से ही तो समाज बनता है। घर में असंतोष का बीज बो कर हम बाहर कैसे भाषण दे सकती हैं ? बराबर के हक, पति से स्वतंत्रता, स्वावलम्बन के लिए नौकरी–ये सब थोथी बातें हैं रतना।

रतना – शायद तुम ठीक कहती हो, शोभा। मैं गलतफहमी में थी

आज तक। मैं किशोर से क्षमा मागूंगी। मैं उन्हें न जाने क्या क्या बातें सुनाती रही। तुमने आज मेरी आखें खोल दी। पर किशोर को मैं मना भी सकूंगी या नही ?

शोभा – यह तुम मुझ पर छोड़ दो। तलाक देना कोई हँसीखेल तो नहीं है।

किशोर – (अन्दर से) क्या मैं अन्दर आ सकता हूं।

रतना – हाँ हाँ, आइए।

किशोर – (गुस्से में आता है) रतना, मेरे कमरे में चलो। मुझे तुमसे कुछ बातें करना है।

रतना – क्या बातें करनी हैं ? आप यही न कर लीजिए।

किशोर – नही, कुछ खास बातें हैं।

शोभा – मैं चली जाती हूं।

रतना – नहीं, शोभा, तुम यही रहो। किशोर, तुम साफ-साफ कहो क्या बात करना चाहते हो ?

किशोर – मैं तुम्हें तलाक देना चाहता हूं।

शोभा – किस वजह से आप रतना को तलाक दे रहे हैं ?

किशोर – यह हमारी निजी बात है।

शोभा – मैं रतना की सहेली हूं। उसकी ओर से वकील हूं। रतना ने ऐसा क्या अपराध किया है जो आप उसे त्याग रहे हैं ? क्या वह पत्नी के कर्तव्य को पूरा नही करती ? क्या वह आपका आदर नही करती ? क्या आपको चाय बनाकर नही देती ? मौका पड़ने पर खाना नही बनाती ? आपके साथ उठती बैठती, बोलती चालती नही ? आपके साथ घूमने नही जाती ? आपके विचारों से उसके विचार क्या भिन्न हैं ? क्या वह आपसे नफरत करती है ? दूर रहती है ? क्यों रतना, क्या ऐसी कोई बात है ?

रतना – नही मैं इनसे नफरत नही करती, इनसे दूर नहीं रहती।

मैंने कोई अपराध नहीं किया है और किया भी हो तो मैं क्षमा मांगती हूँ। मैं आपकी दासी बनकर रहूँगी।

किशोर – यह क्या कहती हो, रतना ? मैं अपनी पत्नी को दासी बनाकर नहीं, अपनी स्वामिनी बनाकर रखूंगा।

रतना – (आंखों में आंसू) अब आप मुझे तलाक तो नहीं देंगे।

किशोर – नहीं। मैं तो तुम्हें अपना प्यार देकर अपने पास रखूंगा। रो नहीं। आज हंसने का दिन है।

रतना – आप आज कार में कहीं दूर जंगल में झरने के किनारे चाँदनी में चलने की बात कह रहे थे न। चलो, उस सुखद वातावरण में चलकर घन्टों बातचीत करेंगे। शोभा, तुम भी चलो।

शोभा – नहीं। तुम दोनों जाओ।

(रतना और किशोर जाते हैं। शोभा हँसती रहती है। परदा गिरता है।)



अनोखेलाल को आफिस का चार्ज

पात्र

अनोखेलाल, मनोहरलाल, दीनानाथ, सुरेशचंद्र, लछमन चपरासी
हेडक्लर्क श्यामबाबू
लक्ष्मी, मिस शर्मा

(आफिस । टाइप करने, घंटी बजने, चपरासी को बुलाने आदि की आवाज हो रही है ।)

मनोहरलाल – अनोखेलाल, कांग्रेचुलेशन्स भाई कांग्रेचुलेशन्स ।

अनोखेलाल – किस बात की बधाई दे रहे हो भाई मनोहरलाल ।

मनोहर – बात न बनाओ, जैसे जानते ही नहीं हो । अरे भाई, कल से आफिस का चार्ज तुम्हारे ही पास है । मैनेजरसाहब और सुपरिंटेंडेंट पहले ही छुट्टी पर हैं, कल से हेडक्लर्क भी बंबई जा रहे हैं आफिस के काम से । उनके बाद तुम ही तो सीनियर हो ।

दीनानाथ – ठाट है फिर तो अनोखेलाल के ।

सुरेशचंद्र – दीनानाथ, मजे रहेंगे तब तो हम सब लोगों के । क्यों भाई अनोखेलाल, इन्चार्ज अफसरी की चाय–वाय भी पिलाओगे या नहीं ?

मनोहर – सुरेशचंद्र, बात तो तुमने पते की पूछी है ।

अनोखेलाल – पी लेना यारो । पर अभी तो हेडक्लर्क से मेरी कोई बात नहीं हुई है ।

चपरासी – (आकर) साहब, आपको हेडक्लर्क साहब बुला रहे है ।

अनोखेलाल – क्या हेडक्लर्कसाहब बुला रहे हैं ?

दीनानाथ – अरे साहब, वे विचारे खुद ही चले आ रहे हैं तुम्हारे पास ।

मनोहर – बस वे चार्ज के बारे में ही कहने के लिए आ रहे होंगे ।

हेडक्लर्क – (प्रवेश करके)—देखो भाई अनोखेलाल, एक हफ्ते के लिए आफिस का चार्ज तुम्हारे पास रहेगा । ये रही चाभियाँ । चपरासी प्रातः ही तुम्हारे यहाँ आ जाएगा । डाकखाने से डाक मंगवा लेना ।

अनोखेलाल – (चाभियाँ लेकर) –ठीक है । साहब कब लौट रहे हैं ?

हेडक्लर्क – उनका कोई ठीक नहीं । कभी भी लौट आएँ । लेकिन मैं एक हफ्ते के पहले नहीं लौटूँगा । ख्याल रखना काम किसी

तरह सफर न हो ।

अनोखेलाल – बिलकुल नहीं, बिलकुल नहीं ।

(अनोखेलाल के घर पर दूसरे दिन)

लक्ष्मी – मैंने कहा उठोगे नहीं ? क्या आज ऐसे ही पड़े रहोगे ? कमरों को झाड़ू वगैरह कुछ नहीं लगाओगे क्या ?

अनोखे – कैसी बातें करती हो लक्ष्मी । आज मैं झाड़ू लगाऊँगा ? लछमन आ गया है न ? उससे कहो सारे कमरे में झाड़ू लगा दे, बाहर आंगन को भी साफ कर दे । इतना तो ख्याल करो आज से मैं साहब हूं ।

लक्ष्मी – साहब होगे आफिस के । इससे मुझे क्या ?

अनोखे - अच्छा चाय बन गई हो तो लछमन के हाथ भिजवा दो ।

लक्ष्मी – तो आज चाय यहां पियोगे कमरे में ?-

अनोखे – हां, और ऐसे ही कप में न भेज देना । ट्रे के साथ केटली में भेजना । (लक्ष्मी जाती है । दूसरी ओर दरवाजे पर दस्तक ।) देख तो लछमन, दरवाजे पर कौन है ; लछमन (प्रवेश करके)–जी, देखता हूँ । (दूसरी ओर जाता है ।)

(कुछ देर में श्यामबाबू का प्रवेश)

श्यामबाबू – मैं हूँ अनोखेलालजी, श्यामबाबू– आपका पड़ोसी । जरा आपका अखबार लेना चाहता हूँ पढने के लिए ।

अनोखे – नहीं । आप अखबार नहीं ले जा सकते ।

श्यामबाबू – लेकिन आप तो अबतक पढ लेते हैं । खैर कोई बात नहीं, मैं जल्दी ही लौटा दूंगा ।

अनोखेलाल – नहीं । आप अखबार नहीं ले जा सकते । मैं पढूंगा ।

श्यामबाबू – मैं रोज ही तो ले जाता हूँ आपका अखबार । आज आपको क्या हो गया है ?

अनोखे – मैंने कह दिया न आप अखबार नहीं ले जा सकते ।

श्यामबाबू – आप भी खूब मजाक करते हैं अनोखेलालजी ।

अनोखे – देखिए, आप तमीज से बात कीजिए। किससे बात कर रहे हैं आप जानते नहीं ? लछमन, इनसे कहो जिस दरवाजे से आए है उसी से सीधे चले जाएँ।

लछमन – (प्रवेश करके) –जी। (श्यामबाबू की ओर बढ़ता है।)

श्यामबाबू – मैं खुद चला जाता हूं। इस नौकर की जरूरत नहीं है निकालने के लिए। समझ मे नहीं आता आखिर आज आपको क्या हो गया है। (चले जाते हैं।)

अनोखेलाल – लछमन, इस बात का ख्याल रखो कि कोई भी हो बिना इजाजत अंदर न आए।

लछमन – जी जैसा हुकुम। (जाता है।)

लक्ष्मी – (प्रवेश करके। चाय कप में ही लाती है।)—ये लीजिए चाय। (देकर) और हां, चाय पी लेने पर फौरन तरकारी खरीदने जाओ मंडी में। नौ बजने को है। नहीं तो खाने में देर हो जाएगी।

अनोखे – तरकारी लेने मैं जाऊँ। कमाल करती हो लक्ष्मी। एक अफसर क्या झोला लेकर मंडी मे तरकारी खरीदने जाएगा। अरे, लछमन से क्यो नहीं कह देती ?

लक्ष्मी – ठीक है, ठीक है। मैं लछमन को भेजती हूं। तुम नहा लो तबतक। (जाती है।)

अनोखे – ठीक है कर लूँगा।

(कुछ देर बाद दरवाजे पर फिर दस्तक)

अनोखे – कौन है भाई ? अरे, लछमन जरा देखो तो।

लक्ष्मी — (अन्दर से ही) लछमन तरकारी लेने गया है।

अनोखे – अरे भाई कौन है ? चले आओ अन्दर।

(मनोहरलाल आते हैं।)

मनोहरलाल – मैं हूँ मनोहरलाल। कहो क्या चल रहा है अनोखेलाल ?

अनोखेलाल – तुम, तुम कैसे चले आए इधर ?

मनोहर – यों ही । मैंने सोचा घर जाकर बधाई दे दूं ।

अनोखेलाल – कल आफिस में बधाई दी थी उससे मन नही भरा शायद ? (फाइलों में डूब जाते हैं ।)

मनोहर – अरे आफिस की बात छोडो । घर की दी बधाई सच्ची बधाई है । अरे, तुम तो फाइलें लेकर काम में जुट गए हो । कितनी फाइल फैला रखी हैं टेबल पर । हटाओ भी इन्हें । काम · काम · जी नही ऊबता तुम्हारा काम से । (फाइलें खीच लेते हैं ।)

अनोखे – देखो मनोहरलाल, वे फाइलें रख दो यहां । और किसी काम से आए हो तो यहां बैठो, वरना चले जाओ ।

मनोहर – चला जाऊंगा बॉससाहब चला जाऊंगा । कुछ चायवाय भी पिलाओगे या ऐसे ही चला जाऊं ? खूब मजाक है ।

अनोखे – मजाक मैं कर नही रहा हूँ ।

मनोहर – नही तो क्या सचमुच अफसरी का भूत सवार हो गया है तुम पर ? ज्यादा अपनी चाल भूल गया है क्या ?

अनोखे – लक्ष्मी, लछमन आ गया हो तो उसे बाहर भेज दो ।

लछमन – (आकर)—जी मालिक, क्या हुकुम है ?

अनोखे – इनसे कहो ये चुपचाप जिस रास्ते से आए है उसी से निकल जाएं । हमारा वक्त जाया न करें ।

लछमन – जी ।

मनोहर – ठीक है चला जाता हूं । लछमन से कहलाने की कोई जरूरत नहीं है ।

(चले जाते है । लछमन भी पीछे पीछे जाता है । अनोखेलाल फिर काम में डूब जाते हैं ।)

लक्ष्मी – (प्रविष्ट होकर)—मैंने कहा नहाओगे नही ·क्या ? कपड़े भी तो धोने के पड़े हुए हैं । कब नहाओगे और कब कपड़े धोओगे । ढेर सारे पड़े हुए हैं और कुछ ही देर में आफिस

का टाइम हुआ जाता है ।

अनोखे – लक्ष्मी, कैसे भूल जाती हो कि घर के सारे काम आज से मुझे नही करने हैं । घर में नौकरचाकर होते हुए भी तुम मुझी पर हुकुम चला रही हो ।

लक्ष्मी – सचमुच, मैं भूल ही जाती हूं कि घर में आज से लक्ष्मण है । अच्छा यह तो बताओ, नहा भी वही ले तुम्हारे बदले ?

अनोखे – (हंसते हुए)–अरे भाई वह काम तो मुझे खुद ही करना होगा ।

(लक्ष्मी जाती है । तभी दरवाजे पर दस्तक ।)

अनोखे – कौन है भाई ? काम नही करने देगे ये आनेजाने वाले लोग । आजाओ भाई कौन है ।

(सुरेशचंद्र का प्रवेश)

सुरेशचंद्र – मैं हूं सुरेशचंद्र ।

अनोखे – क्यों क्या बात है ?

सुरेशचंद्र – बात यह है आज मुझे जरूरी काम है । आफिस नही आ सकूंगा । छुट्टी की दरखास्त लेकर आया हूं ।

अनोखे – क्या काम है ऐसा छुट्टी लेने के लिए ?

सुरेशचंद्र – बात यह है---

अनोखे – नही, मुझे कोई बातवात नही सुननी है । मैं अर्जी कदापि मंजूर नही करूंगा । आफिस न हुआ मजाक हो गया । जब मन मे आया तब छुट्टी ।

सुरेश – लेकिन…

अनोखे – लेकिन वेकिन मैं कुछ नही सुनना चाहता । इस तरह काम से लापरवाह बनना अच्छा नही होगा ।

सुरेशचंद्र – लेकिन अनोखेलाल…

अनोखे – ढंग से बात करो । तुम अनोखेलाल से नही अपने बॉस से बात कर रहे हो । अपने साहब से किस अदब से बात की

जाती है, इतना तक शऊर नहीं है तुममें ।

सुरेशचंद्र – माफ कीजिए, मुझसे कसूर हो गया । मेरे बेटे की-तबियत…

अनोखे – उसे डॉक्टर को दिखाओ तबियत खराब है तो । आप घर बैठकर क्या कर लेंगे उसकी तबियत के लिए ? जाओ, अभी काफी समय है । और समय पर आफिस में हाजिर रहो ।

सुरेशचंद्र – मैं नही जानता था कि चार्ज मिलने पर आप…

अनोखे – बस ज्यादे बकबक करने की आवश्यकता नही है । जाओ, मेरा समय बेकार खराब न करो ।

(सुरेशचंद्र चले जाते हैं । तभी लक्ष्मी अन्दर से रोती हुई बेबी को लाती है ।)

लक्ष्मी – बेबी को खिलाओ न । देखो कब से रो रही है । जरा भी काम नही करने दे रही है ।

अनोखे – लेकिन लक्ष्मी, मैं बेबी को संभालू या आफिस का काम करूं ? लछमन से कहो बेबी को संभालने के लिए ।

लक्ष्मी – ठीक है । यह तो मैं भूल ही जाती हूँ कि आज आप आफिस के साहब हैं और घर के काम के लिए आज आप नही लछमन है ।

अनोखे – बेबी से कहो रोए नही । आज शाम उसे ऑफिस की मोटर मे घूमने ले जाएँगे । तुम भी चलना लक्ष्मी, बड़ा मजा रहेगा । हां, देखो । आज मैं ऑफिस जल्दी जाऊँगा ।

लक्ष्मी – जल्दी, लेकिन क्यो ? साहब लोग तो ऑफिस लेट जाया करते हैं ।

अनोखे – मुझे जल्दी जाना ही चाहिए । मैं जल्दी नही जाऊँगा तो बाबू लोग ऑफिस देर से पहुँचेंगे और समय पर आ भी गये तो गप्पोटप्पों मे अपना समय बरबाद करेंगे ।

लक्ष्मी – मालूम पड़ता है ये साहब बड़े सख्त हैं ।

अनोखे – काम के मामले मे मैं कभी किसी के साथ रूरियायत नहीं

कर सकता । आखिर साहब का चार्ज होने के नाते मेरी भी तो कुछ जिम्मेदारी है ।

(लक्ष्मी जाती है । दरवाजे पर दस्तक)

अनोखे – अब कौन आ गया ? आज सुबह से ही फालतू लोग आकर मुझे परेशान कर रहे हैं । कौन है भाई ? चले आओ ।

(दीनानाथ का प्रवेश ।)

दीनानाथ – मैं हूँ दीनानाथ ।

अनोखे – कहो, कैसे चले आए ?

दीनानाथ – यही पैदल । बात यह हुई कि मैं इधर जाने को निकला तो देखा साइकल पक्चर थी ।

अनोखे – बेकार की बकवास न करो । मेरे पूछने का मतलब यह है कि काम क्या है जो इधर चले आए ?

दीनानाथ – खूब हो भाई अनोखेलाल । क्या बिना काम के न आऊँ तुम्हारे यहाँ ? बात यह है मैं आज आफिस जरा देर से ही आऊँगा ।

अनोखे – लेकिन क्यों ? क्या ऑफिस मेरे घर का है जो मैं तुम्हें लेट आने की इजाजत दे दूं ?

दीनानाथ – नही, आज तुम्हारे पास ऑफिस का चार्ज है न इसलिए तुमसे इजाजत चाहता हूँ ।

अनोखे – मैं इस प्रकार की कोई इजाजत नही दे सकता ।

दीनानाथ – जिस दिन स्टाक-चेकिंग को सुबह ही सुबह जाना पड़ता है, साहब इस प्रकार की इजाजत दे देते हैं ।

अनोखे – लेकिन मैं नही दे सकता । तुमको समय पर ऑफिस में हाजिर होना ही चाहिए ।

दीनानाथ – यह भी खूब रही । पूछने चला आया इसलिए शायद मना कर रहे हो । वही देर से आता तो क्या कर लेते ?

अनोखे – क्या करता । गैरहाजिरी लगा देता तुम्हारी ।

दीनानाथ – मालूम पड़ता है कुर्सी अपना असर दिखा रही है। अभी तो तुमने उसे छुआ तक नहीं है।

अनोखे – चुप रहो। तमीज से बात करना सीखो।

दीनानाथ – *(गरम होकर)* यह बात है, ठीक है नमस्ते। (चले जाते हैं)

अनोखे – नमस्ते।

लछमन – (अन्दर से आकर) बीबी जी कहती हैं खाना तैयार है नहा लीजिए।

अनोखे – बस अभी आता हूं पाँच मिनट में। बस यह फाइल और देख लूँ।

(दरवाजे पर दस्तक)

अनोखे – अब कौन आया ? देख तो लछमन। और ऑफिस का कोई कर्मचारी हो तो कह देना साहब से घर पर मिलना मना है, ऑफिस में मिले।

लछमन – जी (जाता है और दरवाजे पर ही वार्तालाप होता है) कौन आप !

मिस शर्मा – साहब घर पर है।

लछमन – हैं, लेकिन वे यहाँ नहीं मिलेंगे।

मिस शर्मा – रहने दे। मैं दो मिनट बात करना चाहती हूँ।

लछमन – लेकिन......

मिस शर्मा – (अन्दर जाकर) नमस्ते अनोखेलाल जी। कहिए ऑफिस के काम में व्यस्त हैं ?

अनोखे – ओ हो, मिस शर्मा, आओ आओ, बैठो।

मिस शर्मा – (उन्हीं के पास बैठती हुई) धन्यवाद।

अनोखे – कहो कैसे चली आई ?

मिस शर्मा – बात यह है कि आज दो बजे मेरी मम्मी आ रही हैं बम्बई से। मुझे छुट्टी चाहिए।

अनोखे – अच्छा, अच्छा। तो फिर यहाँ तक आने का कष्ट क्यों

किया ? किसी के हाथ ऑफिस में ही भिजवा दी होती दरखास्त ।

मिस शर्मा – मैं ऐसा ही करने वाली थी, पर सुदेशचन्द्र मिल गये मुझे बाजार में। बोले—खुद दरखास्त लेकर साहब के घर जाओ।

अनोखे – सुरेशचन्द्र तो बेवकूफ है, पक्का कामचोर। इधर चला आया था छुट्टी की दरखास्त लेकर । मैंने साफ मना कर दिया।

मिस शर्मा – अब मैं चलती हूँ । व्यर्थ आपका समय नही लेना चाहती ।

अनोखे – नही नही बैठो न । चाय लेकर जाओ ।

मिस शर्मा – नो थैंक्स । यह चाय का समय भी नही है । छुट्टी मन्जूर कर दी इसके लिए आपको बार बार शुक्रिया ।

अनोखे – इसकी कोई आवश्यकता ही नही यह तो मेरा फर्ज है।

मिस शर्मा – अच्छा मैं चलती हूं नमस्ते ।

अनोखे – नमस्ते ।

(मिस शर्मा जाती हैं । लक्ष्मी का प्रवेश)

लक्ष्मी – ओहो, कौन आया था ?

अनोखे – ऑफिस की टाइपिस्ट थी । मिस शर्मा । बेचारी को छुट्टी चाहिए थी।

लक्ष्मी – उसे तुमने छुट्टी दे दी होगी । पर पहले जो कौन आए थे उन्हें नहीं दी।

अनोखे – यह सब मेरे अधिकार की बातें हैं। इसमें तुम्हे दस्तंदाजी करने की कोई आवश्यकता नही ।

लक्ष्मी – उस बेचारे का बेटा बीमार था फिर भी तुमने उसकी अर्जी पर विचार नही किया। और यह मिस शर्मा मुस्करा कर, पास आकर बैठ गई तो बस कर दी उसकी अर्जी मजूर।

अनोखे – अच्छा अब ज्यादा बात करने का समय नहीं है। फौरन थाली परोसो ।

लक्ष्मी – तो क्या नहाने की छुट्टी । आदत ही है तुम्हारी । (जाती है ।)

(दरवाजे पर दस्तक)

अनोखे – कौन है ? बड़ी नाक में दम कर दी है लोगो ने ।

सुरेशचंद्र और दीनानाथ — हम हैं । (दोनों का प्रवेश ।)

अनोखे – तुम दोनो फिर क्यो चले आए ? मैंने साफ कह दिया था सुरेशचंद्र, कि मैं तुम्हारी अर्जी मंजूर नही कर सकता। और दीनानाथ, तुम्हें समय पर ऑफिस मे हाजिर होना ही होगा।

सुरेशचंद्र – माफ कीजिए । हम आपके पास किसी बात की याचना करने नही आए हैं । सिर्फ एक सूचना देने आए हैं कि बड़े साहब यानी मैनेजरसाहब छुट्टी पर से आज प्रातः की गाडी से आ गए हैं । और वे आज आफिस मे हाजिर होने वाले हैं । उनके आने की खबर हमको दौलत चपरासी ने बाजार मे दी ।

अनोखे – (तुनककर) ठीक है।

दीनानाथ – और सुरेशचंद्र, आगे की बात तो और सुना दो ।

सुरेशचंद्र – हां । साहब ने मेरी छुट्टी की अर्जी मंजूर कर दी है और दीनानाथ को भी ऑफिस लेट आने की अनुमति दे दी ।

अनोखे – (सुनकर)—ठीक है ।

सुरेशचद्र – और हां, साहब ने कहा है लछमन को चाभियों के साथ बंगले पर भेज दो । यही कहने के लिए हम इधर आये थे ।

अनोखे – ठीक है ।

सुरेशचंद्र और दीनानाथ –हम जा रहे हैं ।

अनोखे – ठीक है ।

(वे दोनों जाते हैं ।)

लछमन – मैं चाभियां लेकर चला मालिक ।

अनोखे – ठीक है ।

लक्ष्मी – (रोती हुई बेबी को लाकर) – अरे इसे तो संभालो। रो रही है। मैं तब तक थाली लगाती हूं।

अनोखे – ठीक है।

सुरेशचंद्र – (प्रवेश करके)–अढ़ाई घंटे की अफसरी अफसर बनने के पहले ही खत्म हो गई। हा हा हा।

अनोखे – (उसकी ओर क्रोध से बढ़कर)—ठीक है, ठीक है।

(सुरेशचंद्र भाग जाते हैं और फिर परदा गिरता है।)

इंटरव्यू : एक चुनाव के उम्मीदवार से

पात्र

डाक्टर, गोपाल, उम्मीदवार

(एक प्राइवेट डाक्टर का दवाखाना। डाक्टर एक कुर्सी पर बैठा हुआ है। सामने टेबल है। डाक्टर प्रौढ़ व्यक्ति है। कैलेंडर पर तारीख पांच और दिन रविवार का है। टेबल के दाएं बाएं एक एक ओर कुर्सी है। परदा खुलते ही डाक्टर अपने कंपाउन्डर गोपाल को बुलाता है।)

डॉक्टर – गोपाल।

गोपाल – (प्रवेश करके) जी, डॉक्टरसाहब।

डॉक्टर – अरे भाई, आठ बज गए। क्या उम्मीदवार आ गए?

गोपाल – जी हां। चार उम्मीदवार खड़े हैं अपने क्षेत्र से। चारों आ गए हैं। और, डाक्टरसाहब, दो पेशेंट भी आए हुए हैं जो दिखाना चाहते हैं।

डाक्टर – नही भाई। उनसे कह दो मैं रविवार को नही देखता हूं। फिर आज तो तुम जानते हो इन उम्मीदवारों को बुला रखा है। उनसे कहो अगर दिखाना ही चाहते हो तो दो घंटे बाद मिलें, और वह भी यहां नही घर पर।

गोपाल – ठीक है। उम्मीदवारों मे किसको पहले भेज दूं?

डॉक्टर – किसी को भी भेज दो।

(गोपाल जाता है। थोड़ी ही देर में खद्दर की सादा पोशाक में एक उम्मीदवार प्रवेश करता है।)

डाक्टर – आइए, बैठिए।

(उम्मीदवार बाईं ओर वाली कुर्सी पर बैठ जाता है।)

डॉक्टर – क्षमा कीजिए। आप लोगों को मैंने बड़ा कष्ट दिया जो विज्ञापन देकर अपने यहां बुलाया। वह भी ऐसे समय जब कि आप लोग अपने चुनाव-कार्य में काफी व्यस्त हैं।

उम्मीदवार – कष्ट की क्या बात है, डॉक्टरसाहब। हम तो जनता की सेवा के लिए सदैव तैयार हैं।

डॉक्टर – मेरा विज्ञापन देख कर आप लोगो को कुछ अजीब लगा

होगा। अब तक कभी ऐसा नहीं हुआ है कि किसी वोटर ने उम्मीदवारों को अपने यहाँ विज्ञापन देकर बुलाया हो। बात यह है कि मैं अपने व्यवसाय के कारण बहुत व्यस्त रहता हूँ। मेरा परिवार काफी बड़ा है। परिचय का दायरा भी इस व्यवसाय के कारण काफी फैला हुआ है। सभी मुझसे पूछते है, डॉक्टर आप किसे वोट देंगे, हम अपके साथ हैं। मैं उनसे कहता हूँ, प्रजातन्त्र में हर व्यक्ति अपनी इच्छा के अनुसार वोट देने के लिए स्वतन्त्र है अपने विवेक से जिसे भी वोट देना चाहो, दो। फिर भी वे मेरी राय पर ही चलना चाहते हैं। प्रजातंत्र में जहाँ एकएक वोट का महत्त्व है, यहां मेरे परिवार और परिचितों के सम्मिलित वोट सबसे अच्छे उम्मीदवार को जायें, इसी दृष्टि से मैंने विज्ञापन दे दिया कि आज इस समय स्वय उम्मीदवार या उसके प्रतिनिधि आकर मुझसे मिलें ताकि सभी से सवाल जबाव कर लेने के बाद कोई राय कायम की जा सके।

उम्मीदवार – बहुत अच्छा किया आपने। मैं स्वयं उम्मीदवार हूँ, और मुझे उम्मीद है आप के सारे वोट मुझे ही मिलेंगे।

डॉक्टर – आपका शुभ नाम ?

उम्मीदवार – मनोहरलाल।

डॉक्टर – आप किस पार्टी से खड़े हो रहे हैं ?

उम्मीदवार – यह लीजिए। में पार्टी का घोषणापत्र ही लिए आया हूँ। इसमें केवल पार्टी का नाम ही नहीं वरन् वे सब बातें भी हैं जो हमारी पार्टी देश के लिए करना चाहती है।

डॉक्टर – धन्यवाद, घोषणापत्र तो आपका काफी लम्बाचौड़ा हैं। लगता है देश की आप हर तरह से सेवा करना चाहते हैं।

उम्मीदवार – जी। इसमे शक है ?

डॉक्टर – लेकिन इस घोषणापत्र में इस चुनावक्षेत्र के बारे में, तो

जानकारी नहीं होगी ?

उम्मीदवार – जी, वह तो नहीं है ।

डॉक्टर – तो मुझे कुछ आपसे ऐसे सवाल करने होंगे जो अपने चुनाव क्षेत्र से संबन्धित हैं । मेरा ख्याल है कि यदि कोई वोटर इस सम्बन्ध में कोई जानकारी प्राप्त करना चाहे तो आप उसे अनुचित नहीं समझेंगे ।

उम्मीदवार – जी, नहीं ।

डॉक्टर – मेरा ख्याल है कि वोटर जिस चुनावक्षेत्र में रहता है उससे उपलब्ध सुविधाओं से ही वह अपने लिए अधिक लाभ उठा सकता है ।

उम्मीदवार – आप ठीक कहते हैं ।

डॉक्टर – मैं यह मानता हूँ कि सम्पूर्ण देश के हित के साथ अपने चुनावक्षेत्र का भी हित बंधा हुआ है, तथापि क्षेत्र-क्षेत्र के हित से ही संपूर्ण देश का हित सम्भव है ।

उम्मीदवार – आप बजा फरमा रहे हैं ।

डॉक्टर – आप इस क्षेत्र में कितने दिनों से रह रहे हैं ?

उम्मीदवार – जी मैं इस क्षेत्र का निवासी नहीं हूं ।

डॉक्टर – तब आप इस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कैसे कर सकेंगे ?

उम्मीदवार – संविधान में ऐसी कोई धारा नहीं है जो मुझे प्रतिनिधित्व करने से रोकती हो ।

डॉक्टर – संविधान में ऐसी कोई धारा नहीं है, यह तो मैं भी जानता हूँ लेकिन यह आप भी मानेंगे कि जो व्यक्ति जिस चुनाव-क्षेत्र से खड़ा होता है उसी स्थान का रहनेवाला हो तो उस क्षेत्र के लोगों का अच्छी तरह से प्रतिनिधित्व कर सकता है । वहीं का निवासी होने पर उसे उस क्षेत्र के लोगों के सुखदुखों की अच्छी तरह से जानकारी होती है ।

उम्मीदवार – मैं लोगों की जरूरतों और मुसीबतों को अच्छी तरह

समझता हूँ ।

उम्मीदवार – यह तो हमारी पार्टी के सोचने की बात है । पार्टी हमें जो स्थान निर्धारित कर देती है वहीं से हमें खड़ा होना पड़ता है ।

डॉक्टर – शायद पार्टी समझती है आपको इस क्षेत्र से ज्यादा वोट मिल जायेंगे । हाँ, यह तो बताइए, आपने शिक्षा कहाँ तक प्राप्त की है ।

उम्मीदवार – मेरा ख्याल है, संविधान में उम्मीदवार के लिए शिक्षा का कोई बंधन नही है ।

डॉक्टर – मैं उस दृष्टि से नहीं पूछ रहा हूं। जानना चाहता हूं कि जिस उम्मीदवार को हमे वोट देना है उसने कितनी स्कूली शिक्षा पाई है ?

उम्मीदवार – स्कूली शिक्षा से क्या होता है डॉक्टरसाहब । राजनीतिक क्षेत्र में मैंने इतना काम किया है और उससे इतना सीखा और अनुभव प्राप्त किया है कि उसके मुकाबले स्कूल कालेज की शिक्षा कुछ भी नही है ।

डॉक्टर – इसके पहले कभी आप चुनाव के लिए खड़े हुए थे ?

उम्मीदवार – जी हाँ, और मैं कामयाब भी हुआ था ।

डॉक्टर – स्थायी-सम्पत्ति तो आपकी होगी ? महज जानकारी की दृष्टि से पूछ रहा हूं ।

उम्मीदवार – शौक से पूछिए । स्थायी-संपत्ति भी मेरी है ।

डॉक्टर – आपकी ही अर्जित है या पैतृक ?

उम्मीदवार – मेरी अर्जित है ।

डॉक्टर – आप अपनी आदनी के जरिए वतला सकते हैं ?

उम्मीदवार – मेरा ख्याल है आपके सवाल वकीलो के सवालों की तरह हुए जा रहे हैं ।

डॉक्टर – कोई बात नही । यह सवाल आपको चुभता है तो मैं इसे

यहीं छोड़ता हूं। आपने अभी-अभी कहा है कि मैं इस चुनाव क्षेत्र का निवासी नही हूं। फिर भी इस क्षेत्र के लोगों की मुसीबत और जरूरतो को अच्छी तरह समझता हूं। शायद इसलिए कि आप अपने चुनाव के प्रचार का काम इस क्षेत्र में कुछ अरसे से कर रहे हैं।

उम्मीदवार – हां, ठीक अनुमान है आपका। मैंने जनता को आश्वासन दिया है कि मैं इस क्षेत्र की अधिक से अधिक प्रगति करने के लिए सचेप्ट रहूंगा।

डॉक्टर – हमें उम्मीद है, आप रहेंगे। अब मैं इस क्षेत्र के बारे में आपसे कुछ जानकारी हासिल करना चाहूंगा।

उम्मीदवार – जो भी जानकारी चाहे पूछिए।

डॉक्टर – इस क्षेत्र की प्रति व्यक्ति सालाना आमदनी क्या है ?

उम्मीदवार – यह तो मैं नही जानता।

डॉक्टर – आपने इसे कभी जानने का प्रयत्न किया ?

उम्मीदवार – नही साहब। इसकी हमें आवश्यकता भी नही है।

डॉक्टर – इतना तो शायद बता सकेंगे कि आपके क्षेत्र मे मजदूर,-किसान, मध्य और उच्च वर्ग के लोगो का प्रतिशत क्या है या वे किस अनुपात में हैं ?

उम्मीदवार – जी, यह तो ठीक-ठीक नही मालूम। वास्तव में इस प्रकार की जानकारी व्यर्थ है, क्योंकि वोटर-वोटर तो सभी समान हैं।

डॉक्टर – यह सो आप जानते हैं कि आपके चुनाव क्षेत्र में गाँवों की सख्या काफी है। गाँव-गाँव में प्रचार कार्य करते हुए आप भटके होंगे। किसानो की दिक्कतो को जानने की आपने अवश्य ही कोशिश की होगी। अपने क्षेत्र के किसानो के लिए आपने कौन सी योजनायें तैयार की हैं ?

उम्मीदवार – बहुत सी हैं। उनके लिए कुएं, पंप, नहरें, तालाब आदि

सिंचाई के साधन उपलब्ध करना, अच्छे बैल, बीज, खाद आदि के लिए तकावी की व्यवस्था करना। इस प्रकार बहुत सी योजनायें हैं।

डॉक्टर – देखिये, नेता लोग अपने भाषणों में जिस प्रकार की बातें प्रायः हांक देते हैं एक ही सांचे की, कुछ वैसी ही बातें आप कर रहे हैं। आप शायद नहीं जानते कि यहां के किसानों के सामने समस्या सिंचाई की नहीं, बाढ़ की है। अच्छे बैल, बीज और खाद की नहीं है वल्कि अच्छी मण्डियों और उन तक पहुँचाने के मार्गों की है। यहां का हर किसान सोचता है कि खून पसीना बहाकर पैदा की हुई अपनी पैदावार के उचित दाम कैसे मिलें!

उम्मीदवार – हमारी पार्टी ऐसी बातो पर सदैव ही बड़ी गम्भीरता से विचार करती है।

डॉक्टर – फसल के दिनों में किसानों को अपना अनाज सेठ साहूकारों के हाथ सस्ते दामों पर बेच देना पड़ता है। आगे चलकर ये सेठ साहूकार उसी अनाज को सवाए ड्योढ़े और कभी-कभी दुगुने दामो पर बेच देते हैं। पार्टी की इस सम्बन्ध में क्या योजनाएं हैं?

उम्मीदवार – किसान वोट देकर हमारे हाथ मजबूत करें, हम ऐसे कानून बनाएंगे जिससे सेठ साहूकार इस प्रकार की मुनाफाखोरी कदापि नहीं कर सकेंगे।

डॉक्टर – क्या ऐसी सोसाइटियाँ नही बन सकती जो किसानों और ग्राहकों के बीच की कड़ी बन सकें?

उम्मीदवार – मेरे पास समय कम है। आप शीघ्र अगले प्रश्न पूछ डालिए।

डॉक्टर – ठीक है मूल्य वृद्धि और नाजायज़ मुनाफाखोरी के सम्बन्ध में आप क्या कुछ कह सकते हैं?

उम्मीदवार – ये दोनों ही देश के लिए घातक हैं। इस पर जितनी जल्दी नियन्त्रण पाया जा सके उतना ही अच्छा है ।

डॉक्टर – यह नियंत्रण किस प्रकार पाया जा सकता है—इस सम्बन्ध में कोई योजना है आपके दिमाग में ? हम जानते हैं सरकार इस पर नियन्त्रण पाना चाहती है, पर विफल हुई है। वह क्यों हुई कुछ कह सकते हैं आप ? महज इस लिए पूछ रहा हूँ कि यह आम जनता का सवाल है। आपने जनता को आश्वस्त करने के लिए अवश्य ही इस पर विचार किया होगा।

उम्मीदवार – सरकारी नियमों और आदेशों का कड़ाई से पालन होना चाहिए। नियम तोड़ने वाले को कड़ा दण्ड मिलना चाहिए।

डॉक्टर – फिर चाहे उनमें आपके भाई भतीजे, नातेरिश्तेदार हों, वे भी हों जो आपकी पार्टी के लिए कितना ही काम कर रहे हों ... ... अच्छा छोड़िए इस बात को। मध्य-वर्ग के लिए आपकी क्या योजनाएँ हैं ? शिक्षित बेकारी को किस तरह दूर किया जा सकता है ?

उम्मीदवार – उद्योग-धंधों की वृद्धि से ।

डॉक्टर – अपने चुनाव क्षेत्र में किन-किन उद्योगधंधों की संभावनायें हैं ? किन चीजों की उपज ज्यादा होती है जिनके आधार पर उद्योग वहाँ पर शुरू किए जा सकें ? उनके लिए कौन से स्थान उपयुक्त रहेंगे ? वहाँ तक कच्चा माल पहुँचाने के और बना हुआ माल मंडियों तक पहुँचाने के साधन उपलब्ध हो सकेंगे या नहीं ?

उम्मीदवार – देखिए। बात दरअसल यह है कि चुनाव प्रचार कार्य के कारण इन सब बातों पर विचार करने के लिए समय ही नहीं मिला।

डॉक्टर – ठीक है, कोई बात नहीं। आपके चुनाव क्षेत्र में कितने

कालेज, हाईस्कूल और प्राइमरी स्कूल हैं ?

उम्मीदवार – इस प्रकार की जानकारी इकट्ठी करके हम लोगों को क्या लाभ हो सकता है, डॉक्टरसाहब ?

डॉक्टर – आपके चुनावक्षेत्र के किन-किन गांवों में प्राइमरी स्कूल नही हैं ?

उम्मीदवार – यह तो मैं नही जानता, हां, चुने जाने के बाद में कोशिश करूंगा कि प्रत्येक गांव मे स्कूल हो ।

डॉक्टर – आप शायद जानते होंगे कि मध्यवर्ग के बहुत से मेधावी छात्र कालेजों में महज़ इसलिए नही पढ़ सकते कि उनके अभिभावक उन्हें पढा नही सकते, साधारण कालेजों में ही, इन्जिनियरिंग और मेडिकल कालेजो की तो बात ही जाने दीजिए ।

उम्मीदवार – मैं देखूंगा कि सभी अच्छे छात्र अपने मन माफिक शिक्षा प्राप्त कर सकें ।

डॉक्टर – आपके चुनावक्षेत्र में अस्पताल कितने हैं ?

उम्मीदवार – मैंने आपसे पहले ही कहा है कि इस प्रकार की व्यर्थ की जानकारी इकट्ठा करने का काम हम लोग नही किया करते । हां, इतना मैं कह सकता हूं कि हर गांव में एक एक स्कूल के साथ एक-एक अस्पताल भी अवश्य खुलवा दूंगा ।

डॉक्टर – आश्चर्य है, आप भारत के इतने सीमित साधन देखते हुए भी इस प्रकार का आश्वासन दे रहे हैं । हां, स्कूल और अस्पताल खुल जायेंगे फिर उनमे अध्यापक और डॉक्टर मले ही न हों।... ... .. अच्छा यह बताइए, देश में व्याप्त भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए आपकी पार्टी के पास कौन सी योजनायें हैं, प्रचलित योजनाओं के अतिरिक्त, क्योंकि ये तो विफल हो चुकी हैं ।

उम्मीदवार – अतिरिक्त योजनाओं के बारे में समय आने पर हमारी पार्टी अवश्य विचार करेगी। उसके हाथ मजबूत हो जाने पर वह क्या कुछ नही कर सकती ?

डॉक्टर – ठीक है। आप यह तो मानते ही होंगे कि देश में बहुत से राष्ट्र विरोधी तत्त्व व्याप्त हैं। हमारी भावी पीढ़ी, कम से कम अपने चुनाव क्षेत्र की भावी पीढ़ी इन तत्त्वों का शिकार न बन जाए इस बारे मे आपने सोचा है कभी ? मैं समझता हूँ कि प्रत्येक चुनाव क्षेत्र का प्रतिनिधि अपने पर इस बारे में कुछ जिम्मेदारी ले लें, तो ऐसे तत्त्वों को नष्ट कर देश को ऊपर उठाने मे कोई देर नही लग सकती।

उम्मीदवार – माफ कीजिए, इस बारे में मैंने कुछ भी नहीं सोचा है।

डॉक्टर – मैं जानता हूँ आपकी पार्टी ने काफी कुछ किया है और कर रही है। पर स्वयं आपने देश के लिए क्या क्या किया है ? किन-किन मुसीबतो मे से आपको गुजरना पड़ा है ? आपके त्यागपूर्ण कार्य अवश्य उल्लेखनीय होंगे।

उम्मीदवार – देखिए, हम लोग सेवा करना जानते हैं। सेवा और त्याग के कामों का लेखाजोखा अपने पास नहीं रखते।

डॉक्टर – ठीक है। आपने कहा पहले भी आप चुनाव जीते हैं। सदन में आपने कितनी बार भाषण किया ?

उम्मीदवार – भाषण करने का मौका ही नही आया।

डॉक्टर – अपने क्षेत्र के मामलों को जानने का आपने कभी प्रयत्न किया था ? पार्टी की बैठक में कभी उन पर चर्चा की थी ?

उम्मीदवार (घड़ी देखकर) डॉक्टर साहब देखिए, समय काफी हो गया है अब आप मुझे इजाजत दीजिए।

डॉक्टर – ठीक है।

उम्मीदवार – (उठकर) मैं समझता हूं, मैंने आपके सभी प्रश्नो के

सन्तोषजनक जवाब दिए हैं। मुझे उम्मीद है आप, आपके परिवार और इष्टमित्र सभी के वोट मुझे ही मिलेंगे। आप सबको मेरी ओर से विश्वास दिला दीजिए कि मैं उनका सही तौर पर प्रतिनिधित्व करूँगा। अब इजाजत लेता हूँ। नमस्ते। (जाता है।)

डॉक्टर – (गोपाल को आवाज देता है।) गोपाल, गोपाल। (उसके आने पर) अगले उम्मीदवार को भेजो।

गोपाल – जी।

(जाता है। और उसी समय परदा गिरता है।)

रंग में भंग

पात्र

खन्ना, मंगल, मेहता, वर्मा, वार्डेन

(होस्टल का कमरा । सोफासेट, टेबल, पुस्तकें आदि । टेबल की दराज में एक लड़की का फोटो रखा है । परदा खुलता है उस समय नोकर मंगल फर्नीचर साफ करता हुआ और कोई फिल्मी गीत गुनगुनाता हुआ नजर आता है । खन्ना का प्रवेश । सूट में है ।)

खन्ना – अरे मंगल, आज तूने यह कितनी देर कर दी । देख रहा है आठ बज गए हैं ।

मंगल – कुछ बात नहीं बाबूजी । आज तो इतवार है । कालिज को तो आप जायेंगे नहीं । फिर क्या देर और क्या सवेर ।

खन्ना – बातें खूब बनाना जानता है मंगल तू । इस पूरे होस्टल में दिमाग किसी का तेज होगा तो बस तेरा ।

मंगल – दिमाग तेज है तो बाबूजी । पर अपने आप तो नहीं हो गया है । आप सब लोगों की बदौलत ही तो हो गया है । इस होस्टल में क्या कम लड़के हैं । एक हजार लड़के हैं एक हजार । और हर साल नए-नए आते रहते हैं । सो बस उनमें रहकर दिमाग तेज बना रहता है ।

खन्ना – अच्छा अब तू अपना ज्ञान छांटना बन्द कर । यहां अब और ज्यादा समय बरबाद न कर । वे मेहता और वर्मा के बच्चे टपक पड़ने में अब देर नहीं है । और वह रागिनी भी तो आ रही है ।

मंगल – हां हां । अब समझ में आया आप इतने बेहाल क्यों हैं । रागिनी की ही वजह में । बाबूजी एक बात पूछूं ?

खन्ना – बस बस, कुछ न पूछ मुझसे । तुझे छोटी मुंह बड़ी बात खूब आती है ।

मंगल – सिरफ एक बात पूछना चाहता हूं बाबूजी – सिरफ एक । रागिनी यहां रोज क्यों आती है ? कुछ परेम बरेम का चक्कर तो नहीं शुरू होगया है ?

खन्ना – (कुछ चिढ़कर) मंगल, अब तू अन्दर जाता है या नहीं ?

मंगल – आप तो बड़ी किलास में पढ़ते हैं बाबूजी । आपके किलास में छोकरियाँ भी पढ़ती हैं । एक दो नहीं, दस-दस बीस-बीस । उनके संग पढने में बड़ा अच्छा लगता होगा किलास में ।

खन्ना – (चिढ़कर) हाँ हाँ, अच्छा लगता है लड़कियों के साथ पढना । तो तू क्यों नहीं आता वहाँ ? आकर बैठा कर तू भी ।

मंगल – लेकिन मुझे क्या समझेगा किलास में । काला अक्षर भैंस बराबर ।

खन्ना – तो तू लड़कियों के मुँह की ओर देखा कर । तेरी समझ में तो लड़के कक्षा में पढ़ने के लिए थोड़े ही बैठते हैं लड़कियों के मुँह की ओर देखने के लिए ही बैठते हैं ।

मगल – रागिनी बड़ी नेक लड़की है बाबूजी ।

खन्ना – (हँसते हुए) तुझे पसन्द है ? करेगा शादी ?

मंगल – क्या मजाक करते हैं बाबूजी । कहाँ वह और कहाँ मैं । वह पढी-लिखी बड़े बाप की बिटिया और मैं ··· बस बाबूजी, आप तो बड़ा बुरा मजाक करते हैं । दिल में आग लगा देते हैं ।

खन्ना – दिल में आग लग जाती है न तेरे । अरे मंगल तो दिल तेरे भी है ।··· अच्छा, अब तेरे दिल की बात रख दूर और अन्दर जाकर चाय का पानी रख स्टोव पर । मेहमान आने और रागिनी के आने में अब देर नहीं है ।

(मंगल जाता है ।)

रागिनी, रागिनी। (टेबल की दराज में से रागिनी का फोटो निकालता है।) रागिनी, तुम्हारे लिए यदि मैं अपने आपको खाक भी कर दूं तो मुझे कोई कष्ट न होगा। रागिनी, बस अब तुम्हारे बिना मेरा जी सकना दूभर है। मैं ···· मैं क्या कहूँ रागिनी, जब से तुम्हें देखा है मुझे चैन नहीं। हरदम तुम्हारा ही ध्यान बना रहता है। पढ़ने बैठता हूँ तो सोचता हूँ खूब पढ़कर अच्छे नंबरों से पास भी हो जाऊँगा तो क्या। तुम्हारे अभाव में मेरी जिंदगी सब कुछ पाकर भी सूनी ही रहेगी। रागिनी··· रागिनी ··

(मेहता का प्रवेश। सादा लिबास में है। सूरत शकल से भी सादा ही है।)

मेहता – वाह खूब। खन्ना गजब करते हो यार। यह तुम्हारी एक्टिंग है या रागिनी के लिए पागलपन ?

खन्ना – मेहता, किसी का दिल जल रहा हो और उसे तुम एक्टिंग कहो, पागलपन कहो। दुनिया के लोग भी गजब करते हैं। मजनूं को लोग पागल क्यों कहते थे अब आया समझ में। (फोटो दराज में रखता है।)

मेहता – हाँ, मजनू बनने के बाद ही लोग मजनूं को समझ सकते हैं। इसके पहले नहीं। पर मेरे दोस्त, मजनू इतने अच्छे कपड़े नहीं पहनता था जैसे तुम पहने हुए हो। वह तो पूरा दीवाना हो गया था। कपड़ों की जरा भी सुधबुध न रहती उसे।

खन्ना – तुम तो यही सोचोगे मेरे दोस्त कि सब बातों की सुधबुध खोकर फटेपुराने कपड़ों में गली-गली मारा मारा फिरूँ और तुम सब लोग मेरी हँसी उड़ाते रहो। मेरे दोस्त रागिनी यदि मुझे न मिल सकी तो एक दिन तुम्हारी दुआओं से मेरी ऐसी ही हालत हो जाएगी।

मेहता – खन्ना, ये कैसी बातें करते हो। तुम्हारा लंगोटीयार होने के

नाते मैं कभी भी नहीं चाहूँगा कि रागिनी के कारण तुम एक दिन दीवाने बनकर मारे-मारे फिरो । पर मेरा ख्याल है कि रागिनी तुम पर नही वर्मा पर जान देती है ।

खन्ना – वर्मा उसे भी बुलाया है आज मैंने यहाँ । वास्तव में उसे अब तक आजाना चाहिए था । रागिनी भी अभी तक नहीं आई । ··आज इस बात का फैसला होकर रहेगा कि रागिनी मेरी है या वर्मा की ।

मेहता – और यदि रागिनी तुममें से किसी को भी पसन्द न करे तो ?··· क्योंकि जान देना बात और है और शादी करना और ।··

खन्ना – तुम कहते हो रागिनी वर्मा पर जान देती है लेकिन वर्मा में ऐसे कौन सुर्खाब के पर लगे है जो वह उस पर जान देगी ।

मेहता – क्यो उसके पास किस बात की कमी हैं ? उसका बाप एक बड़ा इंजिनियर है ।

खन्ना – उसका बाप बड़ा इंजिनियर है तो मेरा बाप भी कुछ कम नही है । एक बड़ा वकील है वह ।

मेहता – देखते हैं अब इंजिनियर और वकील के इन सपूतो मे जीत किसकी होती है ।

खन्ना – यदि रागिनी ने कही वर्मा के गले में माल डाल दी तो खुदकशी कर लूंगा ।

मेहता – बीसवी सदी के सभी मजनूं ऐसी ही बातें करते हैं, लेकिन जब देखते हैं कि अपनी लैला दूसरे की बीबी बन गई है तो वे दूसरी लैला की खोज मे निकल पड़ते हैं ।

खन्ना – इस खन्ना का दिल तुम जानते नही मेहता, इसीलिए ऐसी बात कर रहे हो । अरे यह खन्ना आजकल के आलतू-फालतू मजनुओ मे से नही है । उसके पास सिर्फ एक दिल है एक । और एक बार किसी को दे दिया तो बस दे दिया ।···

मेहता – मेरा ख्याल कुछ दूसरा ही है खन्ना ।

खन्ना – वह क्या ?

मेहता – दिल वालों के पास सिर्फ एक ही दिल नही होता । बहुत से होते है ।···पिछले साल तुमने अपना दिल लीला को दिया था । वह शायद वापस मिल गया तुम्हे ?

खन्ना – लीला को दिल दिया ही नही था मेहता । मैं तो उससे सिर्फ क्लासमेट के नाते मिलता रहता था और इसी नाते वह मुझसे मिल लेती ।

मेहता – यह दिल का मामला बड़ा अजीब मालूम होता है मुझे । कब ये दे दिया जाता है और कब नही पता नही पड़ता । रागिनी शायद लीला से ज्यादा सुन्दर है ?

खन्ना – रागिनी की बराबरी कोई लड़की नही कर सकती मेहता । वह इस धरती की परी है परी ।

मेहता – लीला के बारे मे भी तो तुम ऐसा ही कहते थे ।

खन्ना – (जैसे सुना न हो) यह रागिनी अभी तक आई क्यों नही? उसके आने का समय तो हो गया है ।

मेहता – धरती की इन परियो का कोई भरोसा नही । वे अपाइन्टमेंट देती हैं एक को, और जाती हैं और कही । हो सकता है इस समय वह वर्मा के साथ किसी कैफे में चाय काफी पी रही हो।

खन्ना – पर वर्मा को भी तो यही आना है ।

मेहता – हाँ । लेकिन जब रागिनी साथ है तो आने की जल्दी क्यों करे ? संभव है वह उसे वहाँ तुम्हारे बारे में कोई उल्टी-सीधी बातें कह रहा हो ।

खन्ना – (एकदम उबलकर) जान ले लूंगा मैं वर्मा की यदि वह ऐसा करेगा तो । मैं इस प्रकार की बातें कतई बरदाश्त नहीं कर सकता ।

मेहता — लेकिन मेरे यार, एव्हरी थिंग इज फेयर इन लव एण्ड वार।

खन्ना — मैंने रागिनी को वचन दिया है मैं उन्हें अमरीका की यात्रा करवाऊँगा।

मेहता — वर्मा ने शारदा को राकेट से चन्द्रमा की यात्रा का वचन दिया हो। तुम दोनों ही धनी बाप के बेटे हो। अपने अपने बाप के बूते इस 'मुहब्बत के नीलाम' में तुम लोग ऊँची से ऊँची बोली लगा सकते हो।

खन्ना — मेहता तुम निरे मूर्ख हो। मुहब्बत के मामले में तुम कुछ नहीं जानते। हमारे प्रेम की भाषा को तुम नीलाम कहते हो प्रेम की दुनियाँ एक अजब की दुनिया होती है।

मेहता — अच्छा, यह तो बताओ यदि रागिनी तुमसे शादी करने के लिए राजी हो जाय तो शादी कब करोगे—परीक्षा के बाद या पहले ही ?

खन्ना — परीक्षा जाए भाड़ में। मैं तो फौरन शादी कर लूँगा।

मेहता — लेकिन यह तो तुम दोनों का बी० ए० का फाइनल इयर है।

खन्ना — मैं तो पिछले तीन महीनों से यह भी भूल गया हूँ कि किस इयर में पढ़ रहा हूँ।

मेहता — ओह, तो यहाँ तक नौबत आ गई है तुम्हारी। खूब। लेकिन कक्षा में तो तुम बराबर आते हो।

खन्ना — बस जिधर रागिनी जाती है मैं भी चला जाता हूँ। एक दिन कक्षा में से वह उठकर चली गई थी तो वह पैंतालीस मिनट पैंतालीस घंटों जैसे मालूम हुए।

मेहता — हमारे कालेज के प्रोफेसरों के लेक्चर बड़े विद्वतापूर्ण होते हैं, साथ साथ मनोरंजक भी।

खन्ना — प्रोफेसरों की ओर ध्यान देता कौन है मेहता। यह काम तो तुम जैसे रकाबरों का है। मैं तो जब कक्षा में बैठा

हूँ तो मुझे यह भी मालूम नही रहता कि कौन सा विषय पढ़ाया जा रहा है ।

मेहता – बहुत खूब । बहुत खूब ।

खन्ना – कक्षा में रागिनी सब लड़कियों में चांद की तरह चमकती है तुमने कक्षा में उसकी ओर कभी देखा नहीं शायद ।

मेहता – देखा है । लेकिन दिन में, रात मे नही ।

खन्ना – मेहता, तुम क्या देख सको उस चांद से मुखड़े को । तुम जैसा शुष्क और नीरस आदमी शायद ही कोई हो । मुझे खेद है कि मेरा एक स्कालर दोस्त इतना फूहड़ है । सभी स्कालर इतने फूहड़ नहीं होते मैं जानता हूँ । प्रोफेसर मूर्ति अपने यहाँ का एक बड़ा स्कालर है । उसमें तुम जैसा फूहड़पन नही है ।

मेहता – सो कैसे ?

खन्ना – जब वह देखता है कि आज कक्षा में एक भी लड़की हाजिर नही है तो वह उस दिन पढ़ाता ही नही । किसी न किसी बहाने लेक्चर लेने से मना कर देता है । मैं ऐसे प्रोफेसरों को दिलवाला प्रोफेसर कहता हूँ । नही तो वह इतिहास का प्रोफेसर भार्गव । बिलकुल फहड़ है तुम जैसा ।

मेहता – क्यो, वह क्या करता है ?

खन्ना – बस लेक्चर क्या देता है जान ले लेता है लडकों की । क्लास में लडकियाँ नहीं होती उस दिन तो वह पैंतालीस मिनट के बजाय साठ साठ मिनट पढाता रहता है। बिलकुल बोर कर देता है ।

मेहता – लेकिन उसका इतिहास का ज्ञान तो बहुत अच्छा है ।

खन्ना – खाक अच्छा है । एक दिन एक लडके ने पूछा था आठवें हेनरी की छः रानियों के नाम क्या हैं तो वह उस लड़के पर बिगड़ पड़ा । कहने लगा – उन रानियों से तुम्हें क्या

करना है। वे परीक्षा में नहीं आ रही हैं।

मेहता – हां हां, याद आया मुझे भी। इस पर उस लड़के ने जबाव दिया–सर, हमें खेद इसी बात का है कि वे परीक्षा में नहीं आ रही हैं, वरना हम उन्ही को लेकर परीक्षा भवन से भाग जाते।

खन्ना – देखो, कैसी लाजबाब बात कही थी। इतिहास के रेगिस्तान मे एक सुहावने झरने जैसी। लेकिन वह फूहड़ भार्गव कितना नाराज हुआ उस लडके पर। बदतमीज और न जाने क्या-क्या कहा। कक्षा में से निकाल दिया। मैं कहता हूं यदि कालेजों में सभी प्रोफेसर भार्गव जैसे हो जाएं तो बस हम जैसे तो पहले सार्टिफिकेट कटा लें।

मंगल – (अन्दर से ही) बाबूजी, पानी खूब खौल रहा है। क्या चाय डाल दूं ?

खन्ना – तेरा पानी खौल रहा है। इधर मेरा दिल खौल रहा है। इस रागिनी का इन्तजार अब मुझसे सहा नही जाता।

मंगल – (प्रवेश करके) —बाबूजी, नाश्ता भी तैयार है। अंडे भी उबल गए हैं।

खन्ना – अबे अंडे के बच्चे, उबल गए हैं तो नीचे उतार ले। मेहता, तुम यही बैठो। मैं रागिनी को देखता हूं क्यों नहीं आई अबतक। मुझे तो अब वर्मा पर सन्देह होता है। कहीं वह उसे फुसलाकर तो नही ले गया। मैं जानता हूं वह अव्वल नंबर का धूर्त है।

मंगल – आप यही रुकिए बाबूजी मैं जाता हूं उन दोनों को देखने।

खन्ना – नही नही। तू क्या देखेगा उन्हें। मैं ही जाता हूं। (जाता है।)

मेहता – मंगल, खन्ना तो उस रागिनी के पीछे पागल हो गया है।

मंगल – खन्ना बाबूजी तो रागिनी के पीछे पागल हैं। मेता बाबू, आप किस छोकरी के पीछे पागल हैं ?

मेहता – (नाराज होकर) – कैसी बात करता है मंगल तू। किसी लड़की के पीछे पागल होने के लिए मैं खन्ना और वर्मा जैसे लोगो मे थोड़े ही हू।

मंगल – (आश्चर्य से)–नही है। तो जरूर कोई" कोई" खराबी कोई है जो किसी छोकरी के पीछे··· ···

मेहता – (चिढ़कर)–मगल, कैसी बेहूदा बात करता है।

मगल – नही नही, मेता बाबू। आप मेरा मतलब नही समझे। मेरे कहने का मतलब यह था कि आपने कौनसी खराबी समझी जो छोकरियों के पीछे पागल नही हुए। कालिज मे पढ़कर भी परेम वरेम के फंदे में नही पड़े तो कालिज में पढ़ने का फायदा क्या ?

मेहता – तो तू समझता है कि लड़के लड़कियाँ कालेज में सिर्फ प्रेम करने के लिए आते हैं।

मगल – मेता बाबू, मेरे कहने का यह भी मतलब नहीं। मेरा कहना तो यह है कि एक पत्थर से दो चिड़ियाँ मरें तो क्यो न मारी जाएँ ? कालिज में पढ़ते भी रहे और परेम भी करते रहें। हमारे खन्ना बाबूजी इन मामलो में बड़े होशियार हैं।

मेहता – तो तेरे कहने का मतलब यह है कि मैं मूर्ख हूँ जो कालेज में पढ़ते हुए किसी लड़की से प्रेम नही करता।

मंगल – मेरे कहने का मतलब यह नही मेता बाबू। आप तो उलटा ही अरथ लगाते हैं। मेरे कहने का मतलब यह है कि कालिज मे कितनी ही छोकरियाँ होती हैं। उनसे अगर परेम वरेम नही किया तो उन छोकरियों का होगा क्या ? क्या उनका अचार डलेगा। छोकरियाँ हुई और परेम का मामला न हुआ तो बस गजब की बात हो गई।

मेहता – तो तेरे कहने का मतलब यह है कि छोकरियाँ यदि हैं तो उनसे प्रेम करना ही चाहिए ।

मंगल – हाँ । अब बात कैसी आई समझ में । मेता बाबू मुझ गँवार की बात समझने के लिए आपको इतनी देर लगती है तो *पढ़े लिखे परोफेसरों की बातें आप कैसे समझ पाते होंगे ?*

मेहता – मैं मूर्ख हूँ आखिर यही कहने का मतलब है न तेरा ?

मंगल – मेरे कहने का मतलब यह नही है मेता बाबू । मैं क्या कह सकता हूँ आप जैसे पढ़े लिखे लोगो को ।'' मेरा बड़ा जी चाहता है आपके कालिज मे पढ़ने के लिए ।

मेहता – यदि तू पढ़ता तो तूने जरूर किसी लड़की से प्रेम किया होता, नहो ?

मंगल – मैं आपकी तरह सुनहला मौका न छोड़ देता मेता बाबू । मेरा तो जी न मानता कि इतनी छोकरियों के रहते मैं उनसे परेम न करता । ' मेता बाबू, आप से एक बात पूछने को जी हो रहा है ।

मेहता – क्या बात पूछना चाहता है पूछ ।

मंगल – आप बुरा तो नही मानेंगे ?

मेहता – तूने अबतक ऐसी कौन सी बात नहीं सुनाई है जिसका मैं बुरा न मानता । इतनी बातों में एक और सही । हाँ, पूछ क्या पूछना चाहता है ।

मंगल – मैं पूछना चाहता हूँ कि आपने जो किसी छोकरी से परेम नहो किया, ऐसा तो नहीं कि आपके हिस्से में ही कोई छोकरी नही पड़ सकी ।

मेहता – हाँ, ऐसा ही समझ ले कि मेरे हिस्से मे ही कोई लड़की नहीं पड़ सकी प्रेम करने के लिए ।

मंगल – लेकिन मेता बाबू, आप क्यों पीछे रह गए ? शायद और लडके आगे दौड गए और आप पहुँच न सके और जब पहुँचे

तो देखा अपने लिए एक भी लड़की नही बची ।

मेहता – तो क्या लड़कियो के लिए दौड़ लगाई जाती है कि जो पीछे रह जाने वाले लड़कों के हाथ कोई लड़की नही आती । वाह रे तेरी समझ ।

मंगल – मैं तो मूरख और अपढ ठहरा मेता बाबू । छोकरी पाने के लिए दौड़ नही लगानी पड़नी तो फिर क्या करना पड़ता है । कुछ हुनर होगा छोकरी पाने का ?

मेहता – हां हां, हुनर की तो जरूरत होती ही है । बिना हुनर के क्या कोई प्रेम पा सकता है ।

मंगल – तो मेता बाबू, आप में वह हुनर नही है ?

मेहता – (चिढ़कर) हां हां, नही है । मैं तो मूर्ख हूँ बस । तभी तो मेरे लिए कोई छोकरी नही मिल सकी ।

मंगल – तो मेता बाबू, एक बात मेरी मानो । आप मे वह हुनर नही है तो आप खन्ना बाबू से क्यों नही सीख लेते ?

मेहता – चल पागल । मुझे इस हुनर की आवश्यकता ही नही है ?

मंगल – (आश्चर्य से) आवश्यकता नही है । फिर तो गजब है मेता बाबू । इस उमर मे ऐसी बात करते हैं आप । इस उमर में आवश्यकता नही है तो क्या बुढ़ापे मे आवश्यकता पड़ेगी ?

मेहता – (चिढ़कर) बस अब तेरी बकवास बन्द कर और अन्दर जाकर अपना काम देख ।

मंगल – अच्छा बावूजी, जैसा आपका हुकुम । आप नाराज न हों । (जाता है ।)

मेहता – बदमाश कही का ।

(वर्मा का प्रवेश । सुन्दर नवयुवक । सूट में है ।)

वर्मा – किसे बदमाश कह रहे हो मेहता ?......और हमारे राइव्हल मि० खन्ना कहां हैं ?

मेहता – तो क्या तुम्हें खन्ना बाबू नहीं मिले ? अरे वह तो तुम्हारी ओर ही गए थे ।

वर्मा – मेरी ओर ? क्या मुझे बुलाने ?

मेहता – नहीं नहीं, रागिनी को बुलाने । मालूम नहीं वह अबतक क्यों नहीं आई ?

वर्मा – रागिनी के बारे मे आज आखरी फैसला हो जाएगा मेहता । मैं नहीं चाहता कि एक पटरी पर दो गाड़ियाँ दौड़ें ।

मेहता – और आगे चलकर आपस में एक्सीडेंट हो जाए कि दोनों गाडियां पटरी से नीचे । तुम्हारा क्या ख्याल बोलता है ? क्या रागिनी तुम्हारे गले में माला डाल देगी ?

वर्मा – मेरे गले मे नहीं डालेगी तो क्या इस खन्ना के बच्चे के गले मै माला डालेगी ? खन्ना कितना मूर्ख है रागिनी बहुत अच्छी तरह से जानती है ।

मेहता – पर रागिनी खन्ना के साथ हमेशा रेस्तरों में और सिनेमा आदि को जाती रहती हैं ।

वर्मा – खन्ना को मूर्ख बनाती है । और खन्ना है भी इतना मूर्ख कि उस पर पानी जैसा पैसा बहाता रहता है ।

मेहता – और तुम क्या कम खर्च करते हो उस पर । परसों ही साल गिरह पर तुमने उसे चार सौ रुपये की एक बनारसी साड़ी भेंट की थी ।

वर्मा – तो फिर उसमे हानि या फालतू खर्च का सवाल कहाँ जाता है । वह साड़ी आखिर रहेगी तो मेरी ही रागिनी के पास । उल्टे खन्ना नुकसान मे रहेगा । उसने नेकलेस जो प्रजेंट किया था ।

मेहता – आप लोग यह कितना खर्च कर देते हैं फालतू । क्या आपके घर के लोग पूछते नहीं कि इतना पैसा किन बातों में खर्च करते हो ।

वर्मा – हमारे घर के लोगों से मतलब हमारे पिताओं से ही है न। अरे वे लोग भी तो कालेजो में पढ़े हैं तभी तो वकील और इन्जिनियर बने। अपने अनुभवों से उन्हें सब कुछ समझ में आ जाता होगा।

मेहता – घर से दूर यहाँ होस्टल मे रहते हो इस लिए मजे हैं तुम लोगों के। पूरी पूरी आजादी है। अच्छा वर्मा, यह तो बताओ तुमको रागिनी से ही प्रेम क्यों है ?

वर्मा – यह भी कोई सवाल में सवाल है। जो चीज की जाती है उसका कारण तो दिया जा सकता है, लेकिन जो हो जाए–अपने आप ही, उसका क्या कारण दिया जाए ? यह तो तुम जानते हो प्रेम किया नही जाता, हो जाता है।

मेहता – मुझे यह समझ मे नही आता कि एक ही लड़की पर दो चार क्या उससे भी ज्यादा लड़कों का प्रेम कैसे हो जाता है जबकि कुछ लडकियाँ ऐसी ही रह जाती हैं। उनकी ओर कोई भूल से भी नहीं देखता।

वर्मा – प्रेम के बारे में चर्चा करना मैं नही जानता मेहता। सिर्फ प्रेम करना मैं जानता हूं। और फिर तुम्हारा सवाल इसी तरह बेहूदा है जैसे कोई पूछे—सूरज पूरब में ही क्यो उगता है पश्चिम में क्यो नही ?

मेहता – सुन्दर लड़की पर सभी जान देने को तैयार हो जाते हैं। मैं कहता हूँ प्रेम यदि हो ही जाता है, वह एक स्वाभाविक धर्म है तो वह किसी काली, बदसूरत लड़की से क्यों नही होता ?

वर्मा – इसका जवाब न तो मेरे पास है और न मैं इसके बारे में कुछ सोचना ही चाहता। जिसके पास हरी भरी, सुहावनी उपजाऊ जमीन हो वह ऊबड़खाबड़ और बंजर जमीन के बारे मे विचार नही करता।

मेहता – न मालूम यह हरीभरी जमीन तुम्हारी होकर रहेगी या खन्ना को मिलेगी ।

वर्मा – खन्ना को यदि रागिनी मिल गई तो मैं खुदकशी कर लूँगा ।

मेहता – पिछले वर्ष यही बात तुमने बिमला के बारे में कही थी । बिमला बी० ए० होकर कालेज छोड़ गई । एक प्रोफेसर से उसकी शादी भी हो गई । तुमने उसी समय खुदकशी कर ली नही ? इस समय तुम बहिश्त में से तो बात नही कर रहे हो ?

मेहता – हम जैसे नौजवानों के लिए बहिश्त इसी धरती पर है, वहाँ—दूसरी ऊपर वाली दुनियाँ मे नही । तुम नही जानते । मैंने खुद होकर बिमला से कहा था—तुम उस प्रोफेसर से शादी कर लो । उसकी जिन्दगी हरी-भरी हो जाएगी । मेरी बात मत सोचो मैं तो किसी तरह जी लूँगा ।

मेहता – और तुम जैसी किसी दूसरी लड़की पर डोरे डालना शुरू कर दूँगा । वाह रे परोपकारी जीव । वर्मा, यदि तुम इतने परोपकारी हो तो रागिनी खन्ना के लिए क्यों नही दे डालते ? उन दोनो के रास्ते से क्यों नही हट जाते ?

वर्मा – मैं तो हट जाऊँ । पर मैं चाहता हूँ कि मेरे जैसे परोप-कारियों की संख्या बढ़े । इसीलिए मैं खन्ना से यही बात कराना चाहता हूँ जो मैंने उस बार विमला को लेकर की थी ।

मेहता – यह रागिनी हमारे होस्टल के वार्डन की ही तो लड़की है ।

वर्मा – तो तुम भी सब लड़कियों के अते-पते रखते हो । क्या तुम भी उम्मीदवारों में से हो ?

मेहता – नही । मेरी क्या हैमियत है जो किसी लड़की से प्रेम कर सकूँ । प्रेम के मामले में पहले पैसे की आवश्यकता होती है बाद मे दिल की । और लड़कियां भी दिल नहीं पहले पैसा ही देखती हैं । मैं तो रागिनी के बाद मे इसलिए पूछताछ कर रहा था कि उसका पिता तो बड़ा सख्त आदमी है ।

वर्मा – हां, सख्त तो है होस्टल के वार्डन प्रायः सख्त ही हुआ करते हैं । आखिर पैसा उन्हें किस बात का मिलता है । इसी बात का कि वे सख्त बने रहें । वरना ये वार्डन लोग होते हैं बेवकूफ ही ।

मेहता – तो क्या अपने वार्डन बेवकुप हैं ?

वर्मा – नही, तो क्या बड़े होशियार, चतुर और समझदार हैं । यदि ऐसे होते तो उनकी ही लड़की उन्हे बेवकूफ बनाती ? हम लोगों के साथ घूमती फिरती ?

मेहता – यदि उसे मालूम पड़ जाए कि तुम लोग उसकी लड़की से प्रेम करते हो और उससे शादी करना चाहते हो तो वह तुम दोनों को होस्टल से तो निकलवा ही दे, कालेज से भी रस्टिकेट करवा देगा ।

(खन्ना का प्रवेश)

वर्मा – कहां मर गये थे तुम ? हम कब से तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं । और यहां इंतजाम यह ऐसा है कि न चाय है न नाश्ता ।

खन्ना – सब कुछ तैयार है । तुम व्यर्थ खफा हो रहे हो । देर मैंने नही, तुमने की है । पूछो इस मेहता से ।

मेहता - हां भाई वर्मा ।

खन्ना – मंगल, अरे मंगल—

मंगल – (अन्दर से ही) आया बाबूजी ।

खन्ना – चाय नाश्ता ले आ।

मंगल – (अन्दर से ही) लाया बाबूजी।

(सभी सोफे पर बैठते हैं)

वर्मा – रागिनी कहाँ है ?

खन्ना – वह आ रही है। रास्ते में एक सहेली मिल गई उसे ।

वर्मा – तो चाय उसके आने पर ही लेंगे।

खन्ना – तो उसके आने पर लेना। मंगल, चाय, नाश्ता अभी रहने दे।

मंगल – (प्रवेश करके। हाथ में ट्रे है।) पर बाबूजी, मैं तो ले आया।

मेहता – मगल, यहाँ लाकर रख दे ट्रे । मेरे सामने। मैं ले लूँगा चाय। ये लोग रागिनी के आने पर लेंगे ।

(मंगल ट्रे एक टी टेबल पर रखता है और जाता है)

वर्मा – तो मैं भी ले लेता हूँ।

खन्ना – वर्मा यदि तुम रागिनी के आने तक इन्तजार नही कर सकते थे तो फिर पहले मना क्यों किया ?

वर्मा – (चाय पीता हुआ) मेरी खुशी। इसमें दखल देने वाले तुम कौन हो ? रागिनी और मेरे मामले मे तुम्हें बोलने का कोई अधिकार नही।

खन्ना – इसका फैसला तो अभी हुआ जाता है। तुम दोनों के मामले मे मुझे बोलने का अधिकार नही है या हम दोनो के मामले में तुम्हे बोलने का अधिकार नहीं है ।

वर्मा – रागिनी इतनी बेवकूफ नही है कि तुम जैसे फूहड़ के गले में माला डाल दे।

मेहता – वर्मा, तुम लड़ते भी जाओ और इधर नाश्ता भी करते जाओ।

वर्मा – चुप रहो मेहता। क्या मैं लड़ रहा हूँ ?

मेहता – (टोस्ट खाते हुए) नही नही तुम बड़ी सुलह की बातें कर रहे हो खन्ना से। किये जाओ, इसी तरह किए जाओ बातें। इधर मैं इस मामले को निपट लेता हूँ।

वर्मा – (खन्ना से) हम दोनों के मामले में विलन बने तो नतीजा बहुत बुरा भुगतना होगा तुम्हे खन्ना।

खन्ना – विलन मैं हूँ या तुम ? जरा जबान संभालकर बात करो।

वर्मा – मैं तो सब कुछ संभालकर बात कर रहा हूं। तुम ही अपना भेजा ठिकाने रखकर बात करो।

खन्ना – रागिनी बस मेरी है और मेरी होकर रहेगी अभी रास्ते में स्वयं मुझसे बोली।

वर्मा – तुमसे बोली खाक। तुमसे पहले उसने मुझसे कहा है कि शादी करूँगी तो बस तुमसे ही। खन्ना तो मूर्ख है।

खन्ना – उसने मुझसे भी यही बात कही—शादी करूँगी तो तुमसे ही। वर्मा तो मूर्ख है।

वर्मा – बातें मत बनाओ। हम दोनो में से मूर्ख कौन है इसका फैसला तो अभी रागिनी के आने पर हो जाएगा।

मेहता – मैं कहता हूं जिस बात का फैसला रागिनी को करना है तो तुम लोग क्यो व्यर्थ लड़ रहे हो ?

वर्मा – लड़ कौन रहा है तुम या मैं ?

खन्ना – तमीज बात करने की नही हैं और शादी करने चले हो रागिनी से। कभी आइने मे चेहरा देखा था ?

वर्मा – मैंने आइने में चेहरा देखा था या नही देखा था, मुझे तमीज है या नही मैं नही जानता। लेकिन रागिनी ने मेरा चेहरा जरूर अच्छी तरह देखा है। मेरी तमीज के बारे मे भी वह अच्छी तरह जानती है। तभी तो वह मुझसे शादी करने के लिए राजी हुई है।

खन्ना – शादी वह तुम्हारे साथ नही मेरे साथ करने के लिए

राजी हुई है ।

मेहता – मालूम होता है तुम दोनों का मामला आज बिना हाथा-पाई हुए तय नहीं हो सकता ।

वर्मा – मैं तो हाथापाई के लिए भी राजी हूँ । अपने कायर खन्ना को ही राजी कर लो ।

खन्ना – किसे कायर कहते हो । जरा उठकर इधर मैदान में आओ । तब पता चले कौन कायर है और कौन बहादुर ।

वर्मा – (उठकर खन्ना के पास जाता है) लो आया मैदान में । कर लो क्या करना चाहते हो । जंग लड़ना चाहते हो ?

मेहता – मालूम होता है, अब यहाँ तुम दोनों मे से किसी एक की मौत आ गई है । मैं ऐसे मामलों से डरता हूँ । मुझे तो इजाजत दो खन्ना बाबू । (उठकर जाने को होता है ।)

वर्मा – (उसकी बाँह पकड़ कर) कहाँ भागता है रे डरपोक । चल बैठ यहाँ । हम दोनों की जंग में अंपायर का काम कर । और यह याद रख अगर कहीं बीच जंग में भाग गया तो जान ले डालूगा ।

मेहता – अरे बाप रे, कहाँ आकर फँसा ।

वर्मा – तो क्या चाय और नाश्ते पर हाथ साफ करने आए थे ! लो हाथ मे हथियार खन्ना । कौन सा हथियार लेना चाहते हो ।

खन्ना – मेरा कमरा कोई शस्त्रागार है जो यहाँ कोई हथियार मिल जाए ।

वर्मा – (खन्ना का हाथ झटके से अपने हाथ में पकड़कर) तो ले लो जो भी चीज मिल जाए ।

खन्ना – ठीक है । (कोने में रखी एक कुर्सी उठाता है ।)

(वर्मा टी-टेबल उठाता है । दोनों एक दूसरे पर गुर्राते हैं, उसी समय धोती कुरता पहने वार्डन का प्रवेश)

मेहता – (वार्डन को देखकर डरकर) अरे बाप रे वार्डन। (बाहर चला जाता है।)

(इधर वार्डन को देखते ही खन्ना और वर्मा उठाई हुई चीजें नीचे रख देते हैं और एकदम एक साथ बोल उठते हैं--सर आप ?)

वार्डन – हाँ मैं। ये क्या बेहूदगी चल रही है तब से। मैं बगल के कमरे से सब कुछ सुन रहा था। वहाँ बीमार प्रसाद की तबियत के बारे में पूछने आया था। तुम्हें इस तरह बातें करते और लड़ते शरम नहीं आती ?

खन्ना – लेकिन सर, हम लोग तो......

वार्डन – चुप रहो। मुझे किसी सफाई की आवश्यकता नहीं है। तुम में से खन्ना कौन है, वर्मा कौन है, मेहता और मंगल कौन है ? वह अभी भाग गया वह इनमें से कौन था।

खन्ना – सर, हम में से खन्ना, वर्मा, मेहता आदि कोई नहीं है।

वार्डन – तुम लोगों को मेरी लड़की के बारे में बेहूदा बातें करते शर्म नहीं आती ?

वर्मा – पर सर, हम लोगों ने बेहूदा बात तो कोई नहीं की।

वार्डन – बस चुप रहो। मैं तुम चारों की पूरी रिपोर्ट तैयार करके प्रिंसिपल साहब के पास भेज रहा हूँ। प्रिंसिपल साहब के द्वारा आज तुम सब रस्टिकेट किए जाओगे।

वर्मा – सर सर, यदि ऐसा हुआ तो गजब हो जाएगा।

वार्डन – मूर्खो, मेरी रागिनी से प्रेम करके तुम समझते हो ऐसे ही छूट जाओगे ?

खन्ना – सर, हम प्रेम नहीं, हम तो ड्रेस-रिहर्सल कर रहे थे।

वार्डन – तो क्या प्रेम की भी ड्रेस-रिहर्सल होती है ? मुझे बेवकूफ न बनाओ।

वर्मा – नहीं सर। हम प्रेम की नहीं, कालेज के ड्रामे के

नाटक की ग्रैन्ड–रिहर्सल कर रहे थे ।

मंगल – (प्रवेश करके) हां सर । और यह देखिए यह नाटक रहा । अपने ही कालेज के प्रोफेसर शर्मा ने लिखा है । मैं अन्दर से प्रॉम्टिंग कर रहा था ।

वर्मा – और मंगल नामक नौकर का काम भी ।

वार्डन – तो नाटक की रिहर्सल है ये । मूर्खो, तो यह बात तुम लोगों ने मुझे पहले क्यों नहीं बतलाई । तुम लोग इस तरह पार्ट कर रहे थे कि सब बातें बिलकुल हूबहू लग रही थी । लेकिन प्रोफेसर शर्मा ने मेरी ही बेटी का नाम क्यों दिया नाटक की हीरोइन को ?

खन्ना – वे कालेज में इसी वर्ष तो आए हैं वे नही जानते हैं कि यह आपकी पुत्री का नाम है ।

मंगल – और हम मे से भी किसी को नही मालूम था । हम नाटक की हीरोइन का नाम बदल डालेंगे सर ।

खन्ना – हां । हमे क्या जैसी रागिनी वैसी पद्मिनी या रुक्मिनी———

वर्मा – हाँ, हमें तो किसी भी लडकी से प्रेम करना ।

वार्डन – ठीक है, ठीक है । खूब प्रेम किए जाओ, मुझे कोई एतराज नही है । (जाता है)

खन्ना – सब रंग मे भंग कर दिया इस वार्डन के बच्चे ने बीच मे ही आकर ।

वर्मा – हाँ कितना नेचुरल रिहर्सल था ।

खन्ना – रिहर्सल आगे चालू करें । हाँ, हमारे एक दूसरे पर गुर्राने के बीच मे ही रागिनी या पद्मिनी का प्रवेश है । हाँ, उसका प्रवेश होने दो अब ।

मेहता – (प्रवेश करके) लेकिन रागिनी का काम करने वाली निर्मला तो वार्डन की आवाज सुनते ही भाग खड़ी हुई ।

मंगल – इस वार्डन की नानी मर जाए । सारो मजो किरकिरो

कर दयो । अब रागिनी ही नहीं है तो क्या मजा रहा रिहर्सल में ।

खन्ना – बात तो सही है मंगल । इसलिए आज की रिहर्सल यहीं समाप्त । (ऊपर देखकर) परदा गिरा दो भाई । मंगल ने आज यहाँ परदा भी लगा दिया था । (परदा गिरने को होता है ।)

वर्मा – लेकिन कल हम सब इसी समय फिर एकत्र होंगे ।

खन्ना – और रागिनी या पद्मिनी को ले आने का जिम्मा मेरा ।

वर्मा – नहीं, तुम्हारा नहीं मेरा ।

मंगल – यह क्यों भूल जाते हैं आप लोग कि ये काम नौकरों के होते हैं ।

मेहता – ओह, तो तुम भी मजनूं हो ।

(सभी हँसते हैं । पूरा परदा गिरता है ।)

इंटरव्यू की तैयारी

पात्र

सेठजी, बंसी,
सेठानी

सेठजी (डायल पर नंबर घुमा लेने के बाद)–हेलो, हेलो···कौन मुनीमजी ?···देखो मुनीमजी, आज मैं दूकान पर नहीं आ रहा हूँ।··कालेज जाना है।··· हां।··· और देखो, मेहता एन्ड कम्पनी से आज दस हजार की रकम आनी है। उन्हे फोन से याद दिला देना।··· क्या गोपाल सेठ के पैसे ? भिजवाने की क्या जल्दी है। सिर्फ ढाई हजार ही तो हैं। कल मैं दूकान पर आऊँगा तो देख लूँगा। हेलो··· हमारी बिल्डिंग नंबर ९ का २५ नं० का किराएदार छत टपकने की शिकायत कर रहा था।···वह आए तो समझा बुझा देना। नहीं भाई, मरम्मत की नहीं कह रहा हूं। समझा बुझा देना–थोड़ा बहुत तो टपकता ही रहता है।·· हेलो · और देखो, हमारे गुदाम नं० ७ के ९१ बोरे गुदाम नं॰ १३ में पहुँचने हैं।·· क्यो अपना ट्रक खाली नही है क्या ? चावल के नही गेहू के। चावल का स्टाक उस गुदाम में कहां। उसका तो एक अलग ही गुदाम है। भूल रहे हो क्या ?··· मैं अपनी गाडी दूकान पर भिजवा दूँ ? क्यो ? लल्लू की गाड़ी क्या हुई ?·· वह कभी का निकला है घर से। अब तक उसे वहां पहुँच जाना चाहिए। ·· नही, मुझे मेरी गाड़ी कालेज जाने के लिए लगेगी।··· वहां आज मुझे इंटरव्यू लेने जाना है।··· हेलो··· देखो, कोई खास बात हो तो मुझे फौरन इत्तला करना। ११ बजे के बाद कालेज फोन करना। (चोगा रखते हैं।) अरे बंसी, ओ बंसी·· अरे कहाँ मर गया यह। ओ बंसी···

सेठानी – (आते हुए) –अजी क्यो चिल्ला रहे हो ?

सेठजी – यह बंसी का बच्चा कहां मर गया ?

सेठानी – कही नही मरा। अच्छा खासा जिंदा है नीचे। तुम्हारे जूतों पर पालिस कर रहा है। तुम्ही ने तो अभी अभी कहा

पालिश करने के लिए और भूल गए।

सेठजी – क्या करूँ। इस इंटरव्यू के चक्कर ने तो मेरी याददास्त ही खराब कर दी है। वह जाकर धोबी के यहां से कपड़े ले आया या नहीं ?

सेठानी – ले आएगा। तुम तो उठे हो तभी से गजब की जल्दी मचा रहे हो। अभी तो सिर्फ आठ बजे हैं।

सेठजी – वह तो ठीक। लेकिन धोबियों का क्या भरोसा। ऐन वक्त पर कह दें –कपड़े तो अभी घाट पर पड़े हुए हैं।

सेठानी – तो क्या दूसरे धुले कपड़े नहीं हैं पहनने के लिए ?

सेठजी – अरे, ये मैंने खास टिनोपाल से धोने के लिए कहे हैं।

सेठानी – गजब की बात है। कपड़ों की चिंता उम्मीदवारों को होनी चाहिए या तुम्हे ?

सेठजी – अरे, तुम नहीं जानतीं। इंटरव्यू देने के लिए दूर-दूर के उम्मीदवार आ रहे हैं। वे जरा देखें तो कॉलेज की कमेटी का अध्यक्ष ऐसावैसा आदमी नहीं है।

सेठानी – अपने कारोबार के काम को छोड़कर तुम शहर की कमेटियों और सोसाइटियों के चक्कर में क्यों पड़े रहते हो ?

सेठजी – अब कारोबार की देखभाल के लिए अपना लल्लू जो है।

सेठानी – इतना बड़ा कारोबार अकेले बेचारे लल्लू पर ?

सेठजी – लल्लू कौन अब छोटा है। अच्छा दो बच्चों का बाप है। लेकिन मां को तो अपना बच्चा हमेशा छोटा ही लगता है।

सेठानी – लेकिन ये कमेटियां और सोसाइटियां तुम्हें क्या दे देती हैं जो तुम इनके पीछे पागल बने फिरते हो ?

सेठजी – तुम नहीं जान पाओगी लल्लू की मां। इनमें रहकर जो प्रतिष्ठा मिलती है वह हम जैसे लोगों के लिए और कहां। और फिर अध्यक्ष की शान ही निराली होती है। अच्छे-अच्छे पढ़ेलिखे लोग भी उसकी जीहुजूरी में रहते हैं।

बंसी – (आकर) मालिक, पालिस हो गया।

सेठजी – ठीक है। अब तू दौड़कर जा और चन्दू धोबी के यहाँ से मेरे कपड़े ले आ। देख लेना कलफ उसने जरा कड़क लगाया है या नहीं। (दीवार पर टँगे आइने के सामने जाते हैं।)

बंसी – जी, यह चला। (जाता है।)

सेठानी – दाढ़ी तो सुबह ही सुबह नाई आकर बना गया। उसमे तीन तीन बार उल्टा सीधा उस्तरा फिरवा चुके हो। अब आइने के सामने खड़े क्या कर रहे हो ?

सेठजी – मूछों को खिजाब लगा रहा हूँ।

सेठानी – खिजाब ?

सेठजी – उन पर की सफेदी मिटाने के लिए।

सेठानी – क्यों ? उलटे, सफेदी से तो रोब जमता है।

सेठजी – लल्लू की माँ, कैसे कहूं। कभी-कभी सफेदी रोब को कालिमा लगा देती है।

सेठानी – क्यों ? क्या उम्मीदवारों मे लड़कियाँ भी हैं ?

सेठजी – हाँ। प्रिंसीपल ने बतलाया था चार-पाँच लड़कियां भी हैं।

सेठानी – तभी मैं कहूँ, आज सुबह से ही कपड़ों का, बदन का इतना ख्याल क्यों किया जा रहा है। आज नहाने में भी तुमने करीब एक घंटा बिताया है।

सेठजी – अच्छा, टेबल पर की वे किताबें इधर दो।

सेठानी – खिजाब लगा चुके ?···अब क्या फिर पढ़ने को बैठोगे ?

सेठजी – हाँ, पढ़े बिना काम कैसे चलेगा ?

सेठानी – इन दो किताबों को तुम आज चार दिन से बराबर पढ़ रहे हो, फिर की अभी पढ़ना बाकी ही है।

सेठजी – सिर्फ पढ़ने की ही तो बात नहीं है। उनमे दी हुई बातें याद करने की हैं।

सेठानी – तुम्हे इंटरव्यू देने नहीं लेने जाना है।

सेठानी – कौन सा इतिहास पढ़ रहे थे ?

सेठजी – भारत का इतिहास । हमारा इतिहास भी बड़ा अजीब है। चंद्रगुप्त नाम के तीन तीन राजा हो गए है। चार-चार बार पढ़ चुका लेकिन कौन बात किस चंद्रगुप्त के समय में हुई यही ध्यान में नही रहता ।

सेठानी – तुमसे तो एक ही जैसी लगने वाली चावल और गेहूँ की किस्में पूछ लो। फौरन अलग-अलग करके नाम बतला दोगे । इतिहास तुम्हारे बूते का काम नहीं है। अपने लल्लू के बेटे को मास्टर जी पढाने आते हैं उनसे इतिहास की कुंजी क्यों नही मंगवा ली ? कुंजी से कहते हैं आसानी से समझ में आ जाता है।

सेठजी – खाक समझ में आता है। मैं कुंजियों से ही तो पढ़ रहा हूँ। फिर भी कुछ पल्ले नही पड़ रहा है। न भारत का इतिहास, न साहित्य का इतिहास ।

सेठानी – तो कुंजियों की कुंजियां भी तो निकलती होगी ।

सेठजी – मैं इन चार दिनों से सोच रहा हूँ कि देश का इतिहास लिखने की बात तो समझ में आती है, लेकिन यह साहित्य का इतिहास क्यों लिखा जाता है ।

सेठानी – साहित्य क्या होता है जी ?

सेठजी – साहित्य··· साहित्य न । साहित्य वह होता है जिसे हम पढ़ते हैं जिसे सिर्फ पढ़ते ही हैं और वह भी भूल जाने के लिए, इतिहास की तरह याद रखने के लिए नही ।

सेठानी - फिर पढ़ते ही क्यो हैं ? मेरी तो खाक समझ में नही आया ।

सेठजी – मैं तुम्हारा सवाल उम्मीदवारों से करूँगा और फिर लौटकर तुम्हें समझाऊँगा । तुमने महादेवी का नाम सुना है ?

सेठानी – कौन सी देवी ? मैं तो महाकाली को जानती हूँ। जवाहर

सेठजी – यह तो मैं जानता हूँ। लेकिन जब तक इन किताबों में दिया हुआ मजबून याद न रखूँ तबतक मैं उम्मीदवारों से सवाल कैसे कर सकूँगा ? उम्मीदवार भी कोई हलकेफुलके नहीं है। कुछ कुछ तो डी एच० पी० भी हैं। " नहीं नहीं, डी एच० पी० नही, पीएच० डी० हैं। ये डिगरियाँ बड़ी भारी भारी होती हैं।

सेठानी – उन भारी डिगरीवालो से फिर भी सवाल पूछने की जरूरत रह ही जाती है ?

सेठजी - उनकी नालिज जानने के लिए नहीं, यह रोब गालिब करने के लिए कि हमे भी तुम्हारे विषय का ज्ञान है।

सेठानी – ये किताबें किन विषयो की हैं ?

सेठजी – एक है भारत के इतिहास की, दूसरी है साहित्य के इतिहास की।

सेठानी – क्या तुमने इन्हे अपनी जमातो मे नही पढ़ा था ?

सेठजी – भारत का इतिहास जरूर पढ़ा था। साहित्य का इतिहास हमारी छठी जमात में भी नही पढाया गया था।

सेठानी – सातवी मे भी नही पढ़ाया जाता ?

सेठजी – किसे पता। मैंने तो छठी जमात में दो बार फेल हो जाने के बाद ही पढना छोड़ दिया था।

सेठानी – भारत का इतिहास तो मैं भी कुछ कुछ जानती हूँ। राणा प्रताप, अकबर, शिवाजी वगैरों के बारे मे पढ़ाया जाता है इसमे। लेकिन यह साहित्य का इतिहास क्या बला है ?

सेठजी – यह तो मैं भी आज चार दिनों से बारबार पढकर भी नही समझ पा रहा हूँ।

सेठानी – कल रात तो तुम कोई दो बजे तक पढते रहे।

सेठजी – हाँ। इस तरह तो मैंने अपनी परीक्षाओं के समय भी नही पढ़ा था।

सेठानी – कौन सा इतिहास पढ़ रहे थे ?

सेठजी – भारत का इतिहास । हमारा इतिहास भी बड़ा अजीब है । चंद्रगुप्त नाम के तीन तीन राजा हो गए हैं। चार-चार बार पढ़ चुका लेकिन कौन बात किस चंद्रगुप्त के समय में हुई यही ध्यान में नही रहता ।

सेठानी – तुमसे तो एक ही जैसी लगने वाली चावल और गेहूँ की किस्में पूछ लो। फौरन अलग-अलग करके नाम बतला दोगे । इतिहास तुम्हारे बूते का काम नही है । अपने लल्लू के बेटे को मास्टर जी पढ़ाने आते हैं उनसे इतिहास की कुंजी क्यो नही मंगवा ली ? कुंजी से कहते हैं आसानी से समझ में आ जाता है।

सेठजी – खाक समझ मे आता है । मैं कुंजियों से ही तो पढ़ रहा हूं । फिर भी कुछ पल्ले नही पड़ रहा है । न भारत का इतिहास, न साहित्य का इतिहास ।

सेठानी – तो कुंजियों की कुंजियां भी तो निकलती होंगी ।

सेठजी – मैं इन चार दिनों से सोच रहा हूँ कि देश का इतिहास लिखने की बात तो समझ में आती है, लेकिन यह साहित्य का इतिहास क्यो लिखा जाता है ।

सेठानी – साहित्य क्या होता है जी ?

सेठजी – साहित्य··· साहित्य न । साहित्य वह होता है जिसे हम पढ़ते हैं जिसे सिर्फ पढ़ते ही हैं और वह भी भूल जाने के लिए, इतिहास की तरह याद रखने के लिए नही ।

सेठानी – फिर पढ़ते ही क्यो हैं ? मेरी तो खाक समझ मे नही आया ।

सेठजी – मैं तुम्हारा सवाल उम्मीदवारों से करूंगा और फिर लौटकर तुम्हें समझाऊँगा । तुमने महादेवी का नाम सुना है ?

सेठानी – कौन सी देवी ? मैं तो महाकाली को जानती हूं । जवाहर

चौराहे पर ही तो उनका मंदिर है ?

सेठजी – अरे महाकाली नहीं । मैं महादेवी के बारे में पूछ रहा हूं ।

सेठानी – क्या यह महाकाली से भी बड़ी है ?

सेठजी – यह तो मैं नहीं जानता । लेकिन साहित्य के इतिहास में इसका नाम है । कविता करती है । प्रसाद का नाम सुना है ?

सेठानी – किस देवता के प्रसाद के बारे मे पूछ रहे हो ?

सेठजी – देवता के प्रसाद के बारे में नहीं; साहित्य के प्रसाद के बारे में पूछ रहा हूं । महादेवी की तरह इन्होंने भी कवितायें की हैं । सुनो, इन्होने बहुत सी किताबें लिखी हैं । कविता की तरह नाटक की, कहानी की और उपन्यास की । हिन्दी साहित्य के इतिहास में इनका बड़ा नाम है ।

सेठानी – इतिहासों में तो सिर्फ राजाओं के नाम होते हैं । अब किताब लिखने वालों के नाम भी उसमें आने लगे ?

सेठजी – अरी पगली इनका नाम देश के इतिहास मे नहीं साहित्य के इतिहास में लिखा जाता है ।

सेठानी – होगा जी । मुझे इन बातों से क्या करना है ।

सेठजी – बुरा मान गईं । लेकिन सच कहूं । मुझे भी ये सारी बातें कहां मालूम थीं । न महादेवी को जानता था न प्रसाद को । यह तक नही जानता था कि इनके इतिहास भी लिखे जाते हैं ।

सेठानी – और जानने की जरूरत भी क्या है । न जानकर हमारा क्या नुकसान हुआ है ? बिल्डिगों, गुदामों और मोटरों मे कमी थोड़े ही पड़ गई है ?

सेठजी – और जो जानते है वे २०० रुपये की नौकरी के लिए आज इन्टरव्यू देने आ रहे हैं । अच्छा, अब कुछ ही देर में दस बजने को हैं । खाना तो तैयार है न ? ११ को

ठीक पन्द्रह मिनट पहले मैं कालेज में दाखिल हो जाऊँगा ।

सेठानी – खाना तो तैयार हो गया है अब तक । कहो तो परोसने के लिए कह दूँ ?

सेठजी – खाने के पहले मैं सोचता हूँ इन्टरव्यू लेने की ट्रायल कर लूँ ।

सेठानी – ट्रायल ?

सेठजी – मतलब, उम्मीदवारों से किस प्रकार सवाल पूछूँगा इसका प्रत्यक्ष अभ्यास कर लूँ ।

सेठानी – यह कैसे करोगे ?

सेठजी – मैं यहाँ मेज के सामने कुर्सी पर बैठता हूँ । एक कुर्सी मेज के दूसरी ओर रखता हूँ । यह उम्मीदवार के लिए होगी ।

सेठानी – मगर उम्मीदवार ?

सेठजी – उम्मीदवार तुम बनोगी ?

सेठानी – मैं ? मुझे कहाँ की नौकरी करनी है ?

सेठजी – सिर्फ तुम्हें नाटक करना है । मैं जब कहूँ चपरासी उम्मीदवार को भेजो, तो तुम अन्दर वाले कमरे में से इधर आना और मुझे प्रणाम करके इस कुर्सी पर बैठ जाना ।

सेठानी – और इसके बाद में क्या करूँ ?

सेठजी – मैं जो सवाल पूछूँगा उसके जवाब दोगी । जवाब तुम कुछ भी दो । ट्रायल तो मुझे अपनी करनी है ।

सेठानी – अच्छा तो मैं जाती हूँ अन्दर वाले कमरे में । (जाती है)

सेठजी – (कुर्सियाँ इधर उधर रख लेने के बाद) हाँ, चपरासी, उम्मीदवार को अन्दर भेजो । (सेठानी अन्दर आती हैं ।) हाँ, इस कुर्सी पर बैठो ।

सेठानी – जी । (बैठती है ।)

सेठजी – हाँ, तो तुम्हारा नाम ?

चौराहे पर ही तो उनका मंदिर है ?

सेठजी – अरे महाकाली नहीं । मैं महादेवी के बारे में पूछ रहा हूँ ।

सेठानी – क्या यह महाकाली से भी बड़ी है ?

सेठजी – यह तो मैं नहीं जानता । लेकिन साहित्य के इतिहास में इसका नाम है । कविता करती है । प्रसाद का नाम सुना है ?

सेठानी – किस देवता के प्रसाद के बारे में पूछ रहे हो ?

सेठजी – देवता के प्रसाद के बारे में नहीं; साहित्य के प्रसाद के बारे में पूछ रहा हूँ । महादेवी की तरह इन्होंने कवितायें की हैं । सुनो, इन्होंने बहुत सी [illegible] हैं । कविता की तरह नाटक की, [illegible] की । हिन्दी साहित्य के इतिहास [illegible]

सेठानी – आजकल बाजार में इसका भाव कोई ९० रुपये क्विन्टल चल रहा है।

सेठजी – और चावल का ?

सेठानी – लेकिन यह तुम गेहूं और चावल के बारे में क्या पूछने लगे ? तुम दूकान पर नहीं बैठे हो। इंटरव्यू कमेटी में बैठे हो।

सेठजी – ओह, मैं हेमू के बारे में पूछना चाहता था और पूछ बैठा गेहूं के बारे में और (बाप्पा) रावल के बारे मे पूछना चाहता था और पूछ बैठा चावल के बारे मे। ...... अच्छा, यह बतलाओ १८५७ का राष्ट्रीय आन्दोलन कब हुआ ?

सेठानी – देखो सवाल ठीक करो वरना उम्मीदवार तुम्हारी हँसी उड़ाएँगे।

सेठजी – अब तो बिलकुल ठीक सवाल किया है। बराबर इतिहास का सवाल है। गेहूं और चावल से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है।

सेठानी – सवाल जरा दुहराओ तो।

सेठजी – १८५७ का राष्ट्रीय आन्दोलन कब हुआ ?

सेठानी – (हँसती हुई) १८५७ में।

सेठजी – ओह, मेरा मतलब है कैसे हुआ, किन कारणो से हुआ ?

सेठानी – ऐसे सवाल हमें पांचवी छठी जमात मे पूछे जाते थे। ये कोई एम० ए० पास उम्मीदवारो से पूछने लायक सवाल हैं ? मेरा ख्याल है मुन्ने के मास्टर जी से तैयार करा लो कुछ अच्छे सवाल। वे मुन्ने को नीचे पढ़ा रहे हैं।

सेठजी – ठीक ऐसा ही करता हूँ। इन दोनों किताबो में से बड़े-बड़े सवाल निकलवा लेता हूँ।

सेठानी – वे सवाल निकालते हैं, तब तक तुम खाना खा लो।

सेठानी – नाम ? मेरा नाम यशोदाबाई ।

सेठजी – कितना अच्छा होता मिस यशोदा कहती । अच्छा, तुम कहाँ की रहने वाली हो ।

सेठानी – मैं, मैं बरेली की हूँ ।

सेठजी – अच्छा यह बताओ, तुमने किस डिगरी से यूनिवर्सिटी पाई है ?

सेठानी – यह तो मुझे नहीं मालूम ।

सेठजी – तुम एम० ए० हो । लेकिन यह तो बतलाओ तुमने बी० ए० पास किया है या नहीं ।

सेठानी – नहीं । मैं सिर्फ एम० ए० तक पढ़ी हूँ । बी० ए० नहीं किया ।

सेठजी – एम० ए० मे तुमने कितने विषय लिए थे । गणित और अंगरेजी तो जरूर लिया होगा ।

सेठानी – हाँ, क्यों नहीं । एम० ए० में मैंने कुल १२ विषय लिए थे १२ । एम० ए० की कोई छोटी मोटी परीक्षा तो है नहीं ।

सेठजी – तुमने भाषा की जगह के लिए दरखास्त दी है या इति-हास की जगह के लिए ?

सेठानी – आप जिस जगह के लिए योग्य समझें चुन लें ।

सेठजी – तुमने शुकलजी का इतिहास पढ़ा है ?

सेठानी – जी हाँ ।

सेठजी – बिहारी के बारे मे जानकारी दो ।

सेठानी – यह हमारे पड़ोसी के यहाँ का नोकर है ।

सेठजी – साकेत पर कुछ प्रकाश डाल सकती हो ?

सेठानी – नहीं । यह मेरा काम नहीं है । और फिर इस भवन में जो वर्मा जी रहते हैं वे स्वयं यह पसन्द न करें ।

सेठजी – अच्छा गेहूँ के बारे में कुछ जानकारी दो ।

सेठानी – आजकल बाजार में इसका भाव कोई ९० रुपये क्विन्टल चल रहा है ।

सेठजी – और चावल का ?

सेठानी – लेकिन यह तुम गेहूं और चावल के बारे में क्या पूछने लगे ? तुम दूकान पर नहीं बैठे हो । इंटरव्यू कमेटी में बैठे हो ।

सेठजी – ओह, मैं हेमू के बारे मे पूछना चाहता था और पूछ बैठा गेहूं के बारे में और (बाप्पा) रावल के बारे मे पूछना चाहता था और पूछ बैठा चावल के बारे में ।........ अच्छा, यह बतलाओ १८५७ का राष्ट्रीय आन्दोलन कब हुआ ?

सेठानी – देखो सवाल ठीक करो वरना उम्मीदवार तुम्हारी हँसी उड़ाएँगे ।

सेठजी – अब तो बिलकुल ठीक सवाल किया है । बराबर इतिहास का सवाल है । गेहूं और चावल से इसका कोई सम्बन्ध नही है ।

सेठानी – सवाल जरा दुहराओ तो ।

सेठजी – १८५७ का राष्ट्रीय आन्दोलन कब हुआ ?

सेठानी – (हँसती हुई) १८५७ में ।

सेठजी – ओह, मेरा मतलब है कैसे हुआ, किन कारणो से हुआ ?

सेठानी – ऐसे सवाल हमे पाँचवी छठी जमात मे पूछे जाते थे । ये कोई एम० ए० पास उम्मीदवारो से पूछने लायक सवाल है ? मेरा ख्याल है मुन्ने के मास्टर जी से तैयार करा लो कुछ अच्छे सवाल । वे मुन्ने को नीचे पढ़ा रहे हैं ।

सेठजी – ठीक ऐसा ही करता हूँ । इन दोनों किताबो में से बड़े-बड़े सवाल निकलवा लेता हूँ ।

सेठानी – वे सवाल निकालते हैं, तब तक तुम खाना खा लो ।

सेठजी – ठीक है। (इसी समय फोन की घंटी बजती है, चोंगा उठाकर) हलो .. .... कौन प्रिंसपल साहब ?........ क्यों १० बजे क्यों ? समय तो ११ का था न ?........ क्या उम्मीदवारों को दस का ही दिया था।... . ... लेकिन हम ११ मे काम शुरू करेंगे।. .... क्या, क्या बाहर के उम्मीदवार तीन की गाड़ी से लौट जाना चाहते हैं ..... लेकिन और सदस्य क्या १० बजे हाजिर हो जायेंगे ?.. ... ओह ! वे पहुँच भी गए हैं। अच्छा तो मैं अभी हाजिर होता हूँ दस मिनट में। (चोंगा रखते हैं)
लल्लू की माँ सवाल तो तैयार नही हैं और इधर इंटरव्यू दस से ही शुरू हो रहा है।

सेठानी – अरे तुम तो पसीना पसीना हुए जा रहे हो। घबराओ नही। धीरज से काम लो। नही सवाल तैयार हैं तो न हों। तुम्हे इंटरव्यू देना नहीं लेना है।

बंसी – (आकर) मालिक ये आपके कपडे। पालिस किए हुए जूते भी लेता आता हूँ। (जाता है।)

सेठानी – चलो मैं खाना परोस देती हूं।

सेठजी – नही खाना मैं लौटकर खाऊँगा। (कपड़े पहनने लगते हैं)

सेठानी – अजी नहीं, खाकर जाओ। वे लोग करेंगे इन्तजार। आखिर तुम अध्यक्ष हो।

सेठजी – वह तो ठीक है लेकिन मेरे गले के नीचे उतरेगा नही। (जाते हैं।)

सेठानी – ओह, चले गए। भगवान तुम्हें ठीक-ठीक सवाल करने की हिम्मत दे। (गाड़ी की आवाज होती है।) ओह, इंटरव्यू लेना भी कितना बड़ा काम होता है।

———

नहाने के बहाने

पात्र

अनोखेलाल

लक्ष्मी

(घड़ी में सुबह के दस बज रहे हैं।)

लक्ष्मी – मैं कहती हूँ नहा लो। दस बज गए हैं।

अनोखे – हाँ हाँ, नहा लूंगा। अभी दस ही तो बजे हैं।

लक्ष्मी – मैं जानती हूँ, तुम नही नहाओगे। इतवार के दिन तो तुम १२ से पहले नहाना सीखे ही नहीं हो।

अनोखे – फिर क्यों जल्दी मचा रही हो अभी से? देखती नही हो काम कर रहा हूँ आफिस का। काम इतना है कि नहाने को शायद वक्त ही न मिले।

लक्ष्मी — नहाने को वक्त न मिले, वाह। किसी न किसी बहाने नहाने को टालना तुम्हारी आदत ही है। बड़ी गन्दी बात है।

अनोखे – क्या करूँ, मेरे बदन और पानी में जन्म से ही दुश्मनी है। बदन पर पानी क्या गिरता है, लगता है आग गिर रही है। बचपन में माँ जब भी नहलाती, मैं खूब चीखता था। एक बार तो कहते हैं मेरी चीख से पानी से भरी बाल्टी ही उलट गई।

लक्ष्मी – जरूर उलट गई होगी।

अनोखे – स्कूल जाने की उम्र का हुआ तो इतवार को जैसे-तैसे नहाता। कई बार तो मैं गुसलखाने में बालटियाँ उलट देता था और नहाने का नाटक करके बाहर आ जाता था।
(राम राम हरे राम –राम राम हरे हरे, कहने लगते हैं।)

लक्ष्मी – यह चालाकी तो शायद तुम इन दिनों भी करते हो।

अनोखे – मेरी चालाकी का माँ को जब पता चला तो वह मुझे खुले आँगन में नहाने के लिए कहती। मैं लाख कहता खुली हवा मे नहाकर मुझे जुकाम हो जाएगा, जुकाम हो जाने का नाटक भी करता लेकिन वह मेरी एक न मानती।

लक्ष्मी – बहुत अच्छा करती थी।

अनोखे – कालेज में पढ़ने के लिए जब मैं शहर जाकर १०८

रहने लगा तो जानती हो मैंने पहला काम कौनसा किया। नहाने से छुट्टी ले ली।

लक्ष्मी – राम राम। कितने दिनों में नहाते थे ?

अनोखे – अरे तुम दिनों की बात करती हो, हफ्तों और महीनों की बात करो।

लक्ष्मी – छी: छी:।

अनोखे – सिनेमा की तरह मेरे नहाने के चार-चार छ:-छ: शानदार हफ्ते चलते। सारे होस्टल में मेरे इन हफ्तों की चर्चा रहती। एक बार मेरे साथियों ने ऐलान किया था-यदि तुम बराबर २५ हफ्ते न नहाओ तो हम तुम्हारे नहाने की सिलवर जुबिली मनाएंगे।

लक्ष्मी – छी: छी: छी:। कैसे अजीब लड़के थे।

अनोखे – मैं हफ्तों नहाता भले ही न होऊं लक्ष्मी, लेकिन ऐसा साफ सुथरा रहता कि अच्छे अच्छे नहाने वालों को भी चेलेंज करूं। बदन की सफाई केवल पानी उड़ेल लेने से ही तो नहीं होती, और भी कितने ही साधन हैं दुनियां में।

लक्ष्मी – हां, स्नो-पाउडर पोत लिया कि होगई बदन की सफाई।

अनोखे – मुझे तो आश्चर्य इस बात का होता है कि लोग ठंड में भी नहाते हैं। साधारण ठंड में नहीं कडी शीत में।

लक्ष्मी – क्यों, कड़ी शीत में क्या बदन गंदा नहीं होता ?

अनोखे – हमेशा कपड़ों में लिपटा शरीर कहां का गन्दा हो जाता है जो नहाने की जरूरत पड जाए। मैं तो यह दावे के साथ कह सकता हूं कि ठंड में कोई भी अपनी खुशी या मर्जी से नहीं नहाता।

लक्ष्मी – तो क्या किसी के दबाव या डर से नहाता है ?

अनोखे – हां। छोटे लोग घर के बड़ेबूढ़ों के डर से नहाते हैं तो बड़े इस डर से कि छोटे लोग कहेंगे कि कैसे हैं ये बड़ेबूढ़े नहाते

तक नही ।

लक्ष्मी – वाह तुम्हारा दिमाग भी खूब चलता है ।

अनोखे – मंदिर के पुजारी को भी डर से ही नहाना पड़ता है। जानती हो वह किसके डर से नहाता है ?

लक्ष्मी – यह भी कोई सवाल हुआ। साफ है वह भगवान के डर से नहाता है ।

अनोखे – नही। वह भक्तों के डर से नहाता है। और इधर भक्त पुजारी के डर से नहाते हैं ।

लक्ष्मी – लेकिन मेरा भाई किसी के डर से नही अपनी मर्जी से नहाता है । ठंड मे तो वह बिलकुल तड़के नहा लेता है और वह भी ठडे पानी से ।

अनोखे – हाँ, दुनिया में कुछ लोग ऐसे होते हैं जो ठंड में शेखी बघारने के लिए नहाते हैं। ठडे पानी से नहाए बिना वे शेखी बघार नही सकते इसलिए ठडे पानी से नहाते हैं। नहाकर ये लोग चुप नही बैठ सकते। कहते फिरेंगे मैंने तो नहा लिया है तड़के ही।

लक्ष्मी – चलो रहने दो। तुमने कभी किसी को अच्छा कहा है ?

अनोखे – ये लोग नहाते क्या हैं जैसे किसी के सिर पर उपकार करते हैं। अरे भाई, नहाया है तो अपने लिए नहाया है। गदे थे तुम, नहाना तुम्हारे लिए लाजमी था, सो नहा लिया तो बार-बार क्यों कह सुनाते हो ।

लक्ष्मी – सुना भी दिया तो किसी का क्या बिगड़ जाता है ?

अनोखे – तुम्ही कहो हम घर मे झाड़ू लगाते हैं, गंदे कपड़े और वर्तन धोते हैं बाहर किसी को कह सुनाते हैं ? जाहिर है इनके नहाने के पीछे सफाई की बात नही होती, बस डींग मारने की होती है ।

लक्ष्मी – क्यों न मारें डींग । तुम जैसे आलसी थोडे ही होते हैं ये लोग।

अनोखे – ठंड के दिनों में तड़के ठंडे समय मे ठडे पानी से नहानेवाले लोग समझते हैं जैसे नहा क्या लिया एवरेस्ट को जीत लिया। अपने को तेनसिंह से भी बढ़कर मानने लगते हैं। ये समझते हैं तेनसिंह ने तो एक वार ही विजय पाई और चुप बैठ गया। हम लोग पूरे चार महीने हर दिन विजय पाते हैं।

लक्ष्मी – तुम एक ही दिन नहाकर बता दो ठंडे पानी से ठंड के दिनों में, तममे बहादुरी हो तो।

अनोखे – ये लोग ऐसे ही बहादुर हैं तो क्यों नहीं गर्मी के दिनों में गरम-गरम पानी से नहाते ?

लक्ष्मी – तुम्हारा दिमाग तो हमेशा उलटा ही चलेगा।

अनोखे – उलटे का क्या सवाल है। ठंड के दिनो मे ठंडा पानी बहादुरी है तो गर्मी के दिनों में गर्म पानी बहादुरी हुआ।… दुनियाँ में अपने आराम की कितनी ही चीजें हैं। ठंड के दिनों में गरम पानी से नहाना ऐसी ही चीज है। पर नही बहादुरी के लिए ये नहायेंगे ठंडे से। अरे, ऐसी ही बात है तो सिर्फ नहाने में ही बहादुरी क्यों ? आराम की और चीजों से भी दूर रहो। रेल मे मत सफर करो पैदल चलते हुए जाओ। बस मे मत चढ़ो, साइकल छोड़ दो, पेन से मत लिखो।…

लक्ष्मी – बस बस, सूची को और मत बढ़ाओ।

अनोखे – इन बहादुरों को देखकर मुझे तुलसी की ये पंक्तियाँ याद आ जाती हैं—सकल पदारथ या जग माही। भाग्यहीन नर पावत नाही।

लक्ष्मी – हाँ हाँ, कह लो भाग्यहीन कह लो।

अनोखे – ठंड के दिनो मे ठडे पानी से नहाते हो –बहादुर हो तो उन

दिनों में चीजें भी ठंडी ही खाओ न । ठंडे ही कपड़े पहनो और ठंडे ही बिस्तरे पर सोओ । बड़ा तीर मार लेते हो एक ठंडे पानी से नहाकर ।

लक्ष्मी – दुनिया में बस सयाने तुम ही हो । बाकी सब तो मूरख हैं ।

अनोखे – लोग बरसात के दिनों में भी नहाते हैं कितनी विचित्र बात है । ठंड में नहाने का तो धूल एक बहाना हो सकता है, लेकिन बरसात में तो वह भी नहीं होती और कई बार पानी से भीगने का मौका आता है ।

लक्ष्मी – कोई रोजरोज थोड़े ही भीगता है ।

अनोखे – न भीगे । फिर भी हवा में पानी के इतने कण होते हैं कि अलग से नहाने की आवश्यकता नहीं रह जाती ।

लक्ष्मी – मतलबी विज्ञान तुम्हे पहले याद रहता है ।

अनोखे – बरसात के दिनों में अलग से नहाना वास्तव में बरसात का अपमान है । एक बड़े भोज से उठ भड़भूंजे के पास जाकर चने खाने के समान है ।

लक्ष्मी – मेरा भाई तो बरसात मे भी बिना नहाए नहीं रहता ।

अनोखे – बरसात में कौन कह सकता है कि मैं बिना नहाया हूँ । अरे, बरसात के दिनो में तो सारी धरती नहा उठती है । फिर तुम बिना नहाए कैसे रह जाते हो । 'जल बीच मीन पियासी' जैसे हाल ।

लक्ष्मी – बरसात में कीचड़ जो होती है ।

अनोखे – कीचड़ के पास जाते ही क्यो हो जो नहाना पड़े । हाँ, किसी ने उछाला हो तो बात अलग है । ऐसी करनी ही क्यों करो जो कोई कीचड़ उछाले और फिर नहाने की जरूरत पड़ जाय ।

लक्ष्मी – तो तुम्हारा मतलब है नहाने का संबंध सिर्फ कीचड़ से है ।

अनोखे – सिर्फ कीचड़ से नहीं, गर्मी से भी है ।…गर्मी के दिनों में

नहाना जरूर कुछ मतलब रखता है। खूब गर्मी है भाई, शीतलता के लिए नहा लो। बदन पसीना-पसीना हो रहा है, नहा लो।

लक्ष्मी – चलो किसी एक मौसम के लिए तो नहाना लाजमी मानते हो।

अनोखे – मेरी समझ में यह नही आता कि जो बात केवल गर्मी के मौसम के लिए उचित है वह लोगों ने बारहों महीनों के लिए क्यों लागू कर दी है : ठंड और बरसात में आप ही ठंडक होती है। बदन पसीना-पसीना होने का सवाल ही नहीं आता। फिर क्यों गर्मी के दिनों का यह नहाना उन दिनों के लिए भी थोप दिया है ?

लक्ष्मी – अच्छी बातें आदमी बारहों महीनों करता है।

अनोखे – तो फिर गर्मी के दिनों की जो और अच्छी बातें हैं वे क्यों नहीं बारहों महीनो की जाती ? छतों पर खुली हवा मे सोना, शरबत-लस्सी पीना, पतले हलकेफुलके कपड़े पहनना ये सब कितनी अच्छी बातें हैं। फिर सोओं खुली छतो पर, पीते रहो शरबत-लस्सी और पहनते रहो हलके-फुलके कपड़े सभी महीनो में। यदि नही ऐसा कर सकते तो क्यों नहाने को ही पकड़ लिया है बारहों महीनों के लिए।

लक्ष्मी – यह न भूलो कि नहाने का संबंध हमारे स्वास्थ्य से भी है।

अनोखे – हाँ, कुछ लोग स्वास्थ्य के लिए स्नान को आवश्यक मानते हैं। मैं नही मानता। क्योंकि जैसे खाने का स्वास्थ्य से संबंध है फिर भी उसमें व्रत की महिमा गाई गई है। स्नान के व्रत के बारे मे कही भी कुछ नही कहा गया है। साफ है स्वास्थ्य से इसका कोई सम्बन्ध नही है।

लक्ष्मी – तो तुम्हारी दृष्टि में हकीम-डाक्टर लोग मूर्ख हैं। नहाने से सारा शरीर ताजा नही हो उठता, एक नई स्फूर्ति नहीं

आ जाती ?

अनोखे – जरूर, जरूर आ जाती है । अतः जिनके शरीर मे नहीं है ताजापन और स्फूर्ति नहाते रहें वे रोज और गाते रहें उसकी महिमा । बूढ़ों को तो दिनरात नहाते ही रहना चाहिए ।

लक्ष्मी – और तुम जैसे जवानों को बार–बार नही नहाना चाहिए ।

अनोखे – नहाना तुम औरतों को बडा प्रिय लगता है । इसलिए नही कि सफाई पसन्द होती हो, बल्कि इसलिए कि नहाने के बाद समझती हो अपनी छटा निखर उठती है ।

लक्ष्मी – चलो रहने दो ।

अनोखे – केवल नहाकर ही तुम्हारा जी नहीं भरता । नहा लेने पर अपने को और चमकाने के लिए स्नो, पाउडर और न जाने क्या क्या इस्तेमाल करती हो । यह देखकर मुझे डबल एम० ए० वालों की याद आती है । एक एम० ए० कर लेने के बाद योग्यता अधूरी लगी तो दूसरा कर लिया ।

लक्ष्मी – हर अच्छी चीज में भी दोष देखने की आदत है तुम्हारी ।

अनोखे – आजकल लोग नहाने को इतना महत्व देने लगे हैं कि मकान मे बैठक भले हो न हो, रसोईघर भी छोटा चल सकता है लेकिन गुसलखाना जरूर होना चाहिए ।

लक्ष्मी – हर आदमी तुम्हारे जैसा थोड़े ही होता है कि बिना नहाए काम चला ले ।

अनोखे – हमारे बचपन मे मर्द खुले में नहाते थे । आजकल मर्दों को भी गुसलखाना चाहिए ।

लक्ष्मी – गुसलखाने मे नहाना सभ्यता का लक्षण है ।

अनोखे – तो हमारे आदिवासियों के लिए गुसलखाने ही क्यों नहीं बनवा देती सरकार ? दिन–रात उनमें नहानहाकर सभ्य बनते रहेंगे वे ।

लक्ष्मी – किसी अच्छी बात को भी व्यंगात्मक रूप देना कोई तुमसे सीखे ।

अनोखे – शरीर को खूब रगड़-रगड़कर, साबुन से खूब मल-मलकर और ऊपर से खूब पानी उड़ेल-उड़ेलकर नहाने का युग है यह । लेकिन आदमी शरीर के साथ अपने मन को भी इसी तरह धोए तो…

लक्ष्मी – तुम जैसे दार्शनिक सभी नहीं हैं दुनिया में ।

अनोखे – यही तो रोना है । आदमी अपने मन को भी धोए तो दुनिया की सारी गंदगी आप धुल जाए । लेकिन शरीर को रोज रगड़ रगड़ कर धोनेवाला आज का आदमी अपने मन को कभी पानी की एक बूँद भी नहीं लगने दे रहा है । आज शरीर की चमक दमक ही सभ्यता है, मन की नहीं । मन पर तो छलकपट, ईर्ष्याद्वेष के मैल की परतों पर परतें चढ़ती जा रही हैं । लक्ष्मी, तुम हँस रही हो । क्या यह हँसने की बात है ? मैल की इन परतों से निकलनेवाली दुर्गन्ध जानती हो क्या है ? बेईमानी, दगेफसाद, लूटखसोट आदि । विश्वयुद्ध भी मैल के परतों की ही सड़ांध है ।

लक्ष्मी – कैसी नेताओं जैसी बातें करते हो ।

अनोखे – मैं जब भी किसी को अपना शरीर चमकाते हुए देखता हूँ तो मन मे आता है कहूं—अरे, शरीर को क्या मन को चमकाओ । कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर ।

लक्ष्मी – जरूर, जरूर कहना चाहिए तुम्हे ।

अनोखे – कितना अच्छा हो शरीर के साबुन की तरह कोई मन का साबुन खोज निकाले ।

लक्ष्मी – कोई वैज्ञानिक तुम जैसा होगा तो जरूर खोज निकालेगा ।

अनोखे – लक्ष्मी, मेरे मन में जब तब आता है कपड़ों के ड्राइक्लीनिंग की तरह क्या शरीर का ड्राइक्लीनिंग या ड्राइबैदिंग नहीं

हो सकता? वैज्ञानिकों को इसे खोज निकालना चाहिए ।

लक्ष्मी – कोई आलसी वैज्ञानिक जरूर खोज निकलेगा ।

अनोखे – आदमी चन्द्रमा मे पहुँच गया है । मैं उसे विज्ञान की इंच भर भी उन्नति नही मानता । मैं विज्ञान की सच्ची उन्नति तब मानूँ जब वह हमारे नहाने के लिए ड्राइवेदिंग की खोज निकाले । तुम्हें क्या बताऊँ लक्ष्मी, कल मैंने इस बारे में एक अजीब सपना देखा ।

लक्ष्मी – कैसा ?

अनोखे – जैसे ड्राइवेदिंग की खोज हो चुकी है । ड्राइक्लीनिंग की तरह जगह-जगह उसकी दूकानें खुल गई हैं और कपड़ो की तरह लोग अपने को इन दूकानो में धुलने नही ड्राइवेदिंग के लिए डाल रहे है । एक बार के ड्राइवेदिंग के बाद दो-दो चार-चार महीने फिर धुलने की जरूरत नहीं ।

लक्ष्मी – जैसी अजीब बातें सोचते हो वैसे ही सपने देखते हो ।

अनोखे – आगे सुनो तो क्या हुआ । मेरे दोस्त गोपाल ने शहर के बड़े चौराहे पर ड्राइवेदिंग की एक शानदार दूकान खोली । और उसके उद्‌घाटन के लिए जानती हो किसे बुलाया ?

लक्ष्मी – किसे बुलायेंगे । किसी मंत्री को ही बुलाया होगा ।

अनोखे – औरो की तरह तुमने गोपाल को भी मूर्ख समझ लिया है क्या ? उसने मुझे बुलाया उद्‌घाटन के लिए । बिलकुल उपयुक्त आदमी को । काफी लोग एकत्र हुए थे । इस उद्‌घाटन के समय जानती हो मैंने कैसा भाषण किया । मुझे एक-एक हरफ याद आ रहा है । मैंने कहा—मेरे सामने बैठे हुए सफाई के भक्तो, मैं गोपाल की ड्राइबाथ की दूकान का उद्‌घाटन करता हूँ ।" आज ड्राइबाथ इतना कॉमन हो गया है कि हर जगह उसकी दूकानों की संख्या बढ़ती जा रही है । लेकिन एक जमाना था जब ड्राइबाथ

को लोग जानते तक नहीं थे। और मुझ जैसा इक्का-दुक्का व्यक्ति अपने तरीके से ड्राइबाथ लेता तो लोग उस पर हँसते थे। मैं तो ड्राइबाथ का इतना कायल था कि कहा करता था विज्ञान की सच्ची उन्नति तो तब है जब वह ड्राइबाथ के साधनों को खोज निकाले। वैज्ञानिकों ने जैसे मेरी चुनौती को सुन लिया। भला विज्ञान क्या नहीं कर सकता।... लेकिन मैंने देखा है कि इस ईजाद के बाद भी कुछ लोग ड्राइबाथ को पसंद नहीं करते। सोचिए लोगो, पानी से नहाना क्या पानी को बरबाद करना नहीं है? अरे, आज जब लाख कोशिशों के बाद भी पीने को पानी नहीं मिल रहा है, खेती के लिए पानी नहीं मिल रहा है, ऐसी सूरत में क्या हमें नहाने में पानी गँवा देना चाहिए? दोस्तो, आप देख रहे हैं और चीजों की तरह आज नहाने की भी परेशानियाँ दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही हैं। हर मकान में गुसलखाने नहीं होते। होते हैं तो पानी नहीं होता। पानी होता है तो समय नहीं होता... और... और समय होता है तो नहाने की हिम्मत नहीं होती। इन परेशानियों को टालने के लिए गोपाल भाई की दूकान एक बड़ा वरदान है। मैं उम्मीद करता हूँ कि आधुनिक साजसज्जाओं से युक्त यह दूकान आप सब लोगों की जरूरतें अच्छी तरह से पूरी करेगी और पानी से दूर रहकर भी लोग साफसुथरे बने रहेंगे।

लक्ष्मी – वाह वाह, तुम तो अपने भाषण से अच्छे-अच्छे नेताओं को मात कर सकते हो।

अनोखे – भाषण जब समाप्त हुआ तो लोगों ने खूब जोर से तालियाँ पीटीं—

लक्ष्मी – और उनकी आवाज से तुम्हारी नींद खुल गई यही न।

अच्छा अब उठो ! नहाने पर बातें बहुत हो गईं, अब नहाने की बात करो। बारह बज रहे हैं।

अनोखे – तो नेताओं के भाषण की तरह मेरा भी भाषण फिजूल गया। जनता पर कोई असर नहीं। (बारह के घंटे बजते हैं।) उठो भाई अनोखेलाल, उठो।...ये चला लक्ष्मी। लाओ, मेरे कपड़े दे दो। गरम पानी तो है न बबे मे ?

(अदर का दरवाजा खुलता है और बद होता है। अनोखेलाल हाहा-हूहू करते हुए नहाने लगते हैं। बीच-बीच में राम राम हरे राम—राम राम हरे हरे कहते हैं।)

लक्ष्मी – देखो, नाटक ही नहीं करना है नहाना भी है।

अनोखे – (अंदर से ही) हां हां, जानता हूं। तबतक तुम खाना परोसो।

अनोखेलाल ने नौकर रखा

पात्र

अनोखेलाल, रामू, पोस्टमैन,
लक्ष्मी

अनोखेलाल – रामू, ओ रामू ।

रामू – (पास आती हुई आवाज) जी आया मालिक । (प्रवेश करके) जी क्या हुकुम है ?

अनोखे – अरे, मेरे पेन में स्याही भर दी ?

रामू – जी मालिक ।

अनोखे – तभी मैं कहूं, यह टेबलक्लाथ किसने खराब किया । अरे, स्याही भरने के बाद पेन तुमने इस टेबलक्लाथ को क्यों पोंछा ?

रामू – बात यह हुई मालिक कि पास में और कोई कपड़ा ही नही था ?

अनोखे – (चिढ़ते हुए) पास मे कोई कपड़ा ही नही था । तुझ जैसा मूर्ख भी कोई होगा । तमाम टेबलक्लाथ खराब करके रख दिया ।

लक्ष्मी – (अन्दर से आती हुई) अरे, क्या बात है, क्यों गरम हो रहे हो ?

अनोखे – देखो तो इस टेबलक्लाथ को । इस मूर्ख ने स्याही के धब्बे लगाकर तमाम खराब करके रख दिया ।

लक्ष्मी – मैं तो कहती हूं इतनी सी बात पर इतना गर्म होने की क्या जरूरत है । गलती हो गई तो हो गई । समझा-बुझाकर कह दो कि आइंदा इस तरह टेबलक्लाथ गन्दा न किया करो । चल जा रे रामू । अन्दर तेरी थाली परोस दी है । जाकर खा ले ।

रामू – जी बीबीजी । (जाता है ।)

लक्ष्मी – तुम्हे कितनी बार कहा है रामू पर गरम न हुआ करो, पर तुम हो कि अपनी आदत से बाज नही आते । पहला नौकर तुम्हारे इस स्वभाव के कारण नही टिक सका । जैसे-तैसे इसे पकड़कर लाई हूं तो इसे भी न टिकने दो । मिलते

कहाँ हैं नौकर । दस जगह कहकर रखा तब तो मुश्किल से यह हाथ लगा है ।

अनोखे – नौकर क्या है सिरदर्द है सिरदर्द । एक काम ढंग से नहीं करता है ।

लक्ष्मी – दो हफ्ते की ही तो बात रह गई है अब । अगले हफ्ते उर्मिला आ ही रही है । ज्यादा से ज्यादा रहेगी एक हफ्ता । उसके जाने के बाद इसे छुट्टी देनी ही है ।

अनोखे – सच कहूं लक्ष्मी । तुम्हारी सहेली आ रही है इसलिए यह नौकर और घर के अन्दर की यह टीमटाम मुझे कदापि पसन्द नहीं है । आदमी अपने को ऐसा ही दिखाए जैसा कि वह वास्तव में होता है ।

लक्ष्मी – उर्मिला जैसी धनी सहेली सूना सूना घर देखकर मेरे बारे में क्या सोचती ?

अनोखे – इसीलिये तुम किसी के यहाँ से यह सोफासेट या ड्रेसिंगटेबल तो किसी के यहाँ से यह रेडियोग्राम और अलमारियाँ माँगकर ले आई हो ।

लक्ष्मी – हाँ । दो-तीन हफ्तों के लिए ले आने में बुराई भी कौन सी है । उर्मिला वापस गई कि दूसरे दिन इन सबको लौटा दूँगी ।

अनोखे – यह तो ठीक है । पर रामू न भी हो तो क्या हर्ज है ?

लक्ष्मी – हर्ज कैसा नहीं ? इतना सबकुछ हो और नौकर न हो तो उर्मिला के सामने हम काम करेंगे ।

अनोखे – बड़ा ढंग का है जो काम करेगा वह ।

लक्ष्मी – वह जाती है तब तक और ट्रेनिंग मिल जाएगी । अभी क्या दो दिन तो हुए ही है उसे हमारे यहाँ । सबकुछ जान जाएगा तबतक ।

अनोखे – मेरी तनखा का चौथा भाग तो यही ले जाएगा ।

खानापीना सो अलग ।

लक्ष्मी – कह दिया न उर्मिला गई कि दूसरे ही दिन उसे छुट्टी दे दूँगी । अच्छा, अब तुम भी चलकर खाना खा लो । (दोनों अन्दर जाते हैं । अन्दर ही) अरे रामू तू ऊपर जाकर बिस्तरे लगा ।

रामू – जी बीबीजी ।

अनोखे – रामू ओ रामू ।

रामू – जी आया मालिक । .... जी, क्या हुकुम है मालिक ?

अनोखे – अरे तुझे वह मैंने चिट्ठी दी थी रामबाबू के यहाँ पहुँचाने के लिए दे आया क्या ?

रामू – रामबाबू के यहां । मैं तो उसे डाकखाने में डाल आया मालिक ।

अनोखे – (चिढ़कर) डाकखाने में ? अरे, उसे डाकखाने में डालने के लिए किसने कहा था ?

रामू – आपने ही तो कहा था कि रामबाबू की चिट्ठी है यह । कलतक उनके पास किसी भी हालत में पहुँच ही जाए ।

अनोखे – लेकिन इसका मतलब यह कैसे हुआ कि उसे डाकखाने मे डालना है । तूने यह तो सोचा होता कि लिफाफे पर टिकट भी नही लगा है ।

रामू – मैंने समझा डाल दो । समझा डाकवालों से जान पहचान होगी आपकी इसलिए टिकट नही लगाया होगा आपने ।

अनोखे – जान पहचान होगी । सीधा भले ही न चले उलटा पहले चलेगा तेरा दिमाग ।

लक्ष्मी – (आवाज दूर से पास आती हुई) हजार बार कह दिया कुसियाँ बरामदे मे मत पड़ी रहने दिया करो । कोई उठा कर ले जाएगा तब मालूम पड़ेगा । (प्रविष्ट होकर) मैं कहती हूँ तुम बाहर कुसियां ले ही क्यो जाते हो ?

अनोखे – लेकिन लक्ष्मी—

लक्ष्मी – मैं कोई बहाना नहीं सुनना चाहती । बहाने बनाना तुम्हें खूब आता है ।

अनोखे – लेकिन लक्ष्मी, मैं नहीं ले गया बाहर कुर्सी वुर्सी । ये ये ले गया था रामू ।

लक्ष्मी – (एकदम धीमे स्वर में) क्यों रे तू ले गया था ?

रामू – जी बीबीजी । ऊपर आले में से बेबी की गेंद निकालने के लिए ले गया था ।

अनोखे – और काम हो जाने पर अन्दर नहीं लाया ?

लक्ष्मी – अरे भूल गया होगा । कोई बात नहीं रामू । जरा ख्याल रखा कर (दस बजते हैं)

अनोखे – देखो, दस बज गए । थाली लगा दो जल्दी । आफिस को देर हो जाएगी नहीं तो ।

लक्ष्मी – चलो न खाना कभी का तैयार है ।

अनोखे – अरे रामू, मैं खाना खाता हूं तबतक मेरे कपड़ो पर लोहा कर दे ।

रामू – जी मालिक ।

अनोखे – (नल पर हाथ धोने की आवाज के साथ) ओह, साढ़े दस हुए जा रहे हैं । (प्रवेश करके) रामू, रामू जल्दी कर । मेरे कपड़े ले आ । लोहा कर दिया न तूने ।

रामू – जी मालिक । (कुछ कपड़ों के साथ प्रवेश)

अनोखे – सभी कपड़ों पर कर दिया ?

रामू – सभी पर तो अभी नहीं कर सका मालिक । कुछ कपड़े बाकी रह गए हैं ।

अनोखे – अच्छा रहने दे । मेरी कमीज, कोट और पैन्ट ले आ ।

रामू – ये कपड़े तो अभी लोहा करने के रह गए हैं मालिक ।

अनोखे – ये रह गए हैं तो और किन कपड़ो पर किया लोहा तूने ।

रामू – बाकी सब पर। चादर पर, गिलाफ पर, रूमाल पर, बनियान पर और.......

अनोखे – नालायक कहीं का। इन कपड़ों पर लोहा करने के लिए तुझे किसने कहा था?

रामू – मालिक, आप ही तो बोले थे कि मेरे कपड़ों पर लोहा कर दो। चादर, गिलाफ, रूमाल ये सब आपके ही तो कपड़े हैं।

अनोखे – और इन्हें पहनकर मुझे आफिस जाना था। बेवकूफी की भी हद होती है।

लक्ष्मी – (पास आती हुई आवाज) अरे क्या हो गया? क्यों इतने गरज रहे हो? (प्रवेश)

अनोखे – देखो देखो करतूत तुम्हारे नौकर की। उसने पैंट, कमीज और कोट पर लोहा नही बनाया और कपडों पर बनाकर रख दिया है। ऐसा नालायक नौकर हमारे लिए ही पैदा हुआ है।

लक्ष्मी – तो उससे कह देते किन-किन कपड़ों पर लोहा बनाना है। उस बेचारे की क्या गलती। उससे कहा लोहा करदो करने लगा बेचारा। तुम तो नाहक गरम हुआ करते हो।

अनोखे – मैं नाहक गरम होता हूं यानी गलती उसकी कुछ भी नहीं, ठीक है नालायक मैं हूं, वह नही। लाओ, बिना लोहे के ही कपड़े पहने जाता हूं। जाना ही पड़ेगा क्योंकि अपनी नालायकी का अंजाम मैं नही तो और कौन भुगतेगा?

लक्ष्मी – अब आ रहे हो न आफिस से? मालूम है कितने बज रहे हैं? राह देखते-देखते मुझे दो घंटे हो रहे हैं। कही बैठ गए होगे यार दोस्तों के साथ गप्पें हांकते हुए।

अनोखे – कौन रोज-रोज देर होती है लक्ष्मी। एकाध दिन ही तो आता हूँ देर से।

लक्ष्मी – एकाध दिन की ही बात क्यों न हो। कहती हूं यह आदत अच्छी नही है। घर के लोगों की सुविधा–असुविधा का ख्याल रहता है तुम्हें ?

अनोखे – अब असुविधा की क्या बात है लक्ष्मी। घर में नौकर जो है।

लक्ष्मी – इससे क्या ? नौकर हो तो अपनी आदत बिगाड़ लें ?

अनोखे – है कहां रामू ? उसे कहो दौड़कर एक सिगरेट की डिब्बी ले आए।

लक्ष्मी – रामू है कहां घर में। वह गया है बाहर।

अनोखे – बाहर, क्या किसी काम से ?

लक्ष्मी – नही। बोला शहर मे घूम आता हूं आध–पौन घंटे के लिए।

अनोखे – तो अभी नही लौटा ? कब से गया है ?

लक्ष्मी – हो गए कोई दो घंटे। लो, वह आ ही गया। (रामू का प्रवेश) अरे रामू, कितनी देर लगा दी तूने ? अरे, ऐसे देर करके नही आया करते। चल कोई बात नहीं। अइंदा ख्याल रखना। जा नल पर जाकर हाथ पैर धो ले।

रामू – जी, बीबीजी। (जाता है)

अनोखे – भूख लगी है जोरों की। क्या खाना तैयार है ?

लक्ष्मी – भूख भूख। तुम्हें भूख जोरों की लगती कब नही है। हरदम देखो तो बच्चो की तरह भूख तैयार। कुछ देर के लिए वेबी को लेकर टहल आओ तबतक तैयार हुआ जाता है खाना।

अनोखे – (सांस छोड़कर)-ठीक है, जाता हूं (जाते हैं।)

लक्ष्मी – अरे रामू, हाथ पैर धो लिए ?

रामू – जी बीबी जी। (प्रवेश) बीबीजी भूख बड़ी जोर की लग रही है।

लक्ष्मी – भूख लग रही है। अच्छा, अच्छा। टहलता रहा दो घंटे तो भूख लगेगी नही तो और क्या होगा ? दाल साग तो तैयार

है । अभी पाँच मिनट में पराठे डालकर परोसती हूं तुझे ।

अनोखे – अरे, रामू तुझे कोट के बटन टाँकने के लिए कहा था । कहाँ टाके ? नया बटन तो कहीं भी लगा हुआ नहीं दिख रहा है ।

रामू – मैंने नया एक भी नही टाँका मालिक । पहले जो लगे थे उन्ही को टाँक दिया ।

अनोखे – अरे नालायक, पुराने टाँकने के लिए किसने कहा था तुझसे ?

रामू – आपने कहा था कोट के बटन टाँक दो । मैंने समझा कोट के लगे हुए बटन ही टाकने हैं । आपने यह कब कहा था कि नए बटन टाँकने हैं ।

अनोखे – मैंने साफ साफ नही कहा, फिर मैंने ही नालायकी की । तुझे तो कुछ भी करने के लिए कहना नालायकी करना ही है ।

लक्ष्मी – (अंदर से धीरे-धीरे आवाज उभरती है ।)–मैं कहती हूँ, मेरी सिलाई की मशीन को हाथ किसने लगाया था ? (प्रवेश) मैंने तुमको हजार बार कहा है कि मेरी सिलाई की मशीन को हाथ न लगाया करो । अपने को सीते नही बनता है तो मुझसे कह दिया करो । पर मानो तब न । एक दिन मशीन जब दो कौडी की हो जायगी तब तसल्ली होगी तुम्हारी ।

अनोखे – लक्ष्मी, मैं तो मशीन के पास गया भी नहीं हूँ । इस रामू ने सिया होगा कुछ ।

लक्ष्मी – क्यो रे रामू ?

रामू – जी बीवीजी । मेरा कुरता फट गया था । सोचा मैं सीकर देखूं ।

लक्ष्मी – अच्छा अच्छा। फिर तेरी कमीज मिल गई या नहीं ? जब भी मशीन खोला करो उसका ढक्कन वापस लगा दिया करो। जाओ ढक्कन लगा दो तो।

रामू – जी बीबीजी। (जाता है।)

अनोखे – उसकी गलती कोई गलती नहीं। इतनी खुशामद भी अच्छी नहीं होती।

लक्ष्मी – मुश्किल से मिला है। छोड़कर चला गया तो ? ऐसे सजे-सजाए ड्राइंगरूम को उर्मिला के सामने मैं झाड़ापोंछा करूँगी ?

अनोखे – अच्छा अच्छा। दस बज रहे हैं। चलकर खाना परोसो। " अरे रामू, मेरे जूते को पॉलिश कर देना।

रामू – (अंदर से आवाज)–जी मालिक।

अनोखे – अरे, रामू, हो गया क्या जूतों को पॉलिश ? ले आ जूते।

रामू – जी मालिक, ये लीजिए।

अनोखे – अरे, यह क्या ? पालिश क्या एक ही जूते को किया है ? दोनों को नहीं ?

रामू – जी मालिक। बात यह हुई कि —

अनोखे – मैंने एक जूते पर ही करने को कहा था यही न।

रामू – नहीं। बात यह हुई कि पालिश खत्म ही हो गया एक जूते पर करने के बाद।

अनोखे – वाह खूब। पूरा पालिश एक ही जूते पर चुपड़ दिया। तुझे कोई भी काम कहो ढंग से करना ही नहीं चाहता। अब एक पालिश का और एक बिना पालिश का जूता पहन कर जाऊँ आफिस को ?

रामू – रास्ते में जाते जाते दूसरे को करवा लीजिए न।

अनोखे – हां, अब तेरी नेक सलाह न मानूँ तो पागल ही कहाऊँ।

(अनोखेलाल को छींकें पर छींकें आ रही हैं ।)

लक्ष्मी – क्या बात है ? आज आफिस से आते ही यह क्या शुरू कर दिया ?

अनोखे – आज दुपहर दो बजे से ही तबियत ऐसी ही हो रही है। लगता है जैसे मेरे बदन में बुखार है ।

लक्ष्मी – सच, बदन काफी तप रहा है ।

अनोखे – डाक्टर के यहाँ चला जाता हूं । ज्यादा बढ़ गया तो क्या होगा ।

लक्ष्मी – अरे कहाँ डाक्टर के यहाँ जाते हो। सिर दर्द की एक टिकिया दे देती हूँ । सुबह तक तबियत टंच हो जाएगी ।

अनोखे – ठीक है टिकिया लिये लेता हूं । (लक्ष्मी टिकिया लाती है। वह लेते हैं ।)

अनोखे – रामू , अरे रामू ।···लक्ष्मी, रामू दिखा नहीं । अभी तक सोकर नहीं उठा है क्या ?

लक्ष्मी – नहीं, और उठेगा भी नहीं वह अभी ।

अनोखे – क्यों ?

लक्ष्मी – उसकी तबियत खराब है । छींको के बाद छींकें आ रही हैं। बदन मे बुखार भी मालूम पड़ता है।

अनोखे – उसे सिर दर्द की टिकिया क्यों नहीं दे देती ?

लक्ष्मी – उससे आराम न हुआ तो ? जाकर तुम डाक्टर को ले आओ ।

अनोखे – लक्ष्मी, नौकर की कीमत मालिक से भी ज्यादा हुई जा रही है।

लक्ष्मी – वह गाँव जाने की बात कर रहा है अपने । चला गया तो सारा खेल मटियामेट हो जाएगा । दूसरा मिलने से रहा ।

अनोखे – इसलिए इसकी सेवा किए जाओ ।

(रामू छींकता हुआ आता है ।)

लक्ष्मी – अरे रामू , तू क्यों आ गया बिस्तरे पर से । वहीं पड़ा रह अपने कमरे में ।

रामू – मैं चला जाऊँगा अपने घर—अपने गाँव बीबीजी। यहाँ आपको क्यों कष्ट दूँ? वहाँ माँ मेरी देखभाल करेगी।

लक्ष्मी – नहीं नहीं। गाव जाने की बात न कर। यहाँ तुझे कोई कष्ट न होगा। चल, चल अंदर जाकर सो जा। ('जी बीबीजी, कहकर वह जाता है।) जाओ डाक्टर को ले आओ।

अनोखे – (कुछ गुस्से में है।)–जाता हूँ।

पोस्टमैन – (प्रवेश करके) बाबूजी, आप की चिट्ठी।

अनोखे – (चिट्ठी लेकर और पता देख कर) लो तुम्हारी है लक्ष्मी।

लक्ष्मी – (चिट्ठी पढ़कर) अरे उर्मिला अभी नही आ रही है। लिखती है दो महीने के बाद आ सकूँगी।

अनोखे – दो महीने के बाद। तबतक तो यह टीमटाम का सामान यहाँ रखा नही जा सकेगा।

लक्ष्मी – उर्मिला ने तो सारा बना बनाया खेल ही गड़बड़ कर दिया। सहेलियो का सामान तो मैं लौटा दूँगी, पर रामू को हम छोड़ नहीं सकेंगे। सामान तो दुबारा मिल जाएगा लेकिन नौकर नहीं मिल सकेगा।

अनोखे – तो क्या दो महीने और चाकरी करनी होगी इस रामू की? बाप रे।

लक्ष्मी – अच्छा, अब तुम समय मत गँवाओ। जाकर डाक्टर को लेते आओ।

अनोखे – जैसा हुकुम। ये चला। (जाता है।)

रामू – (अंदर से आवाज)—बीबीजी, चाय बन गई क्या चाय?

लक्ष्मी – अभी बनाकर लाए देती हूँ रामू, अभी पांच मिनट में।

रामू – कितनी अच्छी हैं बीबी जी। (छींकता है।)

अनोखेलाल बीमार पड़ते हैं

पात्र

अनोखेलाल, वर्मा, खन्ना, डाक्टर,

लक्ष्मी

(घड़ी में दस बजते हैं)

अनोखेलाल – ओहो, दस बज गए लक्ष्मी । आज कहीं देर न हो जाये दफ्तर को । बस अब और कुछ न खाऊँगा ।

लक्ष्मी – अरे अरे, ऐसी भी क्या जल्दी है । और फिर एकाध दिन पाँच दस मिनट की देर हो भी जाए तो क्या ?

अनोखे – आज मालूम नहीं, तुम इतना मनामना कर क्यों खिला रही हो । मेरी पसन्द के चमचम भी बनाये हैं । आखिरी बात क्या है ?

लक्ष्मी – ऐसे ही ।

अनोखे – मैं मान नहीं सकता । जरूर कोई बात है ।

लक्ष्मी – आज शनिवार है दफ्तर से तो जल्दी लौटोगे न ?

अनोखे – हाँ, हाँ ।

लक्ष्मी – तीन बजे घर आ जाना ।

अनोखे – बात क्या है कहोगी भी ।

लक्ष्मी – बात यह है कि बाजार में साड़ियों की चलती-फिरती दूकानों की मोटरें आई हुई हैं । बड़ी अच्छी-अच्छी साड़ियाँ हैं वहाँ । सस्ती भी हैं । यहाँ की दूकानों पर तो ऐसी अच्छी सस्ती देखने मे नहीं आतीं ।

अनोखे – पर लक्ष्मी, कहा किसने यह तुम्हें ?

लक्ष्मी – पड़ोस की मनोरमा लाई हैं साड़ियाँ खरीदकर । कह रही थी तीन दिन से आई हैं ये दूकानें । मैं सोचती हूँ एकाध अच्छी सी साड़ी हम भी जाकर खरीद लाएं ।............... अरे, तुम तो उठ गए । ये चमचम क्या पड़े रहेंगे ?

अनोखे – बस बस । अब कुछ नहीं खा सकता ।.........मोटरें ।......... हूं । ओह कितनी देर हो गई । (बाहर जाते हैं)

(साइकिल की घण्टी बजती है ।)

लक्ष्मी – (दरवाजे पर जाकर) तो तीन बजे आने को न भूलना ।

लक्ष्मी – मैं कहती हूं जबतक पसीना नहीं आएगा बुखार निकलेगा कैसे बदन में से ? हां, ओढ़ो यह रजाई।............. रहने दो यह कम्बल भी रहने दो। उसके ऊपर से लो यह रजाई।

अनोखे – नहीं लक्ष्मी, मैं मारे पसीने के मर जाऊंगा।

लक्ष्मी – बेकार की बच्चों जैसी बातें न करो। चुपचाप पड़े रहो। हां, बस ऐसे। हां, सिर भी ढक लो।

अनोखे – (आवाज रजाई के अंदर से) लक्ष्मी, लक्ष्मी। इस गरमी में मेरा दम घुट जाएगा।

वर्मा – अच्छा भाभी जी, अब मैं चलता हूं।

लक्ष्मी – आपकी शुक्रगुजार हूं वर्मा जी। बस जाते-जाते एक काम और कीजिएगा। उस नुक्कड़ पर डाक्टर प्रकाशचंद्र जी रहते हैं उन्हें भिजवा दीजिएगा।

अनोखे – (रजाई में से एकदम मुंह खोलकर) नहीं नहीं। मुझे किसी डाक्टर वाक्टर की दवा नहीं चाहिए मैं ऐसे ही अच्छा हो जाऊंगा।

वर्मा – छः बजे तक। क्यों न अनोखेलाल ?

अनोखे – तुम तो पागल हो। छः बजे तक से क्या मतलब ?

लक्ष्मी – अच्छा अच्छा, तुम तो अपना मुंह बन्द रखो रजाई में। वर्माजी, भूलिएगा नहीं।

वर्मा – अच्छा अच्छा। नमस्ते। (जाता है।)

अनोखे – चाय वाय कुछ नहीं पिलाओगी क्या ?

लक्ष्मी – चाय मिलेगी, लेकिन [illegible] नहीं।

लक्ष्मी – यह काढ़ा हर बीमारी में चलता है ।

अनोखे – तुम्हारा वह काढ़ा मैं किसी भी सूरत में नहीं पिऊँगा ।

लक्ष्मी – कैसी बात करते हो ।

अनोखे – इतना कड़वा है कि बस देखते ही रूह कांपने लगती है ।

लक्ष्मी – दवाएं तो कड़वी ही हुआ करती हैं ।

(दवा उड़ेलने की आवाज)

अनोखे – मैं नही पीऊँगा लक्ष्मी, नही पीऊँगा ।

लक्ष्मी – तुम्हें यह पीना ही होगा । आँखें बन्द करलो और पी लो ।

(अनोखेलाल आं' आं' –नहीं-नहीं — थू-थू—काढ़ा है या जहर –थू-थू –नहीं नहीं करते हैं । इसी समय पांच के घंटे बजते हैं ।)

अनोखे – एक घंटा, एक घंटा और जुल्म सहना है ।

लक्ष्मी – क्या मतलब है ? और यह सारी दवा थूक दी । दुबारा लाती हूँ । (जाती है ।)

अनोखे – क्या जुल्म है । हर बीमारी के लिए एक ही दवा । दवा नहीं जहर । (लक्ष्मी आती है ।) ·· ·· ओह लक्ष्मी, इस बार तो तुम पूरी शीशी उडेल लाई ।

लक्ष्मी – आँखें बंद करके पी ही जाओ ।

अनोखे – यह इतनी । हाय रे भगवान । न मालूम किसका मुँह देखा था आज ? (पीता है ।) हा हा, क्या दवा है । सुपाडी दो सुपाडी । सारा मुँह कड़वा हो गया । थू थू–

लक्ष्मी – सुपाड़ी उपाडी कुछ नही । बस अब चुपचाप पड़े रहो रजाई में मुँह बंद करके । अरे, यह डॉक्टरसाहब अभी तक नही आए । मैं ही जाकर ले आती हूँ उन्हे ।

अनोखे – आजायेंगे खुद-ब-खुद । यह जहर पिलाकर भी संतोष नही हुआ है तुम्हें ।

लक्ष्मी – जरा से काढे से क्या होता है । डॉक्टर साहब का इलाज

तो कराना ही पड़ेगा । अच्छा, मैं जा रही हूं । लौटती हूं तबतक चुपचाप पड़े रहना । (जाती है ।)

अनोखे – लेकिन लक्ष्मी ⋯ ⋯ । नहीं मानी चली ही गई । बीमार नहीं हूँ, लेकिन अब जरूर बीमार हो जाऊँगा । ये घड़ी के काँटे भी कितने धीरे-धीरे सरक रहे हैं । लक्ष्मी को घर पर डॉक्टरसाहब न मिलें तो अच्छा रहे । भगवान, डॉक्टर घर पर न हों । भगवान डॉक्टर घर पर न हों । भगवान डॉक्टर ⋯ हाय भगवान, यह हॉर्न किसकी गाड़ी का है । कमबख्त, डॉक्टर जब जरूरी में चाहिए तब कभी समय पर नहीं मिलते और जब आवश्यकता न हो तो उधार बैठे मिल जाते हैं ।

(लक्ष्मी और डॉक्टर का प्रवेश ।)

लक्ष्मी – आइए⋯आइए, इधर चले आइए डाक्टरसाहब । हाँ, इसी पलंग की ओर । नब्ज देख लीजिए और जरूरत हो तो एकाध इंजक्शन दे दीजिए ।

अनोखे – (खीजकर)—एकाध क्या दसबीस लगवा दो न ।

डॉक्टर – आप चुप पड़े रहिए, बोलिए नहीं । नब्ज देखने दीजिए ।

अनोखे – मुझे कोई शिकायत नहीं है डॉक्टरसाहब ।

लक्ष्मी – इनका बदन ऊपर से ठंडा है, शायद बुखार दब गया है । इंजक्शन दे ही दीजिए आप ।

डॉक्टर – हाँ, देना ही होगा । अभी तैयार करता हूँ ।

अनोखे – डॉक्टरसाहब, आप यह क्या गजब कर रहे हैं । इंजक्शन नहीं, नहीं । पीने की दवा है दीजिए, इंजक्शन न दीजिए । नहीं नहीं, डाक्टरसाहब नहीं । हाय भगवान, कितनी बड़ी सुई है यह । इंजक्शन के नाम मेरा वैसे ही दम घुटता है ।

डॉक्टर – बस । अब आप चुप रहिए और बायां हाथ बाहर निकालिए ।

अनोखे – मुझे कुछ नहीं हो रहा है डाक्टरसाहब, मुझे कुछ नहीं हो

रहा है । सच मानिए, मैं बीमार नहीं हूं··· मैं बीमार नहीं हूं । (भागने की कोशिश करते हैं ।)

डॉक्टर – अरे, ये तो बिस्तर छोड़कर भागने की कोशिश में हैं। पकड़िये इनको ।

लक्ष्मी – इनको डिलिरियम तो नहीं हो गया डॉक्टरसाहब ?

डॉक्टर – आसार कुछ ऐसे ही लग रहे हैं। आप फौरन एक रस्सी लाइए और पलंग से बांध दीजिए इन्हें ।

लक्ष्मी – ठीक है । ·यह रही रस्सी ।

अनोखे – अरे अरे, यह क्या कर रहे है आप लोग ?

डॉक्टर – हां, इधर से मैं पकड़ता हूं उधर से आप पकड़िए । पेशेंट की आउट ऑफ कंट्रोल होने से पहले ही बांध देना अच्छा रहेगा । हां, और कसिए । हां इसी तरह ।

(अनोखेलाल हाय मरा, हाय मरा । लक्ष्मी, लक्ष्मी, मेरे प्राण लेकर रहोगी तुम' कहते रहते हैं ।)

डॉक्टर – ठीक है । अब ये भाग कर कहीं जा नहीं सकते। अब मैं इंजक्शन देता हूं ।

अनोखे – हाय यह सुई । हाय मरा ।

डॉक्टर – लग चुका इंजक्शन । बस, अब सबकुछ ठीक हो जाएगा । कोई चिंता की बात नहीं ।

अनोखे – चिंता की बात नहीं । आखिर क्या बीमारी है मुझे ? लिया और खोंप दिया इंजक्शन । (इसी समय छः के घंटे बजते हैं ।) ओह, छः बज गए । बस अब मैं छूट गया बीमारी से । लक्ष्मी, खोल दो यह रस्सी । छोड़ दो मुझे पलंग से ।

लक्ष्मी – डॉक्टरसाहब ये क्या कह रहे है ?

डॉक्टर – हां, खोल दीजिए ।

लक्ष्मी – अच्छी बात है । ··ये तो अब रजाई फेंक रहे हैं डॉक्टरसाहब ।

डॉक्टर – फेंकने दो। कोई डर नहीं है। अब ये बीमार नहीं हैं।
लक्ष्मी – कितनी अच्छी बात है। सचमुच, आप कितने अच्छे डॉक्टर हैं। रुकिए मैं आपके लिए चाय लाती हूँ। (जाती है।)
अनोखे – (जोर से) और मेरे लिए भी।
डॉक्टर – आपकी बीमारी का हाल वर्मा जी ने मुझे पहले ही बतला दिया था।
अनोखे – डॉक्टरसाहब।
डॉक्टर – हां।
अनोखे – तो वह इंजक्शन ?
डॉक्टर – सिर्फ डिस्टिल्ड वाटर का था।
अनोखे – केवल पानी का। यह बीमारी मुझे सचमुच बीमार बना देती। यह सुई। बाप रे बाप। जानवरों के अस्पताल की है क्या यह ?
लक्ष्मी – लीजिए चाय डाक्टरसाहब।… चाय ये भी ले सकते हैं न डॉक्टरसाहब ?
डॉक्टर – खूब अच्छी तरह से। ये अब बिलकुल चंगे हो गए हैं।
लक्ष्मी – सचमुच, आप कितने अच्छे डॉक्टर हैं।
डॉक्टर – इनकी बीमारी मैंने नहीं घड़ी ने अच्छी की है। अच्छा, अब मैं चलता हूँ।
लक्ष्मी – अच्छी बात है। नमस्ते।

(डॉक्टर नमस्ते कहते हैं और जाते हैं।)

लक्ष्मी – मैं कितनी डर गई थी। भगवान ने जल्दी ही कृपा की।… हां, इस गडबड़ी मे यह तो कहना भूल ही गई कि मैं साड़ी खरीद लाई हूँ।…
अनोखे – (आश्चर्य से)—साडी।
लक्ष्मी – हां। मैंने सोचा वायदा करके भी आप आयेंगे नही। आदत जो है। और दूकानें तो आज ही जाने को थीं।

सो मनोरमा के साथ एक बजे ही जाकर खरीद लाई एक साड़ी ।

अनोखे – खरीद लाई । कितने की ?

लक्ष्मी – अस्सी की ।

अनोखे – बाप रे बाप । अस्सी की । और पैसे ।

लक्ष्मी – तुम अपनी अलमारी की चाबियां जो घर भूल गये थे जल्दी जल्दी में । लाकर दिखाती हूँ मैं, कितनी अच्छी साड़ी है । (जाती है ।)

अनोखे – हाय भगवान । इतनी मुसीबत झेलकर भी आखिर जो हजामत होनी थी वह हो ही गई ।

अनोखेलाल का सेवाव्रत

एक आवाज – अरे भाई, वह कौन है जो सड़क पर से केले के छिलके उठाकर फेंक रहा है ? कोई पागल तो नही है ?

दूसरी आवाज – नहीं नहीं । पागल नही है । वह एक समाजसेवी व्यक्ति है । उसका नाम है अनोखेलाल ।

प० आ० – समाजसेवी ? क्या वह केवल समाजसेवा करता है ? कोई कामधंधा नही है शायद उसे ?

दू० आ० – कैसी बात करते हो । हम जैसे व्यक्तियो मे से ही है वह, बल्कि हमसे अच्छी नौकरी है उसकी ।

प० आ० – फिर यह पागलपन कैसा ?

दू० आ० – समाजसेवा को तुम पागलपन कहते हो । यह तो उसकी हॉबी है । तुम अपना फालतू समय गपशप, ताश-शतरंज जैसी बातों मे गंवाते हो, वह उसे समाजसेवा मे काम लाता है ।

प० आ० – केले के छिलके उठाकर फेंकना यह क्या समाजसेवा हुई ?

दू० आ० – तो तुम समझते हो वह केवल छिलके उठाकर फेंकने का ही काम करता है ? कहते है अपनी शक्ति भर वह असहायों, बीमारो, अन्धों-लूलो सभी की सेवा करता है । देखो इस समय वह एक अंधे को रास्ता पार करा रहा है । इतने लोग देख रहे थे कोई दौड़ा उसके सिवा सहायता के लिए ?

प० आ० – उधर वह युवक क्यों बुला रहा है उसे उस घास-वाली के पास खड़ा हुआ ?

दू० आ० – लगता है उसने घास का गट्ठा खरीद लिया है । घासवाली अकेले गट्ठा उठा नहीं सकती, इसलिए वह युवक अनोखेलाल को आवाज दे रहा है ।

प० आ० – क्या युवक उसे पहचानता है ।

एक आवाज – अरे भाई, वह कौन है जो सड़क पर से केले के छिलके उठाकर फेंक रहा है ? कोई पागल तो नहीं है ?

दूसरी आवाज – नहीं नहीं। पागल नहीं है । वह एक समाजसेवी व्यक्ति है । उसका नाम है अनोखेलाल ।

प० आ० – समाजसेवी ? क्या वह केवल समाजसेवा करता है ? कोई कामधंधा नहीं है शायद उसे ?

दू० आ० – कैसी बात करते हो । हम जैसे व्यक्तियों में से ही है वह, बल्कि हमसे अच्छी नौकरी है उसकी ।

प० आ० – फिर यह पागलपन कैसा ?

दू० आ० – समाजसेवा को तुम पागलपन कहते हो। यह तो उसकी हॉबी है। तुम अपना फालतू समय गपशप, ताश-शतरंज जैसी बातों में गंवाते हो, वह उसे समाजसेवा में काम लाता है ।

प० आ० – केले के छिलके उठाकर फेंकना यह क्या समाजसेवा हुई ?

दू० आ० – तो तुम समझते हो वह केवल छिलके उठाकर फेंकने का ही काम करता है ? कहते हैं अपनी शक्ति भर वह असहायों, बीमारो, अन्धो-लूलों सभी की सेवा करता है। देखो इस समय वह एक अंधे को रास्ता पार करा रहा है । इतने लोग देख रहे थे कोई दौड़ा उसके सिवा सहायता के लिए ?

प० आ० – उधर वह युवक क्यों बुला रहा है उसे उस घास—वाली के पास खड़ा हुआ ?

दू० आ० – लगता है उसने घास का गट्ठा खरीद लिया है। घासवाली अकेले गट्ठा उठा नहीं सकती, इसलिए वह युवक अनोखेलाल को आवाज दे रहा है ।

प० आ० – क्या युवक उसे पहचानता है ।

दू० आ० – अनोखेलाल को समाजसेवी के रूप में बहुत से लोग जानते हैं। युवक को देखा खुद गट्ठे को हाथ देने को तैयार नहीं। अनोखेलाल को आवाज दे रहा है।

प० आ० – ठीक कहते हो ।........अनोखेलाल ने पहुँचकर गट्ठे को सहारा दिया है। देखो।

दू० आ० – अगर अनोखेलाल सामने हो तो सब्जीवालियाँ भी अपनी भारी टोकरियाँ उसी को आवाज देकर उठवाती हैं।

प० आ० – वाह खूब।

दू० आ० – कई बार तो ऐसा होता है किसी मौके पर सहायता की जरूरत हो और अनोखेलाल न हो तो भी लोग उसे बुला लाते हैं वहाँ। अभी परसों की बात है। एक आदमी अचानक मिरगी आने से बीच सड़क में गिर गया। काफी लोग चारों ओर से इकट्ठे हो गए। लेकिन किसी ने आगे बढ़कर उसे उठाया नहीं। किसी ने जब कहा 'अरे भाई इसे उठाओ तो' तो जवाब मिला 'अनोखेलाल को बुला भेजा है। वही आकर इसे उठाएगा और अस्पताल ले जाएगा।'

प० आ० – ओह, कितने अच्छे हैं लोग जो अनोखेलाल को सेवा का मौका देते हैं।

दू० आ० – एक बार एक अजनबी ने राह चलते किसी से एक स्थान का पता पूछा। वह स्थान वहाँ से काफी दूर और आसानी से न मिल सकने वाला था। उस व्यक्ति ने सोचा बताऊँ तो कैसे बताऊँ। साथ भी वह उसके नहीं जाना चाहता था। तभी उसे अनोखेलाल दिखाई दिया। बस उसने कहा—'देखो सामने जो आदमी आ रहा है वह तुम्हें पता बता ही नहीं

देगा बल्कि वहाँ तक पहुँचा भी देगा ।'

प० आ० – तो अनोखेलाल ने उसे पहुँचाया ?

दू० आ० – हाँ हाँ । अनोखेलाल के सेवाव्रत में कहते हैं 'नहीं' शब्द नहीं है ।

प० आ० – अरे, देखो तो अनोखेलाल अब इधर चला आ रहा है । जरा मजा करें । हम उस केलेवाले से कुछ केले खरीदें और छिलके यहीं बीच रास्ते में डाल दें । देखें, अनोखेलाल उठाता है या नहीं ।

दू० आ० – बुरी बात है । हमें जानबूझकर ऐसा नहीं करना चाहिए ।

प० आ० – परीक्षा करें क्या सचमुच ही वह सेवाव्रती है । (अंदर जाकर केले लाता है और छिलके फेंकता है ।) हो सकता है वह हम पर छिलके फेंकते हुए देखकर चिढ़ उठे ।

दू० आ० – नहीं, वह चिढ़ेगा नहीं । लोग उसकी हर तरह से सेवा लेकर परख चुके हैं ।

प० आ० – सच कहते हो । उसने वह छिलके उठाकर फेंक दिए हैं । उसने हमारी तरफ देखा भी बस हँसकर आगे चला गया ।

दू० आ० – ऐसे सेवियों की हमें पूजा करनी चाहिए ।

प० आ० – वह बस के क्यू में जाकर खड़ा हो गया है । कहाँ जा रहा है वह ?

दू० आ० – शायद अपने घर को ।

(बस में)

कंडक्टर – टिकट......टिकट... आप कहाँ जाएँगे......एक या दो......आपका टिकट ।

एक व्यक्ति – अरे भाई अनोखेलाल, वह औरत खड़ी है उसे बैठने

को सीट कर दो ।

दूसरा व्यक्ति – क्या बात है यह आदमी ऐसा क्यों कह रहा है ? उस औरत को खुद न सीट देकर उससे क्यों कह रहा है ।

तीसरा व्यक्ति – बात यह है जिससे सीट देने के लिए कहा गया है वह आदमी समाजसेवी है । कहने वाला आदमी यह बात जानता है । इसीलिए उसने अपनी सीट न देकर उससे देने के लिए कहा ।

दूसरा व्यक्ति – यह भी खूब है । समाजसेवा न हुई दंड हो गया । एक निरपराध को दिया जाने वाला दंड ।

चौथा – अरे काहे की समाजसेवा । बस बनता है कि मैं समाजसेवी हूँ ।

दूसरा – लेकिन देखो उसने अपनी सीट उस औरत को दे दी है ।

चौथा – युवती थी इसलिए । किसी बूढ़ी को न देता ।

तीसरा – मैं अच्छी तरह जानता हूं वह वास्तव में सेवक है ।

चौथा – अरे साहब आजकल कौन है जो सेवक नहीं है। डाक्टरों को लो देखो, रोगियों की कैसी सेवा करते हैं । व्यापारियों को देखो । जब भी हम उनकी दूकानों पर जाते हैं बेचारे हमारी सेवा के लिए बराबर हाजिर रहते हैं । सरकारी अफसर तो हमारी सेवा के लिए ही नियुक्त किए जाते हैं । हां, इसीलिए तो पब्लिक सर्वेंट कहलाते हैं । फिर इन सबसे बढ़कर हैं हमारे नेता और मंत्री । दिनरात जनता की और देश की सेवा में जुटे रहते हैं । भला तुमने नेताओं और मंत्रियों से बढ़कर कभी कोई सेवक देखा है ?

दूसरा – बात तो तुम पते की कह रहे हो भाई ।

तीसरा – सेवाभाव एक महान धर्म है। उसकी मखौल उड़ाना ठीक नहीं।

चौथा – क्या मैं मखौल उड़ा रहा हूँ?

तीसरा – नहीं तो क्या। कभी-कभी कोई अच्छी चीज गलत लोगों के हाथ में पड़कर बड़ी विकृत बन जाती है। आज सेवाभाव की यही हालत हो गई है। यही कारण है कि हम लोग उसे भर्त्सना की दृष्टि से देखने लगे हैं। हमें सेवा के वास्तविक रूप को समझना चाहिए। . निष्काम सेवा ही अच्छी सेवा है।

चौथा – और ऐसी सेवा सिर्फ अनोखेलाल करना जानते हैं। और मान लीजिए करते भी हो तो क्या हो जाता है ऐसे इक्के दुक्के सेवकों से?

दूसरा — उठो भाई हमारा स्टाप आ गया।

चौथा - हाँ हाँ, उठो।

(दरवाजा खटखटाने की आवाज)

अनोखे – लक्ष्मी, ओ लक्ष्मी।

लक्ष्मी – आई। (दरवाजा खोलती है) इतनी देर हो गई लौटने में? मैं कब से राह देख रही थी। जानते हो एक बज गया है?

अनोखे – शायद और भी देर हो जाती। लेकिन जब पैरों ने बिलकुल जवाब दे दिया और पेट में चूहे कुल-बुलाने लगे तो लौट आया।

लक्ष्मी – क्या स्कूल वालों ने तुम्हारे नाश्तेपानी की भी सुध-बुध ली जिनके लिए तुम घर घर जाकर टिकट बेच रहे हो? वास्तव में तुम्हारा क्या सम्बन्ध है

बुलाते । तुमने उनके कोई सौ से ऊपर टिकट बेचे थे ।

अनोखे – मैं कोई भी सेवा किसी बदले की भावना से नही करता । तुम जानती तो हो ।

लक्ष्मी – यह बात तुम्हारी ओर से हुई, ठीक है । लेकिन उन्हें तो लाज आनी चाहिए थी । कृतज्ञता नाम की कोई चीज है या नही दुनिया में ? कितनी मेहनत की थी तुमने । खाना-पीना तक भूल गए थे ।

अनोखे – छोड़ो भी कहाँ की बात ले बैठी हो ।

लक्ष्मी – टिकट तुमने बेचे और उसका श्रेय मिला घनश्याम को । तुम्हें शायद नही मालूम । मेरी एक सहेली ने मुझे बताया ।

अनोखे – मिलने दो लक्ष्मी । मैंने वे श्रेय पाने के लिए भी नही बेचे थे ।

लक्ष्मी – लेकिन घनश्याम को तो झूठ नही बोलना चाहिए था । कह दिया टिकट मैंने बेचे हैं । यह सरासर बेईमानी है कि खुद तो आराम से घर पड़ा रहा और अपने टिकट बेचने के लिए थमा दिए तुम्हारे हाथों में ।

अनोखे – मुझे मेरी सेवा से जो कुछ मिलता है उसे तो कोई नही छीन सकता मुझसे—मेरे दिल को मिलनेवाले आनंद को ।

लक्ष्मी – लोगों को मालूम होगया है बिना कौड़ी खर्च किये अपना काम करा लेना हो तो अनोखेलाल के पास पहुँच जाओ । वे जानते हैं काम कैसा भी हो वह मना नही करेंगे ।

अनोखे – अपने लिए तो सभी जीते हैं लक्ष्मी । औरों के लिए जीना ही सच्ची जिंदगी है । त्याग की वृत्ति, सेवा का भाव दुनिया का महान धर्म है । कोई तीन महीने पहले मुझे एक पुस्तक पढ़ते-पढ़ते इस सूत्र का साक्षात्कार हुआ । त्याग की सामर्थ्य मुझमे नही है । हाँ, सेवाभाव को मैं अपनी शक्तिभर अपना सकता था । बस इसे अपना लिया । आज सोचता

हूँ मुझे इस सूत्र का साक्षात्कार न हुआ होता तो मेरी जिंदगी यों ही गुजर जाती · एक पशु की तरह ।

लक्ष्मी – जब से तुमने यह व्रत अपनाया है पडोसियों ने तो बस नाक में दम कर रखा है । कोई कहता है हमारी चिट्ठियाँ तो पोस्ट कर आइए । कोई अपने बच्चे की दवा लाने के लिए कहता है । कोई कहता है मेरी छुट्टी की दरखास्त दे आइए आफिस को । इनका आफिस होता है दो मील दूर तुम्हारे आफिस से उल्टी दिशा में । अभी कोई स्त्री आकर कहती है मेरे बच्चों को जरा पार्क में ले जाइए ! क्योंकि उसे अपने पति की पेपर जाँचने में मदद करनी होती है। सेवाधर्म क्या अपना लिया है जैसे इनके नौकर ही हो गए हो । इधर तुम भी उनके कामो मे ऐसे जुट जाते हो कि फिर घर की भी सुधबुध नही रहती ।

अनोखे – सेवा एक ऐसा नशा है लक्ष्मी, चढता है तो बस चढ़ता ही जाता है ।

(बाहर दरवाजा खटखटाता है)

लक्ष्मी – कौन आ गया ? कोई सेवार्थी ही होगा । नही तो और कौन दरवाजा खटखटाएगा इतनी धूप मे ।··· आई (दरवाजा खुलता है ।)

अजनबी – अनोखेलाल जी हैं ?

लक्ष्मी – क्यो क्या बात है ?

अजनबी – बासटोले मे एक बूढ़ा मर गया है। अनोखेलाल जी को अर्थी के लिए बुलाया है ।

लक्ष्मी – बाँसटोले में ? वहाँ तो हम लोगो का कोई नही रहता ।

अजनबी – गरीब है वह बेचारा । बमुश्किल दो-चार आदमी इकट्ठा हो पायेंगे । मोहल्ले के लोगो ने कहा अनोखेलाल को खबर कर दो । वे जरूर आयेंगे । मैंने खबर कर दी है। अब मैं जाता हूँ । (वह जाता है ।)

लक्ष्मी – (दरवाजा लगाती है ।)—बड़े आए खबर करने वाले।···
अरे अरे, तुम तो उठ गए । हो गया खाना ?

अनोखे – हां ।

लक्ष्मी – तुमने तो अभी कुछ भी नहीं खाया । सिर्फ बात करते रहे।

अनोखे – मुझे बांसटोले जल्दी चले जाना चाहिए।

लक्ष्मी – तो क्या तुम अर्थी में जा रहे हो ? कितना थककर लौटे हो । क्या थोड़ा आराम भी नहीं करोगे खाने के बाद ?

अनोखे – आराम । ऐसी खबर सुनकर कहीं आराम किया जाता है लक्ष्मी ?

लक्ष्मी – खबर देने वाला तो चला भी गया ।

अनोखे – जाने दो । मैं बांसटोले मे जाकर तलाश कर लूंगा ।

लक्ष्मी – बाँसटोला यहाँ से दो मील दूर है । उधर बसें भी नहीं जाती इस समय । इतनी धूप में क्या पैदल जाओगे ? ये खबर करनेवाले कितने निर्दयी होते हैं । वक्त वेबक्त का जरा भी ख्याल नही करते । पिछली एकबार तो तुम रात में पानी बरसते मे गए थे । और मजे की बात तो यह कि जो खबर लाया था वह खुद अर्थी मे शामिल नही हुआ था, नही ? आज भी कुछ ऐसा ही लगता है, नहीं तो वह तुम्हें साथ न ले जाता ।

अनोखे – अच्छा मैं जा रहा हूँ ।

अनोखे – (लौटकर नहा धो लेने पर) — आज मैं बहुत थक गया लक्ष्मी ।

लक्ष्मी – क्यों नहीं थकोगे । सुबह टिकटों मे पाँच-छः घंटे घूमते रहे । और अब आ—जाकर पाँच मील तो हो ही गए होंगे । फिर धूप भी कितनी तेज थी ।

अनोखे – अर्थी में इतने कम लोग थे कि मुझे भी कई बार कंधे लगना पड़ा ।

लक्ष्मी – अरे, तुम्हारी आंखें कैसी लाल हो रही हैं । जरा बदन तो देखूँ तुम्हारा । ओह, यह तो गरम लग रहा है। तुम इस तरह बैठो नहीं । पलंग पर लेटकर आराम करो । मैं चाय बना लाती हूँ तुम्हारे लिए दालचीनी डालकर । (दरवाजा खटखटाता है ।)—अब कौन आ गया ? कोई भी हो मैं अब तुम्हें कहीं भी नहीं जाने दूँगी । कौन है ? (दरवाजा खुलता है ।

स्त्री की आवाज – (प्रवेश करके) मैं हूं मालती । अनोखेलाल हैं क्या ?

लक्ष्मी – कहो, क्या बात है ?

मालती – ये कपड़े देने आई हूं उनके पास । स्नोव्हाइट लांड्री में डालने हैं धुलने के लिए ।

लक्ष्मी – क्यों तुम्हारे पति नहीं हैं घर पर ?

मालती – हैं तो । लेकिन उनके दोस्त आए हुए हैं । ब्रिज खेल रहे है उनके साथ ।

लक्ष्मी – तुम्हारे पति को खेलने से फुरसत नहीं है तो क्या मेरे पति तुम्हारे नौकर है ?

मालती – कैसी बात करती हो तुम लक्ष्मी ? वे नौकर नहीं समाज-सेवी हैं ।

अनोखे – क्या बात है लक्ष्मी ?

मालती – ये कपड़े स्नोव्हाइट लांड्री मे डालने हैं धुलने के लिए । महेंद्र ने कहा है ।

अनोखे – ठीक है, मैं अभी जाता हू ।

लक्ष्मी – तुम नहीं जाओगे । यह वह मालती है जिसने कल बेबी को चोट लगने पर टिक्चर देने से मना कर दिया था ।

मालती – तो इसका मतलब यह हुआ जिससे स्वार्थ पूरा होता है उसी की सेवा करते है ये । फिर निष्काम सेवा का ढिंढोरा क्यों पीटते हैं ।

अनोखे – मालती, तुम कपड़े इधर लाओ ।

लक्ष्मी – देखो, तुम यह कपड़ो का गट्ठर लेकर लांड्री नही जाओगे। दिनभर तुम धूप में चले हो और इस समय तुम्हारा बदन गरम है।

अनोखे – रहने दो।

लक्ष्मी – इन कपडों को हाथ लगाने के पहले सोच लो कि ऐसे आदमी के कपड़े ले जा रहे हो जो स्वयं दोस्तो के साथ ब्रिज में अपना समय गंवा रहा है।

अनोखे – सेवक को इन बातों से सरोकार नही।

लक्ष्मी – लोग तुम्हारी सेवा का नाजायज फायदा उठा रहे हैं। तुम्हें सेवा मे लगाकर अपने समय का दुरुपयोग कर रहे हैं।

अनोखे – करने दो लक्ष्मी। मुझे अपना काम देखना है, वे अपना देखें।

लक्ष्मी – तुम्हारी अंधी सेवा लोगों को निठल्ला बना रही है।

अनोखे – लक्ष्मी, तुम मेरे व्रत के बीच में मत आओ।

लक्ष्मी – तुम जाओगे तो तुम्हें बेबी की कसम है। ऐसी गरम देह मे मैं कदापि न जाने दूंगी। सोचो, तुम अर्थी मे जा रहे थे मैंने तुम्हे कसम देकर रोका ? एक गरीब की अर्थी में जाने के लिए। लेकिन ये ··· ये लोग तुम्हारी सेवा से प्रेरणा लेना दूर उलटे तुमको उल्लू बना रहे हैं। मैं रोकूंगी, हजार बार रोकूंगी।

अनोखे – बेबी की कसम वापस ले लो लक्ष्मी।

लक्ष्मी – नही लूंगी, नही लूंगी।

अनोखे – मालती, वह गट्ठर मुझे दे दो और तुम चली जाओ। मैं लक्ष्मी को मना लूंगा और कसम वापस लेने पर चला जाऊंगा। कहाँ स्नोव्हाइट मे डालने हैं ?

लक्ष्मी – यहाँ से एक मील से ऊपर है स्नोव्हाइट।

अनोखे – होने दो। लाओ वह गट्ठर या वहाँ उस कोने में रख दो। (एकदम गिर पड़ते हैं।)

लक्ष्मी – अरे अरे, गिर पड़े न । मैं कह न रही थी तुम्हारे बदन में बुखार है। ओह, बदन कितना तप रहा है । चलकर पलंग पर सो रहो । उठो मैं हाथ देती हूँ (हाथ देकर उठाती है) मालती अपना गट्ठर ले जाओ । ये जा नहीं सकेंगे ।

मालती – ऊँह, जा नहीं सकेंगे । ऐसा ही था तो पहले ही साफ मना क्यों नहीं कर दिया, ऐसे नखरे करने की क्या जरूरत थी ? (गट्ठर के साथ चली जाती है ।)

लक्ष्मी – (अनोखेलाल को पलंग पर लाकर) यहाँ आराम से सो जाओ । यह कम्बल उढ़ा देती हूं ।

अनोखे – लक्ष्मी, बदन जैसे टूट रहा है ।

लक्ष्मी – मैं दालचीनी की गरम-गरम चाय बनाकर ले आती हूँ । (जाती है)

(अनोखे कंबल सिर पर लेकर बुखार में कराहते रहते हैं।)

———

अनोखेलाल चाँदनी रात में......

आ रहे हैं अपनी बीबियों के साथ। नदी किनारे वाले रोज-गार्डन मे जाने की बात तय हुई है । वह रात को पिकनिक के लिए खुला रहता है। वहाँ हम लोग साथ-साथ खाना खायेंगे, खूब गपशप करेंगे । मदन और गोपाल दोनों की बीबिया गाना जानती हैं। उनसे गाने सुनेंगे। गानों के लिए हम अपना ट्रांजिस्टर भी ले चलेंगे । बोटिंग भी करेंगे बड़ा मजा आएगा।

लक्ष्मी – मजा तो जरूर आएगा, लेकिन...... .

अनोखे – आज मैं तुम्हारी लेकिन वेकिन कुछ नही सुनूंगा लक्ष्मी। फौरन तुम काम से निपट लो । तुम नही चलोगी तो मदन और गोपाल को क्या जवाब दूंगा।

लक्ष्मी – कह देना घर गया तो देखा लक्ष्मी की तबियत ठीक नही थी ।

अनोखे – तबियत खराब हो तुम्हारे दुश्मनों की । ऐसी अमंगल बात मेरे मुंह से कभी नही निकल सकती। लक्ष्मी, रोज गार्डन तुमने देखा नही है। बड़ा सुन्दर है। लम्बे–लम्बे लान, फूलो से लदे हुए घने कुन्ज, मेढ़ों पर कतारों में लगे हुए पेड़ हमारा मन हठात् मोह लेते हैं। किसी एक कुन्ज में जो फूलों की खुशबू से लबालब भरा हुआ है मैं तुम्हारे साथ बैठा हुआ हूं इसकी कल्पना मात्र से मैं पुलकित हो उठता हूं । तुम्हीं- ोचो लक्ष्मी, ऐसे .

प्रणयपूर्ण क्रीड़ा में पूरी रात हम वहीं गुजार देंगे ।

लक्ष्मी – ये सब उपन्यास और सिनेमा की बातें हैं । उन्ही में अच्छी लगती हैं ।

अनोखे – जिन्दगी है यह । हमारे हाथ में है जैसी हम जीना चाहें । मैं देख रहा हूँ चांदनी के उस स्निग्ध वातावरण में हम दोनों आमने-सामने लेटे हुए घण्टों बातें कर रहे हैं ।

लक्ष्मी – लेकिन तुम यह भूल रहे हो मदन और गोपाल भी अपनी बीबियों के साथ वहाँ होंगे ।

अनोखे – नहीं, मैं भूल नहीं रहा हू । आरम्भ में हम लोग साथ-साथ होंगे । खाना साथ-साथ खाएँगे । गपशप करने, गाने सुनने और नाव में बैठने का प्रोग्राम भी साथ-साथ होगा । फिर बाद मे अलग-अलग हो जाएँगे ।

लक्ष्मी – वाह, खूब प्रोग्राम बनाया है। तुम्हारा ही सुझाव होगा यह सब ।

अनोखे – अच्छा, तो तुम अब जल्दी अपने काम से निपट लो । ऐसा न हो कि हमें देर हो जाए।

लक्ष्मी – ठीक है निपट लेती हूं । बेचारी गोराचाची को अकेले ही मेहमानों से निपटना होगा ।

अनोखे – हो गई तुम तैयार लक्ष्मी ?

लक्ष्मी – कैसे तैयार हो जाऊँ ? इधर बेबी को तो देखो । उसका बदन गरम हो रहा है ।

अनोखे – नही ऐसा तो गरम नहीं है लक्ष्मी । फिर भी तुम उसे दवा दे सकती हो अपने पास से । उस दवा से नींद भी अच्छी आती है ।

लक्ष्मी – दे तो दूँ, फिर भी जाने को मन नहीं करता है ।

अनोखे – मन न करने को क्या हो गया ? माँ तो है घर पर उसे देखने के लिए ।

लक्ष्मी – बेबी को बुखार और हम बाहर जाएँ।

अनोखे – (कुछ नाराज होकर) लक्ष्मी, तुम समझती हो जैसे हम दो-चार दिन के लिए जा रहे हैं यहाँ से। और बेबी को कोई टाइफाइड या निमोनिया तो हो नहीं गया है जो तुम इतनी चिन्ता कर रही हो।

लक्ष्मी – बस बस, चुप भी रहो। मुँह से ऐसी वैसी बात मत निकालो। मैं अभी तैयार हो लेती हूँ और चलती हूँ तुम्हारे साथ।

अनोखे – ओह, मेरी अच्छी लक्ष्मी।

अनोखे – लाओ वह टिफिन और थैली मुझे दे दो।

लक्ष्मी – धीरे बोलो, बेबी सो रही है।

अनोखे – तुमने माँ से कह दिया है न बेबी का ख्याल रखने के लिए ?

लक्ष्मी – हाँ कह दिया है।

अनोखे – (जब सड़क पर आ जाते हैं) हमे इस रास्ते से नहीं इस रास्ते से चलना है। पहले गोपाल के यहाँ चलेंगे। गोपाल और उसकी बीबी को लेकर फिर मदन के यहाँ चलेंगे। अरे, तुम तो कुछ नहीं बोल रही हो यह मुँह कैसा बना रखा है।

लक्ष्मी – ठीक तो है। सुनो हम लोग रात भर नहीं रहेंगे वहाँ जल्दी लौट आयेंगे।

अनोखे – घर से निकलने की देर नहीं और लौटने की बात शुरू।...... ये देखो, ये आ गया गोपाल का घर.........अरे भाई, गोपाल.....ओ गोपाल......क्या बात है चला तो नहीं गया ? हम लोगों को शायद देर हो गई। (दरवाजा खुलने की आवाज) नहीं गोपाल गया नहीं।......अरे

यह क्या तुम तो अभी तैयार भी नहीं हुए गोपाल ।

गोपाल – (प्रविष्ट होकर) मैं सैर के लिए आ नहीं सकूँगा अनोखेलाल ।

अनोखे – क्यों, क्या बात हो गई ?

गोपाल – माँ की तबियत ठीक नहीं है ।

अनोखे – लेकिन माँ को थोड़े जाना है सैर को ।

लक्ष्मी – क्या हो गया है माताजी को ?

गोपाल – ऐसे ही, सर्दी से थोड़ा बदन गरम हो गया है ।

अनोखे – सर्दी का ही साधारण बुखार है न । फिर जाने मे क्या हर्ज है ।

गोपाल -- नहीं । श्रीमती कहती हैं और कभी जाएँगे आज नहीं ।

अनोखे – लेकिन—

गोपाल -- माफ करो अनोखेलाल, मैं नहीं आ सकूँगा । (अन्दर चला जाता है)

अनोखे -- मैं आ नहीं सकूँगा । इसकी बीबी ही आने के लिए तैयार नहीं होगी और बहाना कर दिया माँ की बीमारी का । और होगी भी तो जानती हो, घर में माँ इसकी नहीं इसकी बीबी की है ।.... खैर अब हम मदन के यहाँ चलें वह जरूर हमारे साथ आएगा । वह गोपाल की तरह नहीं है बीबी की मुट्ठी मे रहने वाला ।...... ... अरे, आगे किधर जा रही हो । यही है मदन का घर ।......... अरे भाई मदन, ओ मदन ।

मदन – आया, आया अनोखेलाल । (प्रवेश करके ।) नमस्ते । नमस्ते भाभीजी ।

अनोखे – चलो, चल रहे हो न ।

मदन -- मैंने तो जाना कैंसल कर दिया है भाई अनोखे ।

अनोखे – क्यो ?

मदन – श्रीमती जी की इच्छा नहीं है। कल सुबह उसका भाई आ आ रहा है पंजाब मेल से। ?)

अनोखे – कल सुबह आ रहा है न। आज रात तो नहीं।

मदन – मैंने भी उससे यही कहा। लेकिन फिर भी वह कहती है और कभी जायेंगे। आज नहीं।

अनोखे – ठीक है। जैसी तुम्हारी श्रीमती जी की इच्छा।

(मदन अंदर चला जाता है।)

अनोखे – (आगे बढ़कर) एक एक अजीब चौखटे हैं। सभी अपनी-अपनी जोरुओं के गुलाम।

लक्ष्मी – इन लोगों की वजह से ही रुठ कर रहे थे न तुम। हम लोगों को तो कारण भी था। लेकिन ये लोग तो कोई कारण न होते हुए भी नहीं आए।

अनोखे – खैर हम अकेले ही जायेंगे। ... इधर से आओ। रोज-गार्डन इधर से नजदीक पड़ता है।

(रोज-गार्डन में)

अनोखे – ओहो, कितनी अच्छी चांदनी है नहीं लक्ष्मी ? इस लान पर यह मन में कैसा आह्लाद उत्पन्न करती है। मुझे तो लग रहा है जैसे मैं शीतलता में नहा रहा होऊँ। मन करता है यहाँ खूब भागूँ --दौड़ूँ। आओ लक्ष्मी हम दौड़ें।

लक्ष्मी – नहीं नहीं। मैं नहीं दौड़ूँगी।... अरे अरे, मेरा हाथ छोड़ दो ...छोड दो।... ओहो, नहीं मानोगे तुम।...बस बस ... (हाँफने लगती है।) मैं थक गई। छोड़ दो मेरा हाथ। (नीचे बैठ जाती है।)

अनोखे – बैठ गई तुम तो। ... अच्छा, यहां बैठकर हम खाना खा लें। मैं टिफिन ले आता हूँ मैंने वहाँ उस पेड़ के नीचे टिफिन और थैली रख दिए हैं।

लक्ष्मी – चलो, हम वहीं बैठकर खायेंगे। (पेड़ के नीचे दोनों जाते

हैं। लक्ष्मी टिफिन खोलकर दोनों के बीच में रख लेती है।)
लो, खाओ।

अनोखे – तुम भी खाओ न। (खाने लगते हैं।)

लक्ष्मी – कितने बज गए, आठ नहीं? गोराचाची के यहाँ मेहमान खाने पर बैठ गए होंगे।

अनोखे – तुम खाना शुरू करो न। देखो तो कितनी अच्छी बनी हैं ये पूरियाँ। और साग भी।

लक्ष्मी – (खाने लगती है।) गोराचाची का मुझ पर कितना भरोसा था। बेचारी अकेली ने क्या-क्या किया होगा।

अनोखे – उनकी चिंता करने से अब क्या लाभ?

लक्ष्मी – उनकी दोनों बहुयें मायके चली गई हैं। वरना मुझे बुलाने की क्यों नौबत आती।

अनोखे – (कुछ खीझकर)—लक्ष्मी, हम गोराचाची की चिंता करने नहीं आए हैं यहाँ। चलो खाओ।

लक्ष्मी – खाती हूँ।······

अनोखे – खाने के बाद हम बोटिंग के लिए जायेंगे। दुग्ध-धवल चाँदनी में बोटिंग मुझे खूब भाता है लक्ष्मी। और फिर आज तो तुम मेरे साथ होगी। कुंवारेपन में मैं ऐसे दिन के बड़े सपने देखा करता था।

लक्ष्मी – लेकिन मैं नाव मे नहीं बैठूंगी।

अनोखे – क्यों?

लक्ष्मी – अकेले रात मे बोटिंग करेंगे हम लोग?

अनोखे – इसीलिए तो ज्यादे आनंद आएगा।

लक्ष्मी – मैं आज तक कभी बैठी नहीं हूं नाव मे।

अनोखे – अब बैठो मेरे साथ। देखो तो कैसा आनंद आएगा। लगेगा हम दुनिया के सारे सुखों-दुखों से दूर किसी मायावी दुनिया में आ गए हैं।···चलो, टिफिन को समेट लो। फिर हम किनारे की ओर चलेंगे।

आयेंगे तो ज्यादा रुकेंगे। मुझे डर है पर बेबी रो न रही हो।

अनोखे – (एकदम चौंककर)-बेबी बेबी। मैं कहता हूं तुम कुछ देर बेबी को भुला नहीं सकती। बेबी और घरगिरस्ती की बातें छोड़कर इस सुहावने वातावरण के अनुकूल मदहोश बातें नहीं कर सकती? ओह, मैं सोच रहा था इस जगह पर आकर तुम एक नई मस्ती में डूब जाओगी और मेरे गले में अपनी बांहें डालकर कहोगी-नाथ-नाथ, हम किसी दूसरे लोक में तो नहीं आ गए हैं। इस पर मैं कहूंगा —हां, हम एक निराले ही लोक में आ गए हैं प्रिये। लेकिन यह कुछ न हो सका। तुमने मेरे सारे सपनों पर पानी फेर दिया। लोग अपनी बीवियों को पिकनिक पर लाकर कैसे मजे करते हैं। इस गार्डन में ही मैंने देखा है।

लक्ष्मी – देखनेवाले तो हमारे बारे में भी यही सोच रहे होंगे।

अनोखे – प्रणयी युगल ऐसी चांदनी में सारे संसार को भूल बैठते हैं।

लक्ष्मी – अपने बच्चों को भी भूल जाते हैं? युगल की स्त्री भूल जाती है? तो फिर वह पत्नी नहीं है, मां नहीं है, उसकी कोई गृहस्थी नहीं है —

अनोखे – यह कैसी बात कर रही हो लक्ष्मी। मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा है।

लक्ष्मी – चलो उठो। घर चलेंगे। मैं बेबी को देखने के लिए व्याकुल हो उठी हूं।

अनोखे – लो। यह उठ गया। और ... चलो सरकार। ... वाह रे अनोखेलाल ... हो गई बीवी के साथ। .....

(एकांत सड़क पर केवल

अनोखे – बस अब बहुत हो गया लक्ष्मी । बेबी की बात छोड़कर
दूसरी कोई बात करो ।

लक्ष्मी – दूसरी बात क्या करूँ । इस समय तो मुझे बेबी को छोड़
दूसरी बात सूझ ही नही रही है ।

अनोखे कुछ सोचो । बेबी को छोड़कर दूसरी कोई बात सोच
निकालो बात के लिए ।

लक्ष्मी – आज शाम को तुम चावल लाना भूल गए । मैंने तुम्हे सुबह
आफिस को जाते समय कहा था ।

अनोखे – चावल-दाल की बात छोड़ो । और कोई दूसरी बात करो ।

लक्ष्मी – दो महीनो से हमारा मकान का किराया रुका हुआ है ।

अनोखे – यह बात हम घर पर कभी भी कर सकते है लक्ष्मी । यहाँ
के लायक विषय पर बात करो ।

लक्ष्मी – नही, मैंने इसलिए कहा अगले महीने मकान-मालिक किसी
तरह मानेगा नही ।

अनोखे – गोली मारो उस मकान मालिक को ।·· और इधर मेरी
तरफ देखो । (उसे अपनी ओर खींच लेते हैं ।)

लक्ष्मी – अरे, यह क्या । मुझे अपने इतने पास न खीचो । नही नही ।

अनोखे – लक्ष्मी, तुम कितनी सुन्दर हो । देख रही हो उस चाद की
तरफ । तुम्हारे सामने वह फीका है ।

लक्ष्मी – जिस चांद के लिए हम यहां आए हैं उसी को फीका बता
रहे हो ।

अनोखे – मैं उस चांद को दिखाने आया हूँ तुम अपने सौंदर्य पर गर्व
न करो । तुम से बढ़कर एक चांद मेरे पास भी है ।
स बस, बहुत हो गई कविता । अब हमे घर लौट चलना
ए ।
जल्दी
े, अभी कुछ भी प्रणय नहीं कर पाए ।
काफी हो गया । अगली बार

लक्ष्मी – नही नही । नदी की ओर चलने का हठ न करो । मैं नाव मे नही बैठूंगी । रात में तो बिलकुल नही । मुझे डर लगता है।

अनोखे – डर लगता है । बुजदिल कही की ।

लक्ष्मी – कुछ भी कह लो ।

अनोखे – कितना मजा आता । ··· खैर जाने दो । हमारा ट्रांजिस्टर निकालो । गाना सुनते तो डर नही लगेगा ?

लक्ष्मी – मैं डरपोक हूं, बुजदिल हूं इसीलिए तो आना नही चाहती थी यहां ।(गला भर आता है और आंखों में आंसू आ जाते हैं।)

अनोखे - ओहो, तुम तो बुरा मान गई । (उसके पास सरक कर) नही नही, मेरा मतलब तुम्हें दुखाने का नही था। पोंछो-पोंछो वे आंसू । ठहरो, मैं ही पोंछता हूं ।

लक्ष्मी – रहने दो । और यह कितने पास सरक जाए हो । जरा हटकर बैठो ।

अनोखे - यहां कौन है देखनेवाला लक्ष्मी । एकान्त में प्रणयी युगल ऐसे ही तो बैठता है । देखो, तुम्हारे निकट यह चांदनी मुझे रेशम जैसी चिकनी और दूध जैसी धवल लग रही है ।

लक्ष्मी – दूध जैसी धवल दूध···न मालूम बेबी ने माताजी के हाथों दूध पिया होगा या नही । वह रोज बराबर नौ बजे दूध पीती है ।

अनोखे – पी ही लिया होगा ।

लक्ष्मी – उसका बुखार न बढ गया हो ।

अनोखे – नही बढ़ा होगा । तुमने दवा दे दी है तो क्यों बढ़ेगा भला ।

लक्ष्मी – उसे जब भी बुखार आता है, कभी भी एकदम तेज हो जाता है ।

अनोखे – आज नहीं होगा चिंता मत करो ।

लक्ष्मी – वह कभी-कभी नींद से अचानक जाग पड़ती है । कहीं जाग गई तो मुझे न देखकर रोना शुरू न कर दे ।

अनोखे – बस अब बहुत हो गया लक्ष्मी। बेबी की बात छोड़कर दूसरी कोई बात करो।

लक्ष्मी – दूसरी बात क्या करूँ। इस समय तो मुझे बेबी को छोड़ दूसरी बात सूझ ही नही रही है।

अनोखे - कुछ सोचो। बेबी को छोडकर दूसरी कोई बात सोच निकालो बात के लिए।

लक्ष्मी – आज शाम को तुम चावल लाना भूल गए। मैंने तुम्हे सुबह आफिस को जाते समय कहा था।

अनोखे – चावल-दाल की बात छोडो। और कोई दूसरी बात करो।

लक्ष्मी – दो महीनो से हमारा मकान का किराया रुका हुआ है।

अनोखे – यह बात हम घर पर कभी भी कर सकते हैं लक्ष्मी। यहाँ के लायक विषय पर बात करो।

लक्ष्मी – नही, मैंने इसलिए कहा अगले महीने मकान-मालिक किसी तरह मानेगा नही।

अनोखे – गोली मारो उस मकान मालिक को।···और इधर मेरी तरफ देखो। (उसे अपनी ओर खींच लेते हैं।)

लक्ष्मी – अरे, यह क्या। मुझे अपने इतने पास न खीचो। नही नही।

अनोखे – लक्ष्मी, तुम कितनी सुन्दर हो। देख रही हो उस चाद की तरफ। तुम्हारे सामने वह फीका है।

लक्ष्मी – जिस चाँद के लिए हम यहाँ आए हैं उसी को फीका बता रहे हो।

अनोखे – मैं उस चाद को दिखाने आया हूँ तुम अपने सौदर्य पर गर्व न करो। तुम से बढकर एक चाँद मेरे पास भी है।

लक्ष्मी – बस बस, बहुत हो गई कविता। अब हमे घर लौट चलना चाहिए।

अनोखे – इतनी जल्दी। हम तो अभी कुछ भी प्रणय नहीं कर पाए।

लक्ष्मी – इस बार के लिए इतना काफी हो गया। अगली बार

आयेंगे तो ज्यादा रुकेंगे। मुझे डर है घर बेबी रो न रही हो ।

अनोखे – (एकदम खीझकर)-बेबी बेबी । मैं कहता हूं तुम कुछ देर बेबी को भुला नहीं सकती । बेबी और घरगिरस्ती की बातें छोड़कर इस सुहावने वातावरण के अनुकूल मदहोशभरी बातें नहीं कर सकती ? · ओह, मैं सोच रहा था इस सलोनी जगह पर आकर तुम एक नई मस्ती में डूब जाओगी और मेरे गले मे अपनी बाहें डालकर कहोगी–नाथ-नाथ, हम किसी दूसरे लोक मे तो नही आ गए हैं । इस पर मैं कहूंगा —हां, हम एक निराले ही लोक में आ गए हैं प्रिये । ······ लेकिन यह कुछ न हो सका । तुमने मेरे सारे सपनों पर पानी फेर दिया । लोग अपनी बीवियो को पिकनिक पर लाकर कैसे मजे करते हैं । इस गार्डन मे ही मैंने देखा है ।···

लक्ष्मी – देखनेवाले तो हमारे बारे मे भी यही सोच रहे होंगे ।

अनोखे – प्रणयी युगल ऐसी चाँदनी मे सारे संसार की सुधबुध खो बैठते हैं ।

लक्ष्मी – अपने बच्चो को भी भूल जाते हैं ? युगल की प्रिया भी भूल जाती है ? तो फिर वह पत्नी नही है, मा, नही है, उसकी कोई गृहस्थी नही है ···

अनोखे – यह कैसी बात कर रही हो लक्ष्मी । मेरी तो कुछ समझ मे नही आ रहा है ।

लक्ष्मी – चलो उठो । घर चलेंगे । मैं बेबी को देखने के लिए बेचैन हो उठी हूं ।

अनोखे – लो । यह उठ गया । और यह उठा लिया सामान । चलो । ··· · वाह रे अनोखेलाल और चांदनी रात की सैर अपनी बीवी के साथ ।······

(एकांत सड़क पर केवल चप्पल और बूट की आवाजें)

चूहे

पात्र

अनोखेलाल, पोपटलाल, सेठजी, मुरली,
लक्ष्मी ।

(सुबह आठ बजे अनोखेलाल अपने मकान की गैलरी में बैठे हैं। सामने वाले मकान की गैलरी में पोपटलाल आते हैं।)

पोपटलाल – नमस्ते अनोखेलाल जी।

अनोखेलाल – नमस्ते पोपटलाल जी। आज आप बहुत दिनों के बाद दिख रहें हैं अपनी गैलरी मे।

पोपटलाल – हां, जरा दिल्ली चला गया था। आपकी गैलरी मे धूप अच्छी आ जाती है। इन दिनों धूप का जायका कुछ और ही होता है।

अनोखेलाल – हां, सो तो है।

पोपटलाल – कल रात आपके यहां क्या खटपट-खटपट चल रही थी बड़ी रात तक।

अनोखेलाल – अरे साहब, चूहों ने बड़ा परेशान कर रखा है। उनको भगा रहा था।

पोपटलाल – ओह, चूहों को भगा रहे थे। मैं तो समझा······

अनोखेलाल – हम दोनो ऐसे तो नहीं हैं पोपटलालजी। लक्ष्मी से मैं लड़ता जरूर हूँ लेकिन··

पोपटलाल – चूहों के लिए पिंजरे क्यों नहीं रखते ? बड़ा आसान तरीका है उनसे छुटकारा पाने का।

अनोखेलाल – आसान अब नहीं रहा पोपटलालजी। लगता है आदमी की तरह चूहे भी चालाक हो गए हैं। वे पिंजरे से बचकर अपना काम ऐसे ही कर गुजरते हैं जैसे हममें से कुछ लोग कानून को धता बताकर अपना उल्लू सीधा करते हैं। मेरा तो ख्याल है चूहे जैसी चालाक कोई जाति नहीं है।

पोपटलाल – ख्याल क्या तजुर्बा ही कहिए न।

अनोखेलाल – तमाम दीवारों को बिल बना-बनाकर पोला कर दिया है। बस मारने दौड़िए तो अपने किलों मे मेरा मतलब है अपने

बिलों में जाकर छिप जाते हैं ।

पोपटलाल – सीमेंट से बंद कर दीजिए सारे बिलों को ।

अनोखेलाल – अरे साहब, आप कोई भी उपाय कीजिए। ये अपनी गुस्ताखी से बाज नहीं आते ।

पोपटलाल – दूसरा उपाय है बिल्ली । बिल्ली पाल लीजिए एक ।

अनोखेलाल – अरे साहब, बिल्लियों का भी आजकल कोई भरोसा नहीं। कहते हैं किसी बड़े चूहे के सामने उसकी भी कुछ नहीं चलती।

पोपटलाल – तो बस एक ही उपाय बच जाता है । और वह है जहर मिलाकर आटे की गोलियां रख दीजिए रात को इधर-उधर । खा लेंगे और मर जायेंगे अपने आप ।

अनोखेलाल – हमारी श्रीमती जी को यह पसंद नहीं ।

पोपटलाल – हां । सरकार का हुकुम तो मानना ही चाहिए ।

अनोखेलाल – कल रामजीलाल सेठ के बारे में क्या चर्चा थी नगर में ।

पोपटलाल – अरे वाह, आपको नहीं मालूम उनका एक ट्रक देखा गया चावल का ?

अनोखेलाल – चावल का ट्रक । तो क्या रामजीलाल चोरी का धंधा भी करते हैं ? इतना बड़ा सेठ और चोरी का धंधा ।

पोपटलाल – कुछ न पूछो, जो जितना बड़ा है उतना ही चोर है ।

अनोखेलाल – इन चोरों को तो कड़ा दंड दिया जाना चाहिए ।

पोपटलाल – लेकिन सवाल है कि कौन दे । पुलिस ने उनका मामला दर्ज ही नहीं किया । पुलिस का भी आजकल कोई भरोसा नहीं रहा । बड़ों के सामने वह झुक जाती है ।

अनोखेलाल — लेकिन मैंने सुना है कि इन्सपेक्टर रामसिंह बड़ा सख्त है ।

पोपटलाल – हाँ है । लेकिन किसी का डंडा तब चले न जब तक तुम खुले में हो । तुम यदि बिल में-यानी किसी की ओट में छिप जाओ तो किसी का क्या बस चले ।

अनोखेलाल – किसी की ओट, मतलब ?

पोपटलाल – रामजीलाल सेठ हमारे एम० एल० ए० हरदयालजी के रिश्तेदारों में से हैं ।

अनोखेलाल – ओह् ।

लक्ष्मी – (आकर) अरे, मैं कहती हूँ यहाँ बैठे-बैठे गप्पें ही करते रहोगे ? नहाना-धोना नहीं है ?

अनोखेलाल – लगता है पानी गरम हो गया और शायद तुम भी ।

लक्ष्मी – हाँ, मैं तो हमेशा ही गरम होती रहती हूँ । गरम न होऊँ तो तुम बरफ की तरह जमे हुए बैठे ही रहो ।

अनोखेलाल – अच्छा अच्छा, उठता हूँ, और जाता हूँ नहाने के लिए । (अंदर आने पर) अरे, यह क्या धोती की यह क्या हालत हो गई ? ओफ, चूहों ने काट दिया इसे तो ।

लक्ष्मी – क्या धोती को चूहों ने काट दिया ?

अनोखेलाल – देखो न कैसा सत्यानाश कर दिया । खरीदकर अभी पूरा महीना भी नहीं हुआ है । न मालूम किस जनम की दुश्मनी निभा रहे हैं ये चूहे ।

लक्ष्मी – तुम नहाओ, मैं तबतक इसे सी देती हूँ ।

अनोखेलाल – हम कितना ही सीते रहें, ये बराबर काटते रहेंगे । क्योंकि काटना, दूसरों को नुकसान पहुँचाना इनका धर्म है ।

लक्ष्मी – कपड़े सूख जाने पर मैं संदूक में रख दिया करूँगी ।

अनोखेलाल – तुम संदूक में रखो या कहीं भी । इन्हें काटना होगा तो ये संदूक में भी छेद कर देंगे । इनका तो बस एक ही उपाय है । जहर की गोलियाँ खिलाकर खत्म कर दो ।

लक्ष्मी – रहने दो । मुझे ऐसा हत्या का काम जरा भी पसन्द नहीं ।

अनोखेलाल – भले ही फिर ये हमारी जान पर उतर आएँ । इन दुष्टों को बस दया करके ही हमने बढ़ने दिया है । सोचो लक्ष्मी, सोचो । क्या करते हैं ये हमारे लिए ? दूसरों की मेहनत पर जीनेवाले, दूसरों को हमेशा नुकसान पहुँचानेवाले इनको

खत्म कर देना पाप नहीं है। लेकिन तुम मानो तब न।

लक्ष्मी – नुकसान, नुकसान। कितना करेंगे नुकसान?

अनोखेलाल – बस यही सोचकर आदमी चुप बैठ जाता है। लक्ष्मी, कभी-कभी तो मन मे आता है कि किसी दिन इनको एक-एककर गोली से उड़ा दूं-बंदूक की गोलियों से।

लक्ष्मी – शिकार का ऐसा ही शौक है तो जाओ न किसी जंगल मे शेर को मारने।

अनोखेलाल – लक्ष्मी, शिकार के लिए आज जंगलों मे जाने की जरूरत नही है। जंगलो से भयानक प्राणी तो आज शहरों मे ही बसते हैं। इनको साफ कर दो तो कितने ही भय, कितनी ही चितायें दूर हो जायें।

लक्ष्मी – तुम समझते हो इन चूहों की वजह से ही हम आज इतने भयग्रस्त और चिंतित हैं?

अनोखेलाल – भयग्रस्त·· चिंतित। (कुछ सोचकर) हां, हां लक्ष्मी। चूहे··· इन शहरी चूहों की वजह से आज हम भयग्रस्त हैं, चिंतित हैं।

लक्ष्मी – अच्छा अच्छा। अब तुम जल्दी नहा लो। नहाकर बाजार से सामान लाना है तुम्हे। इधर मैं धोती सी देती हूं तबतक।

अनोखेलाल– अच्छा, यह चला।···हर हर गंगे हर हर · हर हर गंगे हर हर ओहो आहा·· ओहो आहा··· लक्ष्मी, नहा लिया मैंने। लाओ मेरे कपड़े। हां, अब वह थैली और पैसे भी दे दो। बाजार जाऊं। (जाते हैं।)

सेठजी – आइए आइए अनोखेलालजी।

अनोखेलाल – यह रही सामान की फेहरिस्त। फौरन बांध दीजिए सामान।

सेठजी – अभी लीजिए।·· घी। अच्छा यह रहा घी। ये रही पिसी हुई मिर्च और हल्दी। और क्या चावल·· कितना चार सेर? ये रहा चावल।

अनोखेलाल – सेठजी, यह क्या है । घी में तो मिलावट मालूम होती है । मिर्च और हल्दी भी असली नहीं लग रही है ।

सेठजी —हैं—हैं ...।

अनोखेलाल – और यह ...यह चावल में कितने कंकड़ हैं ।

सेठजी – हैं-हैं, कैसी बात करते हैं अनोखेलाल जी ।

अनोखेलाल – चावल मे कंकड़ मिलाकर काट रहे हो तुम साफ-साफ हमारी जेब को । घी में और दूसरी चीजों में मिलावट करते हुए तुम हमारी तन्दुरुस्ती का जरा भी ख्याल नहीं करते । सेठजी, तुम चीजों में मिलावट नहीं करते यह । हमारी तन्दुरुस्ती से खिलवाड़ करते हो-उसे नोचते और चबाते हो ।

सेठजी – हैं-हैं, अनोखेलालजी, आज आपको क्या हो गया है ?

अनोखेलाल – सेठजी, दूसरों को काटना और नुकसान पहुँचाना तुम्हारा धर्म है, नहीं ? जानते हो कानून के शिकंजे में कभी पकड़े नहीं जा सकोगे । लाओ, मेरी फेहरिस्त वापस कर दो । मैं दूसरी जगह से खरीदूँगा सामान ।

सेठजी — (जरा नाराज होकर) – क्या विदेश जाकर खरीदोगे ?

अनोखेलाल – जहन्नुम मे जाऊँ, तुम्हे इससे क्या ? (जाते हैं ।)

सेठजी – चला गया । खरीदेगा तो इसी नगर से–कहीं इसी देश से । (शाम को अनोखेलाल आफिस से घर लौटते हैं ।)

अनोखेलाल – लक्ष्मी, क्या चाय तैयार हो गई ?

लक्ष्मी – आफिस से आते देर नही हुई और पूछते हो चाय तैयार हो गई ।

अनोखेलाल – अरे, यह क्या, ये गेहूं कैसे फैले है ?

लक्ष्मी – कुछ न पूछो । साफ करने के लिए बोरे में से निकालने गई तो देखती हूँ बोरे मे पीछे से चूहों ने छेद ही छेद कर दिए हैं । देखो, ये देखो ।

अनोखेलाल – ओह, बोरे की तो चलनी करके रख दी है । भरे हुए बोरों

पर भी अब ये दाँत मारना सीख गए हैं। बोरे नहीं हमारा पेट ही काटते हैं ये और क्या । (बाहर दरवाजा खटखटाता है।) कौन है भाई, आ जाओ । ओह, मुरली तुम । आओ, आओ बैठो ।

मुरली – नमस्ते बाबूजी, नमस्ते मौसी ।

लक्ष्मी – नमस्ते । अच्छे तो हो ? तुम बैठो, मैं अभी आई चाय लेकर । (जाती है।)

अनोखेलाल – सुना है, तुम्हें इण्टरव्यू के लिए कॉल आया है किसी नौकरी के लिए ।

मुरली – ठीक सुना आपने । इंटरव्यू आज ही हुआ ।

अनोखेलाल – नतीजा कब लगने को है ?

मुरली – नतीजा आज ही घोषित हो गया बाबूजी । मेरा चुनाव नहीं हो सका ।

अनोखेलाल – नहीं हो सका । तो फिर किसका हुआ ?

मुरली – हमारे नेता लोग हर जगह अपनी टाग अड़ाते हैं। जिस उम्मीदवार को चुना गया उसके लिए हमारे एम० एल० ए० हरदयाल जी ने पहले से ही कह रखा था।

अनोखेलाल – क्या तुम्हारी तरह उसका भी बी० काम० में फर्स्ट क्लास है ?

मुरली – नही थर्ड क्लास है। वैसे उसके लिए नौकरी की इतनी जरूरत भी नही है जितनी मेरे लिए है ?

अनोखेलाल – इन नेताओं को क्या करूं । अब ये तुम जैसे पूरी योग्यता से भरे हुए लोगों पर भी दांत मारना सीख गए हैं। अपने अयोग्य के लिए किसी योग्य का पेट काटना कोई अच्छी बात है ?

लक्ष्मी – (चाय की ट्रे के साथ आती है) लो मुरली, चाय

लो ।............अरे, तुम्हारे पैर को यह क्या हो गया है ?

मुरली – चूहे ने काटा है मौसी । नींद में अंगूठे का मांस नोचकर ले गए । काफी गहरा घाव कर दिया है ।

लक्ष्मी – अरे अरे........ ।

अनोखेलाल – बड़ी हरामखोर जात है चूहों की । इस सफाई से काटते है कि जरा भी पता नहीं पड़ पाता ।

मुरली – (*चाय पी लेने के बाद*) *मौसी, मां ने कहा है बहुत* दिन हो गए तुम आई नहीं । तुम्हें बुलाया है ।

लक्ष्मी – अच्छी बात है । कह देना अगले इतवार को आऊँगी ।

मुरली – अच्छा अब मैं चलता हूँ । नमस्ते मौसी, नमस्ते बाबूजी ।

(जाता है ।)

अनोखेलाल – बड़ा बुरा हुआ बेचारे का । इन्टरव्यू में नाकामयाब रहा । कर रहा था हरदयालजी ने अपने किसी उम्मीदवार की सिफारिश कर दी बोर्ड को । थर्ड–क्लास था वह फिर भी चुन लिया गया ।

लक्ष्मी – लेकिन बोर्डवालों ने क्यों मानी उनकी बात । बोर्डवालों को क्या अपना दिमाग नहीं है, अपनी सत्ता नहीं है ।

अनोखेलाल – सब कुछ होता है लक्ष्मी । लेकिन नेता नाम का प्राणी आदमी के दिमाग और दिल को इस तरह से नोचता है कि पता ही नहीं पड़ पाता कि उसे नोचा जा रहा है और जब पड़ता है तो बस कराहता रह जाता है ।

लक्ष्मी – अच्छा अब तुम सब्जी खरीद लाओ बाजार से । मैं रसोई की तैयारी करूं ।

अनोखेलाल – अच्छा जाता हूँ । (जाते हैं ।)

(रात को आठ बजे ।)

अनोखेलाल – *ओह, अभी आठ ही बजे हैं । आज जल्दी निपट गए* खाने से ।

लक्ष्मी – हां, चलो कहीं घूम आएं ।

अनोखेलाल – नहीं । मैं तो अब कहीं नहीं जाऊंगा लक्ष्मी । आराम-कुर्सी में पड़कर उपन्यास पढ़ूंगा ।

लक्ष्मी – बड़े आलसी होते जा रहे हो आजकल ।

अनोखेलाल – कुछ भी कह लो । बहुत दिनों से मेरा एक उपन्यास अधूरा पड़ा हुआ है । उसी को पढ़ूंगा । ....अरे, यह क्या इस आले में भी पहुंच गए क्या चूहे ? देखो लक्ष्मी, देखो, इस उपन्यास की चूहों ने क्या हालत कर दी है । कोई चीज नहीं बची है जहां ये न पहुंचते हों ।

लक्ष्मी – तुम्हें उस आले मे रखनी ही नहीं चाहिए थी अपनी पुस्तक ।

अनोखेलाल – ऐसा नहीं करना चाहिए था वैसा नहीं करना चाहिए था । आखिर आला हमारे घर का ही तो आला है न । चूहे हमें किसी भी तरह सुख से रहने देना नहीं चाहते । मकान है सो उसकी दीवारों को पोली बना रहे हैं, कपड़ा है तो उसे काटकर रख देते हैं, अनाज तो हमारा ये चट कर ही जाते हैं ...... और रही थोड़ी सी दिमाग और बुद्धि की चीजें उनके भी टुकड़े-टुकड़े करने मे ये नहीं चूकते ।

लक्ष्मी – जब मालूम है कि चूहों से नुकसान हो सकता है तो हमें संभलकर रहना चाहिए ।

अनोखेलाल – मेरी समझ में यह नहीं आता कि उन दो-चार चूहों के पीछे हम अपने को बदलें या हम अपने लिए उन चूहों को । अपने को बदलें तो मतलब हुआ प्रधानता चूहों की है ।

लक्ष्मी – अच्छा तुमने मनोज के पत्र का जवाब दे दिया है या नहीं ?

अनोखेलाल – कहां दिया है । मेरी तो समझ में नहीं आता क्या जवाब दूं ।

लक्ष्मी – बेचारा नौकरी के लिए हर जगह कोशिश कर रहा है।

अनोखेलाल – मैंने दो-चार जगह बात की थी लेकिन कोई सिलसिला नहीं जम रहा है।

लक्ष्मी – बेचारे की अच्छीखासी नौकरी जाती रही। कॉलेज के अध्यक्ष भी कैसे अजीब हैं, इसका विषय ही खतम कर दिया।

अनोखेलाल – कोई नए अध्यक्ष बने हैं। पढ़े-लिखे होते तो ऐसा न करते। *जिस जाति की संस्था है उसी जाति के कोई* धनीमानी व्यक्ति हैं। बचत के नाम पर संस्कृत की पढ़ाई बन्द कर दी।

लक्ष्मी – मनोज ने यदि संस्कृत की जगह और कोई विषय लिया होता तो आज उस पर यह नौबत न आती।

अनोखेलाल – मेरी समझ मे यह नहीं आता कि कुछेक सनकियों के पीछे हम अपने को बदलें या अपने लिए इन सनकियों को।

लक्ष्मी - मैं तो कहती हूँ संस्कृत कॉलेज मे रखा ही न जाए।

अनोखेलाल – क्यो न रखा जाए। आखिर ये कालेज हमारे देश के हैं न। लक्ष्मी, तुम संस्कृत की बात करती हो, बचत के नाम पर ऐसे लोग किसी भी विषय पर दांत चला देते हैं—फिर संस्कृत हो, या हिन्दी। हां, स्टील के केबिन में बन्द अंग्रेजी इनकी पहुँच के बाहर है।

(इसी समय अन्दर किसी बर्तन के गिरने की आवाज होती है।)

अनोखेलाल – ओह, आगए आगए कमबख्त। लक्ष्मी, देखो तो मेरा डंडा कहाँ है।

लक्ष्मी – बस बस रहने दो। डंडे से कुछ नहीं होने जाने वाला है।

अनोखेलाल – कैसे नहीं। आज मैं उनकी ताक में बैठूंगा और एक–

बिगड़ा । खुद अपना ही नुकसान कर बैठे । मैंने तो कह दिया है तुम ऐसी ही चोट करते रहे तो एक दिन अपनी नौकरी से ही हाथ धो बैठोगे । कोई हो तो जरूर बताइए मकान ।

अनोखेलाल – जरूर, जरूर बताऊँगा ।

पोपटलाल – चूहों के लिए एक नया पिंजरा निकला है । मुंशीलालजी को तो आप जानते ही हैं । मेरे रिश्तेदार हैं वह । उन्हीं के यहाँ है वह पिंजरा ।

अनोखेलाल – तो क्या मुंशीलालजी आपके रिश्तेदार हैं । वह तो बड़े मँजे हुऐ नेता है । सरकार के खिलाफ जब भी कोई बात कहते हैं तो वह चक्कर में आ जाती है । आप जरूर लाकर दीजिये हमें पिंजरा ।

(रात को दस बजे ।)

लक्ष्मी – तुमने पिंजरा रख तो दिया है, लेकिन इससे कुछ होनेजाने वाला नहीं है ।

अनोखेलाल – लक्ष्मी, यह पिंजरा जनता की छोटी आवाज की तरह नहीं है जिसका असर हो नहीं होता । पिंजड़े की पकौड़ियों की महक देखो यहाँ तक आ रही है । (पिंजरे में चूहा चलने की आवाज ।) ओहो, लक्ष्मी, देखो तो,देखो तो पिंजरे में चूहा फँस गया है । ओह, बड़ावाला चूहा है । इसी नेता पर तो मेरी नजर थी । सुबह अच्छी तरह खबर लूँगा इसकी ।

लक्ष्मी – अच्छा अच्छा । अब चुपचाप सो जाओ ।

(दूसरे दिन सुबह)

अनोखेलाल – लक्ष्मी लक्ष्मी, देखो तो और भी चूहे आ फँसे हैं । . अरे, लेकिन वह मोटा चूहा क्या हुआ ? निकल भागा क्या?

लक्ष्मी – ऐसा कैसा पिंजरा है ?

अनोखेलाल – मेरा ख्याल है पिंजरे में कोइ दोष नहीं है । मोटा चूहा

ताकतवर था इसलिए निकल भागा । ये दुबले-पतले हैं सो भाग नही सके । वाह, जिसको सजा मिलनी चाहिए वह तो साफ साफ निकल भागा । अच्छा पिंजरे को मैं गैलरी में रख देता हूं । शाम को छोड़ आऊँगा चूहों को । (गैलरी में ।) पोपटलाल, देखो तो इस पिंजरे में कितने चूहे पकडे गए हैं ।''''''अरे क्या बात है ? सुबह सुबह ही बड़े उदास मालूम होते हो । जरूर कोई खास बात हो गई है ।

पोपटलाल – क्या सुनाऊँ । आज सुबह सुबह इनकमटैक्स वालों का नोटिश आ धमका है ।.....अरे, देखो तो उधर पिंजरे मे से एक चूहा निकल भागने की कोशिश कर रहा है ।

अनोखेलाल – नही निकल पाएगा । निकल भागने के लिए चूहे को मोटा होना चाहिए—मोटा ।

पोपटलाल – सच मोटा ही होना चाहिए ।



अनोखेलाल खाना बनाते हैं.....

अनोखे – यह क्या दाल है, यह सब्जी है ? समझ में नहीं आता आजकल तुम्हें क्या हो गया है लक्ष्मी ? मन लगाकर खाना ही नही बनाती ।

लक्ष्मी – और कैसे बनाया जाता है खाना ? भला मैं कौन सी कोर-कसर रखती हूं ? मैं कहती हूं, खाने को लेकर यह रोज की चखचख अच्छी नही लगती मुझे ।

अनोखे – कोई बात सही-सही कहो तो तुम्हें इसी तरह बुरा लगता है।

लक्ष्मी – बुरा कैसे न लगे ? कोई मरखपकर काम करे और तिस पर भी उसमें खामियां निकाली जायें । भला यह भी कोई बात हुई । खुद बनाकर देखो तब पता पड़े खाना बनाना क्या होता है ।

अनोखे – तो क्या तुम समझती हो खाना बनाना तुम्ही को आता है मुझे नही ? आजतक कभी बनाया नही इसलिए इस भूल में न रहो कि मैं कुछ जानता ही नही ।

लक्ष्मी – अपने हाथ का खाना कैसा ही बने अच्छा ही लगता है मर्दों को । औरतें बेचारी कितना ही मन लगाकर बनायें मर्द उसमें कुछ न कुछ खामी जरूर निकालते हैं ।

अनोखे – मेरे हाथ का एक बार खाओगी तो खुद बनाना भूल जाओगी । जिंदगी में नहीं खाया होगा ऐसा खाना ।

लक्ष्मी – चलो रहने दो । सिर्फ बातें हैं ये ।

अनोखे – सिर्फ बातें नही, यथार्थ है यथार्थ । अच्छा कल पर रही । इतवार है कल । सुबह मैं ही खाना बनाऊंगा । फिर देख लेना सिर्फ बातें ही नहीं करता हूं । दाल-सब्जी तो ऐसी बनाऊं कि तुम खाती ही चली जाओ । बस तुम चुप बैठी रहना । बीच में बोलने की जरा भी जरूरत नहीं ।

लक्ष्मी – मैं क्यों बोलूं भला ? मैं भी तो देखूं कैसे बनाते हो तुम ।

अनोखे – अच्छा इसका फैसला कौन करेगा कि मेरी बनाई हुई चीजें

पात्र

मनोहरलाल, भगवती, बच्चा
लक्ष्मी, गिरा शर्मा, विमला

अनोखे – यह क्या दाल है, यह सब्जी है ? समझ में नहीं आता आजकल तुम्हे क्या हो गया है लक्ष्मी ? मन लगाकर खाना ही नही बनाती।

लक्ष्मी – और कैसे बनाया जाता है खाना ? भला मैं कौन सी कोर-कसर रखती हूँ ? मैं कहती हूँ, खाने को लेकर यह रोज की चखचख अच्छी नही लगती मुझे।

अनोखे – कोई बात सही-सही कहो तो तुम्हें इसी तरह बुरा लगता है।

लक्ष्मी – बुरा कैसे न लगे ? कोई मरखपकर काम करे और तिस पर भी उसमें खामियाँ निकाली जायें। भला यह भी कोई बात हुई। खुद बनाकर देखो तब पता पड़े खाना बनाना क्या होता है।

अनोखे – तो क्या तुम समझती हो खाना बनाना तुम्ही को आता है मुझे नही ? आजतक कभी बनाया नहो इसलिए इस भूल मे न रहो कि मैं कुछ जानता ही नही।

लक्ष्मी – अपने हाथ का खाना कैसा ही बने अच्छा ही लगता है मर्दों को। औरतें बेचारी कितना ही मन लगाकर बनायें मर्द उसमें कुछ न कुछ खामी जरूर निकालते हैं।

अनोखे – मेरे हाथ का एक बार खाओगी तो खुद बनाना भूल जाओगी। जिंदगी में नहीं खाया होगा ऐसा खाना।

लक्ष्मी – चलो रहने दो। सिर्फ बातें हैं ये।

अनोखे – सिर्फ बातें नहीं, यथार्थ है यथार्थ। अच्छा कल पर रही। इतवार है कल। सुबह मैं ही खाना बनाऊँगा। फिर देख लेना सिर्फ बातें ही नहीं करता हूँ। दाल-सब्जी तो ऐसी बनाऊँ कि तुम खाती ही चली जाओ। बस तुम चुप बैठी रहना। बीच में बोलने की जरा भी जरूरत नहीं।

लक्ष्मी – मैं क्यों बोलूं भला ? मैं भी तो देखूं कैसे बनाते हो तुम।

अनोखे – अच्छा इसका फैसला कौन करेगा कि मेरी बनाई हुई चीजें

बेहतरीन बनी हैं । क्योंकि अच्छी खासी होकर भी तुम कह दोगी कितनी रद्दी हैं ।

लक्ष्मी – गोराचाची के यहां एक-एक कटोरा दाल-साग दे आऊंगी ।

अनोखे – हां, यह बात मानी । लेकिन गोराचाची से यह न कहना कि चीजें मेरी बनाई हैं । नही तो औरतें औरतों का पक्ष फौरन लेती हैं ।

लक्ष्मी – अच्छी बात है । नही कहूंगी ।

(दूसरे दिन—)

लक्ष्मी – उठो, सात बज गए । कब तक सोते रहोगे ?

अनोखे – ओह, उठता हूं । क्या चाय तैयार हो गई ?

लक्ष्मी – नही । आज चाय भी तुम ही बनाओगे । आज सुबह से ही चौके के मालिक तुम्ही ।

अनोखे – अच्छी बात है । लेकिन यह पहले ही बता दिया होता तो मैं जल्दी न उठता ?··· स्टोव्ह कहां है ?··अच्छा, यह रहा ।··· और माचिस ?···अच्छा, यह रही माचिस ।··· यह स्टोव्ह है या तमाशा ? पंप किए जा रहा हूं तेल ही ऊपर नही चढ रहा है । अच्छी चीजों को भी खराब करके रख दिया है तुमने ।·· पिन, पिन कहां रही?···धत्तेरे की पिन भी टूट गई ।··· लक्ष्मी, दूसरी पिन भी है या नही ?···रहने दो आने लगा तेल ।·· बस अब दो मिनट मे बनी जाती है चाय ।··· ·······अच्छा तो तुम महारानी जैसी यहां बैठी अखबार पढ रही हो । लीजिए, रानी साहिबा चाय ।

लक्ष्मी – बस एक कप चाय बना दी देने लगे ताने । खाना बनाओगे तो न जाने कितने ताने सुनाओगे ।·· उफ, यह चाय है या उबला हुआ पानी ? अरे, इसमें तो मिट्टी के तेल की दुर्गन्ध आ रही है ।

अनोखे – क्यों अच्छी चाय को बदनाम कर रही हो ।

लक्ष्मी – तुम पियो यह । मैं गोराचाची के यहाँ जाकर पी लूंगी । (जाती है ।)

अनोखे – सचमुच, चाय मे दुर्गन्ध तो आ रही है । किसी तरह पी लेता हूँ ।'' अच्छा, अब उठूं और चूल्हा सुलगाऊँ । पहले नहाने के लिए पानी गर्म कर लू और फिर दाल रख दूं गलने के लिए । चाय भले ही खराब बन गई हो खाना ऐसा बनाऊंगा कि बस '' '' ।

(कुछ देर बाद—)

अनोखे – देखो लक्ष्मी, मैंने नहा लिया है । तुम्हारे लिए गरम पानी रख दिया है गुसलखाने में । दाल चूल्हे पर गल रही है । चाकू कहां है सब्जी काट लूँ ।

लक्ष्मी – चाकू अलमारी के नीचे है । काम हो जाने पर बंद करके वहीं रख देना नही तो बेबी के हाथ पड़ जाएगा ।

अनोखे – हाँ हाँ । मुझे सिखाने की जरूरत नही है ।'''आलू को पहले धो लूँ फिर काटू । काटने के बाद धोने से विटामिन जाते रहते हैं । हाँ, अब काटता दूँ ।'''उफ, कितना तेज है यह चाकू । जरा भी मुरव्वत नही की इसने और मेरी उंगली को काट मारा । कमबख्त उंगली कटी वह भी दाहिने हाथ की ।

लक्ष्मी – अरे यह क्या, यह क्या हो गया, यह खून कैसा?

अनोखे – तुम्हारे चाकू की कारगुजारी है और क्या ?

लक्ष्मी – ठहरो, ठहरो, मैं उसे पट्टी बांध देती हूं गीली ।'''लाओ, सब्जी मैं काटे देती हूँ ।

अनोखे – रहने दो । मैं काट लूंगा ।

लक्ष्मी – अच्छा, वह बाहर नल पर बाल्टी भर गई है । अंदर तुम लाते हो या मैं लाऊं ?

अनोखे -- रहने दो मैं ही लाता हूँ । (जाते हैं और फिर बाल्टी के

साथ धड़ाम से गिरते हैं ।)

लक्ष्मी – अरे, क्या हुआ गिर पड़े क्या ?

अनोखे– (अंदर से ही) गिर नहीं पड़ता तो क्या (आते हैं ।) नल के नीचे की जगह कितनी रिसकनी बनी हुई है । कभी ब्रश से धोती भी हो ?

लक्ष्मी – ओहो, सभी कपड़े गीले हो गए । बदल डालो । चोट तो नहीं आई कहीं ?

अनोखे – आई भी हो तो अब कहने से क्या लाभ ?·········लाओ, पंचा लपेट लेता हूँ । (अन्दर जाते हैं और पंचा लपेट कर आते हैं ।)

लक्ष्मी – दाल नीचे उतार लो, वह गल गई होगी ।

अनोखे – ठीक है । ·······अच्छा, अब आटा कौन से डिब्बे में है ?

लक्ष्मी – तीसरे वाले डिब्बे में ।

अनोखे – ठीक है मिल गया ।

कुछ देर बाद—

अनोखे – उफ़, इस चूल्हे को क्या हो गया ? ऐन रोटियों के समय बुझ पड़ता है । (फू फू करते हैं ।) उफ़, तमाम धुँआ ही धुँआ भर रहा है कमरे में । (फिर फू फू करते हैं ।) क्या हो गया है इन लकड़ियों को ? ऊपर से तो बिलकुल सूखी मालूम पड़ती हैं । ·· ·····ओह, इस तरह आंखों में धुँआ भरता रहा और पानी बहता रहा तो रोटियाँ कैसे बना पाऊँगा मैं ?······कमबख्त ये चूल्हा, अबतक ठीक जल रहा था इसी समय क्या हो गया इसे ? मिट्टी का तेल उड़ेलूँ । (तेल डालने से जोर की फर्र की आवाज होती है ।) ओह, कितनी ऊँची लपट । पंचा जलते जलते बच गया । ·······अब तो जलेगा चूल्हा ठीक तरह से । (तवे पर रोटी डालने की आवाज और इसी समय बाहर

दरवाजे पर दस्तक ।) लक्ष्मी, देखो तो बाहर कौन है ? (फिर दस्तक) अरे, कहाँ चली गई यह ? मैं ही जाकर देखता हूँ कौन है । (दरवाजा खुलता है) कौन, कौन चाहिए भाई तुम्हें ?

(अनोखे और अजनबी अंदर आते हैं ।)

अजनबी – देखो महाराज, अनोखेलालजी यहीं रहते हैं क्या ?

अनोखे – अच्छा अच्छा, बोलो क्या काम है आपका अनोखेलाल-जी से ।

अजनबी – तुम उनके यहाँ रसोई बनाते हो ?

अनोखे – बताओ तो क्या काम है ?

अजनबी – तुम तो अनोखेलालजी को भेज दो । तुम्हें कैसे बतलाऊँ ।

अनोखे – नहीं बतला सकते तो जाओ । अनोखेलालजी घर में नहीं हैं । (अजनबी जाता है ।) अजीब आदमी है । मुझे रसोई वाला महाराज ही समझ बैठा ।······ ओह, तवे पर यह रोटी जल- गई न इस चक्कर में । अरे, चीमटा कहाँ गया ?······· उफ़, उंगलियां जल गईं । रोटी एकदम हाथ से उतार दी । ओह, इतनी जलन ।········ स्याही उड़ेल लेता हूँ । उससे ठंडक पहुँचेगी । ······ चीमटा यहाँ इस कोने में पडा है । कोई चीज जगह पर रखती ही नहीं है लक्ष्मी । अब फौरन बना डालता हूँ रोटियाँ । बहुत देर हो गई । (दरवाजे पर दस्तक) अब कौन आ गया ? क्या आज खाना बना पाऊँगा या नहीं ? ···कहो भाई कौन है । (दरवाजा खोलते हैं ।) ओह, मिस शर्मा तुम ?

मिस शर्मा – हाँ मैं । कहो मकान की सफाई चल रही है क्या ? यह कैसा हुलिया बना रखा है ? पंचा पहने हुए हो और बालों पर यह कितनी गर्द जमी हुई है, शायद राख है ।

अनोखे – कुछ नहीं, कुछ नहीं । आओ, आओ ।

साथ धड़ाम से गिरते हैं।)

लक्ष्मी – अरे, क्या हुआ गिर पड़े क्या ?

अनोखे– (अंदर से ही) गिर नहीं पड़ता तो क्या (आते हैं।) नल के नीचे की जगह कितनी रिसकनी बनी हुई है। कभी ब्रश से धोती भी हो ?

लक्ष्मी – ओहो, सभी कपड़े गीले हो गए। बदल डालो। चोट तो नहीं आई कहीं ?

अनोखे – आई भी हो तो अब कहने से क्या लाभ ?·········लाओ, पंचा लपेट लेता हूँ। (अन्दर जाते हैं और पंचा लपेट कर आते हैं।)

लक्ष्मी – दाल नीचे उतार लो, वह गल गई होगी।

अनोखे – ठीक है।·········अच्छा, अब आटा कौन से डिब्बे में है ?

लक्ष्मी – तीसरे वाले डिब्बे में।

अनोखे – ठीक है मिल गया।

कुछ देर बाद—

अनोखे – उफ़, इस चूल्हे को क्या हो गया ? ऐन रोटियों के समय बुझ पड़ता है। (फू फू करते हैं।) उफ़, तमाम धुँआ ही धुँआ भर रहा है कमरे मे। (फिर फू फू करते हैं।) क्या हो गया है इन लकड़ियों को ? ऊपर से तो बिलकुल सूखी मालूम पड़ती हैं।······ओह, इस तरह आंखों में धुँआ भरता रहा और पानी बहता रहा तो रोटियां कैसे बना पाऊँगा मैं ?······कमबख्त ये चूल्हा, अबतक ठीक जल रहा था इसी समय क्या हो गया इसे ? मिट्टी का तेल उड़ेलूं। (तेल डालने से जोर की फर्र की आवाज होती है।) ओह, कितनी ऊँची लपट। पंचा जलते जलते बच गया।·········अब तो जलेगा चूल्हा ठीक तरह से। (तवे पर रोटी डालने की आवाज और इसी समय बाहर

दरवाजे पर दस्तक ।) लक्ष्मी, देखो तो बाहर कौन है ? (फिर दस्तक) अरे, कहाँ चली गई यह ? मैं ही जाकर देखता हूँ कौन है । (दरवाजा खुलता है) कौन, कौन चाहिए भाई तुम्हें ?

(अनोखे और अजनबी अंदर आते हैं ।)

अजनबी – देखो महाराज, अनोखेलालजी यहीं रहते हैं क्या ?

अनोखे – अच्छा अच्छा, बोलो क्या काम है आपका अनोखेलाल—जी से ।

अजनबी – तुम उनके यहाँ रसोई बनाते हो ?

अनोखे – बताओ तो क्या काम है ?

अजनबी – तुम तो अनोखेलालजी को भेज दो । तुम्हें कैसे बतलाऊँ ।

अनोखे – नही बतला सकते तो जाओ । अनोखेलालजी घर में नहीं हैं । (अजनबी जाता है ।) अजीब आदमी है । मुझे रसोई वाला महाराज ही समझ बैठा ।······ ओह, तवे पर यह रोटी जल गई न इस चक्कर में । अरे, चीमटा कहाँ गया ?·········उफ, उंगलियां जल गई । रोटी एकदम हाथ से उतार दी । ओह, इतनी जलन ।········स्याही उड़ेल लेता हूँ । उससे ठंडक पहुँचेगी । ····· चीमटा यहाँ इस कोने में पड़ा है । कोई चीज जगह पर रखती ही नहीं है लक्ष्मी । अब फौरन बना डालता हूँ रोटियां । बहुत देर हो गई । (दरवाजे पर दस्तक) अब कौन आ गया ? क्या आज खाना बना पाऊँगा या नहीं ? ··कहो भाई कौन है । (दरवाजा खोलते हैं ।) ओह, मिस शर्मा तुम ?

मिस शर्मा – हाँ मैं । कहो मकान की सफाई चल रही है क्या ? यह कैसा हुलिया बना रखा है ? पंचा पहने हुए हो और बालो पर यह कितनी गर्द जमी हुई है, शायद राख है ।

अनोखे – कुछ नहीं, कुछ नहीं । आओ, आओ ।

मिस शर्मा – आफिस में आप कहते रहते हैं आती नहीं तुम। मैंने कहा आज सन्डे है इसलिए चली आई। आप फुरसत में तो हैं न ?

अनोखे – फुरसत। हां हां, बैठो न। तुम लक्ष्मी से बातें करो तब-तक मैं नहा धो लूं।

मिस शर्मा – आप इस वेश में एक फोटो निकलवाइए न अनोखेलालजी।

अनोखे – कहो, क्या मैं इस वेश मे अच्छा लगता हूं ?

मिस शर्मा – मेरा ख्याल है फैंसी-ड्रेस में आप भाग लें और रसोइए का यह वेश लें तो आपको जरूर पुरस्कार मिले।

अनोखे – लेकिन परीक्षक तुम बनो तब। नहीं तो इनाम मिल जाएगा तुम जैसी किसी मिस को।

मिस शर्मा – मेरा ख्याल है, अन्दर कुछ जल रहा है। शायद तवे पर रोटी जल रही है। क्या लक्ष्मी अंदर नहीं हैं ?

अनोखे – नहीं बुलाए देता हूं मैं उसे पड़ोस से।

मिस शर्मा – तो क्या खाना आप बना रहे हैं ?......ठीक है समझी। मैं जाती हूं। और किसी संडे को आऊंगी।

अनोखे – कम से कम चाय तो लेती जाओ।

मिस शर्मा – नहीं नहीं। अगली बार आऊंगी तो डबल ले लूंगी। अच्छा नमस्ते। (जाती है।)

अनोखे – नमस्ते।...... इसे भी आज का ही संडे मिला आने के लिए। ओह, मेरा हुलिया तो वास्तव में एक रसोइए जैसा ही हो रहा है। सामने आइने में दिख जो रहा है.......छी छी, इस भेष में देखकर मिस शर्मा ने क्या सोचा होगा। कल आफिस में किसी से चर्चा न करे, नहीं तो सभी मेरी खिल्ली उड़ायेंगे।..... दो रोटियां बेफिजूल जल गईं। (फिर तवे पर रोटी डालने की आवाज) रोटियां पूल्हे मे जाकर सीधी घड़ी की घड़ी रह

जाती हैं, फूलती क्यों नहीं ? (लक्ष्मी आती है) अरे लक्ष्मी, तुम कहाँ चली गई थी। बाहर बैठक में बैठो तुम। कोई आवाज देता है तो मुझे इसी भेष में जाना पड़ता है और लोग मुझे रसोइया समझ बैठते हैं। और यह किसके बच्चे को ले आई हो साथ ?

लक्ष्मी – शकुन्तला का है।

बच्चा – चाचाजी रोटी बना रहे हैं। चाचीजी, तुम नहीं बनाती रोटी ! मैं माँ से कहूँगा लक्ष्मीचाची के यहाँ तो चाचाजी रोटी बनाते हैं, अपने यहाँ तुम क्यों बनाती हो, पिताजी क्यों नहीं ?

अनोखे – कैसा बच्चा है यह ? (फिर खुशामद के स्वर में) बेटा, तुम सियाने हो न ?

बच्चा – हाँ, चाचाजी।

अनोखे – तो अपनी माँ से ऐसी बात न कहना।

बच्चा – मैं तो कहूँगा।

अनोखे – लक्ष्मी, तुम कैसे लड़के को अपने साथ ले आई हो। यह तमाम जगहों पर बकता फिरेगा।

लक्ष्मी – इतना क्यों डरते हो। क्या मर्द कभी खाना नहीं बनाते हैं ?

अनोखे – देखो बच्चे, हम तुम्हें गोलियाँ देते हैं। तुम यह बात कहीं किसी से न कहना।

बच्चा – फिर तो मैं नहीं कहूँगा। लेकिन मैं दस गोलियां लूँगा।

अनोखे – दस क्या मैं तुम्हें और ज्यादे देता हूँ।..........हाँ, ये लो। लक्ष्मी, अब तुम बाहर बैठो और इस लड़के को टरकाओ किसी तरह।

बच्चा – मैं खुद ही चला जाता हूं चाचाजी। (जाता है।)

अनोखे – ठीक है, जाओ जाओ। (पिछले दरवाजे पर दस्तक) अरे, अब यह पिछले दरवाजे से कौन आ रहा है ?

देखो तो ।

लक्ष्मी – अरे, यह तो गोराचाची हैं । सीधी चली आ रही हैं इधर ।

अनोखे – बाप रे । रिपोर्टर की दादी हैं । मालूम पड़ जाए तो मुहल्लेभर को खबर कर देंगी । इन्हें टरकाओ किसी तरह लक्ष्मी । मैं उधर बैठक में बैठता हूँ तबतक । (जाते हैं ।)

गोराचाची – क्या चल रहा है लक्ष्मी ?

लक्ष्मी – कुछ नही, यही अपना रोज का काम । आज बहुत जल्दी निपट गई खाना बनाकर ।

गोराचाची – नही, अभी कहाँ से । आज बहू बना रही है । फुरसत थी मुझे इसलिए तुम्हारे अखबार के लिए चली आई । तुम खाना बनाओ, इधर मैं अखबार पढ़ूँ ।

लक्ष्मी – यह रहा अखबार ।……… चलो, अब इन्हें परोस दूँ ।

गोराचाची – परोस दूँ ! क्यो, आज क्या जल्दी है ?

लक्ष्मी – अरे, आफिस जायेंगे न ।

गोराचाची – आज काहे का आफिस । आज तो इतवार है न ?

लक्ष्मी – इतवार तो है, लेकिन आजकल काम ज्यादा है इसलिए इतवार को भी आफिस जाते हैं ।

गोराचाची – अच्छा, अच्छा तो मैं अखबार घर ले जाकर पढ़ती हूँ ।

अनोखे – (प्रवेश करते हैं) अच्छा हुआ तुमने उन्हें जमने नही दिया । एकबार जम जाती तो घन्टो जमी रहती । जरा एक-दो रोटियाँ बनाता हूँ कि कोई न कोई मुसीबत आ टपकती है ।

लक्ष्मी – जल्दी बना डालो ।

अनोखे – मैं तो पाँच मिनट में बनाकर फेंक दूँ, लेकिन यह चूल्हा ठीक तरह से जले तब न । सेंकने के लिए रोटी जरा अन्दर डाली नही कि एकदम बुझ पड़ता है । (बाहर दरवाजे पर दस्तक) लो, आ गई न फिर कोई मुसीबत । जाओ

देखो, अब कौनसी मुसीबत दस्तक दे रही है। सभी को आज का ही दिन मिला है मरने के लिए। कैसे एक के बाद एक आ रहे हैं।(जाते हैं।)

लक्ष्मी – (दरवाजा खोलती है।)— ओह् विमला तुम। आओ आओ, बैठो। हां हां, यहीं बैठक मे।

विमला – क्यों, अंदर कौन है? क्या रसोइया रख लिया है खाना बनाने के लिए?

लक्ष्मी – हां, हां।

विमला – रसोइए की तो मुझे भी आवश्यता है लक्ष्मी। इधर मां आई हैं इसलिए थोड़ा आराम है। नहीं तो जरा भी फुरसत नहीं मिलती।

लक्ष्मी – हां, औरतों का काफी समय खाना बनाने मे ही निकल जाता है।

विमला – चलो, अंदर चलो, अपने रसोइये से बात करा दो न मेरे लिए।

लक्ष्मी – उठो नहीं। तुम यही रुको। मैं उसी को इधर बुला लाती हूं।

विमला – हां हां, बुला लो।

लक्ष्मी – तुम चाय पियोगी या शर्बत?

विमला – मुझे कुछ नहीं चाहिए। तुम रसोइए को तय करा दो तो मेरा बड़ा काम हो जाए।

लक्ष्मी – मैं उसे बुला लाती हूं। (जाती है।) अजीब मुसीबत है।— *(वापस आकर)*देखो, *रसोइया कहता है मुझे समय नहीं है।*

विमला – सभी रसोइए ऐसा ही कहते हैं। ठहरो मैं करती हूं बात।

लक्ष्मी – नहीं नहीं, ऐसा करोगी तो वह मेरे यहां का भी काम बंद कर देगा। वह कहता है मेरे पहचान का एक रसोइया है उसे मैं ले आऊंगा। उसे काम की जरूरत भी है।

विमला – अच्छा तो फिर ठीक है।

अनोखे – लक्ष्मी उधर बातें कर रही है तब तक मैं हलुआ और बना लेता हूँ । रोटियाँ तो जैसे-तैसे बना ली हैं । दाल-सब्जी भी तैयार है । चटनी भी बाँट ली है । हलुवा देखकर लक्ष्मी एकदम चकित हो जायेगी । असली घी का हलुवा ऐसा बनेगा ऐसा कि लक्ष्मी खाती ही जाए । हलुवा उसके पसंद की चीज है ।…हाँ, सूजी भुँज गई अच्छी तरह से । क्या अच्छी महक आ रही है । अब इसमे पिसी हुई शकर डाल दूँ । हाँ, यही है शकर । पन्द्रह चम्मच डाल देता हूँ । चम्मच छोटा नहीं हैं । इतने मे जरूर मीठा हो जाएगा ।… अब ये लो इलायची और ये लो किशमिश । बस अब तैयार हो गया हलुवा । फर्स्टक्लास । बस अब तैयार है पूरा खाना । खाना—खाना-खाना, ये औरतें समझती हैं हमारे सिवा और कोई खाना बना ही नहीं सकता । मर्द खाना बनाना जानते हो तो कोई औरत उन पर धौंस नहीं जमा सकती । सारा गरूर उतर जाए । अब यह लक्ष्मी की सहेली यही जमी रहेगी क्या । ओह, आ ही रही है लक्ष्मी । लक्ष्मी, बला टली या नहीं ?

लक्ष्मी – बड़ी मुसीबत से टली । भली औरत, कह रही थी मुझे अंदर रसोइए से मिलना है ।

अनोखे – ले आती । कोयले से मूछें बना लेता और राख की भभूत चुपड़ लेता तो पहचान न पाती । अच्छा, अब देर न करो । खाना बिलकुल तैयार है । भूख भी अब जोरों की लग आई है । बेबी को बुलाओ । कहाँ है वह इतनी देर से ?

लक्ष्मी – बेबी क्या इतनी देर तक भूखी रह सकती है । उसने खा लिया है शकुन्तला के यहाँ । वहीं खेल रही है ।

अनोखे – अच्छा, मैं थालियाँ लगाता हूँ तबतक तुम दाल-सब्जी के नमूने गोराचाची के यहाँ दे आओ परीक्षा के लिए । ये लो दोनों कटोरियाँ ।

लक्ष्मी – ठीक है दे आती हूँ। (जाती है।)

अनोखे – (उसके वापस आने पर)—दे आई ?

लक्ष्मी – हाँ। गोराचाची खाना ही खा रही थीं।

अनोखे – अच्छा, करो शुरू।

लक्ष्मी – यह क्या हलुवा भी बनाया है। ?

अनोखे – हां हाँ, खाओ न। खाकर यही कहोगी आजतक नही खाया ऐसा हलुवा।

(धड़ाम से पिछला दरवाजा खुलता है।)

लक्ष्मी – अरे, गोराचाची।

गोराचाची – (आकर) लक्ष्मी, ये कैसी दाल सब्जी है। मेरे साथ यह क्या मजाक सूझा तुम्हे ?

लक्ष्मी – क्या, क्या हो गया चाची ?

गोराचाची – अरे, क्या डाला है इन दाल-सब्जियो में ? मुँह मे डालते ही थूक देनी पड़ी। लगता है पत्थर पीसकर डाल दिया है। देखो, बड़ेबूढ़ों के साथ ऐसा मजाक करना अच्छा नहीं। कहे देती हूं। (जाती हैं।)

लक्ष्मी -- जरूर कोई बात है, वरना चाची ऐसी नाराज होती नही हैं।…… अरे इनमें तो सचमुच पिसा हुआ पत्थर डाल दिया मालूम होता है। तुमने नमक की जगह कही ……

अनोखे – मैंने नमक तो ठीक बंद डिब्बे में से डाला है। यह रहा वह डिब्बा।

लक्ष्मी – क्या इस डिब्बे में से नमक डाला है। फिर तो गजब कर दिया। यह डिब्बा नमक का नही रगोली का है। तुम्हें मालूम नही था तो मुझसे पूछ तो लेते।

अनोखे – पूछ कैसे लेता। उधर तुम्हारी सहेली जो बैठी थी। अच्छा रहने दो, रोटी और हलुवा ही खा लो।

लक्ष्मी – राम राम। यह हलुवा है। अच्छा हुआ यह भी गोराचाची

के यहाँ नहीं दे आई, वरना वह और भी बिगड़ती।

अनोखे – क्यों हलुए को क्या हो गया ?

लक्ष्मी – खुद ही खाकर देखो न।

अनोखे – राम राम। अरे अरे, इसमें तो नमक ही नमक है। पिसी हुई शकर समझकर नमक ही डाल दिया।

लक्ष्मी – हलुवा बनाने को कहा था किसने। और फिर शकर डालने के पहले चखकर तो देखते।

अनोखे – ओह, सारा असली घी बेकार गया। मैं कहता हूँ डिब्बों पर लेबल लगाकर क्यों नहीं रखती तुम?

लक्ष्मी – हो गई आज तुहमरी परीक्षा। खाना बनाना खूब जानते हो तुम। रोटियाँ भी ऐसी बनाईं हैं जो दुनिया के सभी देशों के नमूने हों और टूटते नहीं टूट रहो हैं।

अनोखे – हार मानी मैंने। अब तुम फौरन दूसरा खाना बनाओ। मेरे पेट में तो बुरी तरह से चूहे दौड़ रहे हैं।

अनोखेलाल का विवाह-दिन

पात्र

अनोखेलाल,
लक्ष्मी ।

अनोखे – लक्ष्मी, आज हम जिस जगह जा रहे हैं वह इतनी सुन्दर है कि उसका वर्णन ही नहीं किया जा सकता । तुम देखोगी तो बस देखती ही रह जाओगी । पहाड़ों में से नदी इस तरह घूमकर आती है कि लगता है नदी यहीं फूट पड़ी है । चारों ओर दूर तक घने जंगल है । वहाँ एक सुन्दर शिवालय भी है ।

लक्ष्मी – यह तो ठीक है । लेकिन वहाँ रुकने के लिए कोई होटल वगैरह भी है ।

अनोखे – होटल क्यों नहीं है ? कितने ही सैलानी वहाँ जाते रहते हैं इसलिए रुकने का काफी अच्छा इन्तजाम है ।

लक्ष्मी – तो ठीक है ।

अनोखे – पिछली बार जब दोस्तों के साथ गया था तभी सोचा था तुम्हें जरूर दिखाऊँगा यह जगह ।

लक्ष्मी – गाड़ी कितने बजे जाती है ?

अनोखे – दो बजे । झटपट तैयारी कर लो । शाम को छः बजे हम रेल से उतरेंगे । उतरते ही हमें बस मिल जाएगी जो एक घण्टे में हमें मुकाम पर पहुँचा देगी ।

लक्ष्मी – ठीक है ।

अनोखे – वैसे हमें कल चल देना चाहिए था । आज अपने विवाह-दिन को हम वहाँ होते ।

लक्ष्मी – तुम्हें तो सब बातें वक्त पर सूझती हैं ।

अनोखे – फिर भी आज के ही दिन तो वहाँ पहुँच जायेंगे । रात होटल में गुजारेंगे और दूसरे दिन साइट—सीइंग ।

लक्ष्मी – अच्छी बात है ।

अनोखे – विवाह का दिन घर मनाने से तो फिर भी अच्छे रहेंगे ।

लक्ष्मी – अच्छा, कपड़े तुम्हारे कौन-कौन से रख लूँ ?

अनोखे – ज्यादे रखने की जरूरत नहीं है सिर्फ एक जोड़ी ।.........

अरे, यह क्या, तुम ये अपने कितने कपड़े रख रही हो? इतनी साड़ियों का क्या करोगी? सिर्फ एक दिन के लिए तो जाना है।

लक्ष्मी – एकाध दूसरी साड़ी ज्यादा पड़ी रही तो क्या बिगड़ता है।

अनोखे – तुम्हें तो लग रहा है जैसे अपने भाई की शादी में ही जा रही हो।

लक्ष्मी – तुम तो ऐसी बातें करते हो जैसे भाईसाहब की शादी में तुमने मुझे ढेरों साड़ियाँ खरीद दी थी।

अनोखे – तुम औरतों के ट्रंक के ट्रंक साड़ियों से भरे रहते हैं तो भी मन खाली ही रहता है।

लक्ष्मी – और मर्द उसे भरने के लिए हर महीने दस-दस साड़ियाँ खरीदकर लाता है।

अनोखे – तुम्हारे भाई साहब जैसे मर्द हो तो वे ऐसा भी करें।

लक्ष्मी – तो क्या मेरे भाईसाहब भाभी को साड़ियाँ ही लाते रहते हैं!

अनोखे – साड़ी की ही क्या बात, कोई भी चीज। इधर भाभी के मुँह से कोई चीज निकली कि उधर भाईसाहब निकले खरीदने के लिए। बीबी के गुलाम हैं पूरे गुलाम।

लक्ष्मी – उनके प्रेम को गुलामी कहते हो न तुम।

अनोखे – गुलामी नही तो क्या?

लक्ष्मी – तुम जैसे थोड़े हो हैं कि हमेशा बीबी से झगड़ते रहें। प्रेम-विवाहवाले ऐसे ही एक दूसरे की मर्जी से रहते हैं।

अनोखे – एक–दूसरे की मर्जी से नही मियाजी बीबीजी की मर्जी से कहो। और मियाजी बीबीजी से जरा भी खिलाफ चले जाएँ तो बस प्रेम, वेम सब ताक मे रखकर बीबीजी मिया–जी की अच्छी खबर लेने लगती हैं।

लक्ष्मी – मेरे भाईसाहब के बारे में यह नियम बिलकुल लागू नही होता।

अनोखे – क्योंकि तुम्हारे भाईसाहब दुनियाँ से बिलकुल निराले हैं।

लक्ष्मी – हैं ही निराले। इसमें क्या शक है।

अनोखे – बिलकुल शक नहीं। तभी तो बी० ए० में चार-चार बार बैठने के बाद भी कामयाबी हासिल नहीं कर सके।

लक्ष्मी – नहीं हासिल कर सके तो तुम्हें इससे क्या ?

अनोखे – दूकानदारी का खानदानी धन्धा है इसलिए ठीक, नहीं तो दस-दस जूते घिस जाते चक्कर मारते-मारते फिर भी कोई नौकरी हाथ न आती।

लक्ष्मी – न आती तो न आती, लेकिन तुम्हारे दरवाजे न आते।

अनोखे – प्रेम करने वाले भी कैसे समझ बूझकर प्रेम करते हैं। नजर पहले बाप पर यानी उसकी तिजोड़ी पर बाद मे उसकी बेटी पर।

लक्ष्मी – हां, उनकी तिजोड़ी के लिए ही तो भाईसाहब ने भाभी से प्रेम किया था।

अनोखे – मैं कहता हूँ यदि ऐसा नहीं था, वह प्रमविवाह ही था तो भाईसाहब ने दहेज क्यों लिया ?

लक्ष्मी – दहेज क्यों लिया। अरे, देने वाले दें तो क्या मना कर दें।

अनोखे – यदि ऐसी ही बात थी तो तुम्हारे पिताजी ने इतनी ही रकम दो ऐसी बात क्यों कही ?

लक्ष्मी – बेटे के बाप को बिलकुल ही तो चुप नहीं बैठना चाहिए। नहीं तो लोग समझ बैठते हैं गरज इनकी है और बेटे में जरूर कोई न कोई खोट है।

अनोखे – वाह भाई वाह ! चित भी मेरी पट भी मेरी।

लक्ष्मी – वे लोग सिर्फ लेना ही नहीं जानते, देना भी जानते हैं। बेटियों की शादियों में कम नहीं दिया था।

अनोखे – हां जरूर । लेकिन अपनी दो बेटियों की शादियों में जितना दिया था वह ब्याज समेत एक ही बेटे की शादी से वसूल कर लिया ।

लक्ष्मी – तो तुम्हें कम मिला था ? बेटी का बाप कितना ही लुटा दे लड़के वालों को वह कम ही लगता है ।

अनोखे – क्यों न लगे ? किए हुए वायदे भी तो नहीं निभाये । रेडियो देने की बात कही थी आजतक रेडियो आ रहा है । वैसे तुम ही किसी रेडियो से कम नहीं हो ।

लक्ष्मी – अच्छा तो मैं रेडियो हूँ ।

अनोखे – रेडियो को तो बटन घुमाकर बन्द भी किया जा सकता है । तुम्हारा मुँह तो दिन–रात चलता ही रहता है ।

लक्ष्मी – हां हां, मेरा मुँह तो दिनरात चलता रहता है और तुम जैसे अपना मुँह बन्द ही किए रहते हो । मैं हवा से ही तो बातें करती रहती हूं ।

अनोखे – मेरे पिताजी के पास जाकर तुम्हारे पिताजी ने ऐसी ऐसी बातें हांकी कि बस । मेरी बेटी ऐसी है, वैसी है । उसमें यह गुण है, वह गुण है । उसे यह आता है, वह आता है । पिताजी बिचारे भोले-भाले थे उनकी बातों में आ गए ।

लक्ष्मी – वे तो भोलेभाले थे बातों में आ गए । लेकिन तुम तो होशियार थे—खुली आंखों वाले । एक दो बार नहीं चार-चार बार देख लिया था फिर कैसे हांमी भर ली ।

अनोखे – तुम्हारे पिताजी बोले थे—मैं लड़के को यह दूंगा, वह दूंगा । लड़के की आगे पढ़ने की इच्छा होगी तो उसे पढ़ाऊँगा ।

लक्ष्मी – तो इसी लोभ मे शादी कर ली थी शायद ।

अनोखे – लोभ से क्या मतलब था । जितना मिला उससे ज्याद तो कहीं और भी मिल जाता ।

लक्ष्मी – तो फिजूल तुमने हामी भर ली । लड़की कुँवारी नहीं बैठी रहती । कितनी ही जगहों पर बातचीत चल रही थी मेरे लिए । कही भी हो जाती शादी ।

अनोखे – और मेरी तुमसे शादी न होती तो मैं जरूर कुँवारा रह जाता, नही ? मेरे लिए भी कितनी ही लड़कियों के बाप चक्कर काट रहे थे । तुम्हारे पिताजी को सचमुच लोगों को मूर्ख बनाना खूब आता है ।

लक्ष्मी – तो क्या उन्होंने तुम्हें मूर्ख बनाया ?

अनोखे – मुझे ही नही, तुम्हारी बहन उमा के पति को भी । मुझे तो छोड़ो, एक छोटा कर्मचारी हूँ । लेकिन उमा का पति तो प्रोफेसर है अच्छाखासा कालेज मे । उसे भी उन्होंने मूर्ख बना दिया ।

लक्ष्मी – सो कैसे ?

अनोखे – प्रोफेसर देखो कैसा एकदम गोराचिट्टा सुन्दर युवक है । और तुम्हारी उमा कैसी है सो मुझसे क्यो वर्णन कराती हो । तुम जानती ही हो ।

लक्ष्मी – तुम्हारा मतलब है उमा सुन्दर नहीं है । तुम्हें तो हम लोगों के दोष ही नजर आते हैं ।

अनोखे – सच्ची बात कह दो तो हर किसी को चुभती है ।

लक्ष्मी – दोष सब मेरे पिता मे हैं, मेरे भाई साहब मे है । हमारे पूरे खानदान में दोष ही दोष हैं । (रोने सी लगती है) सीधे सच्चे हो तो बस तुम और तुम्हारा खानदान ।

अनोखे – बस जरा कुछ कह दिया तो रोना शुरू :

लक्ष्मी – सारी खरी खोटी सुना डालने पर भी जरा कुछ ही कहा है । सीधीसादी मिल गई हूँ इसलिए हमेशा दबाते ही रहते हो ।

अनोखे – बड़ी सीधी हो । दुनियाँ की और औरतें सीधेपन का सबक

बस तुम्हीं से सीखें।

लक्ष्मी – मेरी एक भी हविस पूरी हुई है तुम्हारे यहाँ आकर? कहती ही रह गई मैट्रिक को बैठती हूँ, लेकिन बैठने ही नहीं दिया। नहीं तो कभी की मैट्रिक हो जाती अबतक।

अनोखे – जरूर हो जाती। तुम्हारी अंग्रेजी को देखकर बोर्ड तुम्हें मैट्रिक का नहीं पी-एच० डी० का सर्टिफिकेट दे डालता।

लक्ष्मी – उड़ालो मेरी खिल्ली। अबतक खिल्ली ही उड़ाते आए। इतना तक नहीं बना कि ढंग से पढ़ा देते।

अनोखे – मेरे बूते के बाहर की बात कोई कहे तो वह मैं कैसे कर सकता हूँ।

लक्ष्मी – तो क्या मेरी अंग्रेजी इतनी गईबीती है कि कोई पढ़ा ही नहीं सकता ? आजकल तो अच्छे-अच्छे मैट्रिक वालों को भी ढंग से अंग्रेजी नहीं आती। किसी बाहरवाली की ट्यूशन की बात होती तो फौरन तैयार हो जाते।

अनोखे – क्यों नहीं। दाम करे काम।

लक्ष्मी – तो मैं घर की नौकरानी हूं जो फोकट में रातदिन पिसती रहती हूँ। यही वकत है मेरी इस घर में। ऐसा न होता तो मेरे शौक पूरे न होते। नहीं मैट्रिक तो संगीत की परीक्षा ही दे लेती, लेकिन यह हविस भी पूरी नहीं हो पाई।

अनोखे – दे लेती संगीत की परीक्षा, किसने रोका था ?

लक्ष्मी – कैसे दे लेती। एक हारमोनियम खरीदने की बात कही सो मना कर दिया। घर पर जब तक रियाज न हो संगीत की परीक्षा कोई कैसे दे।

अनोखे – तुम्हारा घर पर रियाज यानी मेरा सिरदर्द। हारमोनियम खरीदना यानी पैसे देकर सिरदर्द खरीदना हो जाता।

लक्ष्मी – तुम्हें तो मेरी हर बात सिरदर्द लगती है। मैं ही तुम्हारे लिए सिरदर्द हूं यही कहो न।

अनोखे – क्या बात कह दी बस–रत्ती न रत्ती बराबर।

लक्ष्मी – सिरदर्द हूं न मैं तुम्हारे लिए। ऐसी ही बात है तो क्यों खुशामद भरी चिट्ठियां लिखते रहते हो जब भी मायके चली जाती हूं। हर चिट्ठी मे लिखकर जाता है– ऐसा लगता है तुम कब आती हो, इधर तुम्हारे बिना चैन नहीं पड़ता। सब झूठ। मर्दों की बातों पर तो विश्वास ही नही करना चाहिए।

अनोखे – लेकिन मर्द औरतों की बातों पर हमेशा विश्वास करते हैं यह जानते हुए भी कि वे झूठी हैं।

लक्ष्मी – बड़े भोले होते हैं न मर्द जो झूठी बातों पर भी विश्वास कर लेते हैं। हारमोनियम से तुम्हारा सिर दुखता था लेकिन मेरे सिलाई-कढ़ाई के काम से तो नही दुख सकता था। लेकिन मेरा वह शौक भी तुमने कहां पूरा होने दिया ?

अनोखे – सिलाई-कढ़ाई का काम सीखने के लिए तुम क्लास को जाती तो थी। मैंने तो तुम्हें कभी मना नही किया था। खुद तुम्ही ने जाना बंद कर दिया।

लक्ष्मी – तुमसे कहा एक मशीन ले दो लेकिन तुम्हारे कानों पर जूं तक नही रेंगी।

अनोखे – तुम्हारे शौक ही ऐसे हैं जो मुझे खर्चे मे डालते हैं। इसके लिए मैं क्या करूं।

लक्ष्मी – जो शौक खर्चे में नही डाल सकते थे वे भी तुमने कहां पूरे होने दिए।

अनोखे – ऐसे कौन से थे जो पूरे नही होने दिए ?

लक्ष्मी – क्यों, मैं नाटक में काम करना चाहती थी, कहां तुमने इजाजत दी ?

अनोखे – लक्ष्मी, घर पर जो रोज का नाटक करती हो इसी से तुम्हारा जी नही भरता ?

लक्ष्मी – बस ताने देकर बात टाल देना खूब आता है तुम्हें। स्कूल के नाटकों में मेरे काम को देखकर लोग कह उठते–भविष्य में यह एक अच्छी कलाकार बनेगी।

अनोखे – बच्चों को प्रोत्साहन देने के लिए ऐसा ही कहा जाता है लक्ष्मी। फिर इसमें उनका जाता क्या है? औरतों को तो बस मेरी राय में एक ही कला आनी चाहिए।

लक्ष्मी – कौन सी?

अनोखे – पाकशास्त्र की कला।

लक्ष्मी – बस दकियानूसी लोगो जैसे विचार हैं तुम्हारे।

अनोखे – इस कला के सामने सारी कलायें बेकार हैं। इसी को तुम ठीक तरह से सीख लेतीं।

लक्ष्मी – तो तुम्हारे कहने का मतलब है मुझे खाना बनाना नहीं आता है।

अनोखे – खाना तो सभी औरतें बनाना जानती हैं।

लक्ष्मी – लेकिन सभी अच्छा बना लेती हैं जरूरी नही। यही कहना चाहते हो न? किसी अच्छी खाना बनानेवाली से ही कर लेते शादी।

अनोखे – मेरी तो यही इच्छा थी। लेकिन तुम्हारे पिताजी गले पड़ गए थे न।

लक्ष्मी – मेरी सहेलियां कितनी भाग्यवाली हैं। पति उनकी कैसी खुशामत करते रहते हैं।

अनोखे – लोगों को दिखाने के लिए। बंद कमरों मे वे भी लड़ते रहते हैं।

लक्ष्मी – तुम गए थे उनकी लड़ाइयां देखने। उनके पति तुम्हारी तरह लड़ाकू नही हैं।

अनोखे – तुम जानती नही लक्ष्मी शादी लड़ाई–झगड़े का ही शुगर-कोटेड रूप है।

लक्ष्मी – यह व्याख्या सिर्फ अपने यहाँ चरितार्थ होती है ।

अनोखे – सच, आदमी शादी से पहले कितना आजाद, कितना बेफिक्र होता है । एक बार शादी के जाल मे फँसा नही कि जिंदगी की सारी खुशियां काफूर हो जाती हैं ।

लक्ष्मी – तो की क्यों शादी ?

अनोखे – कमबख्ती तो यह है कि इस बात का ज्ञान ही आदमी को शादी के बाद होता है । शादी से पहले की दुनिया सपनों की दुनिया थी–बहारों, सब्जबागों की दुनिया ।

लक्ष्मी – औरत आती है और इन सबको उजाड़कर रख देती है यही न ।

अनोखे – वह जिंदगी कहानी ही बनी रह गई जब मैं कहानियां लिखा करता था ।

लक्ष्मी – इसलिए कि जब जब तुम लिखने बैठे मैं तुम्हारी कलम पकड़ लेती थी ।

अनोखे – कलम तो नहीं पकड़ी तुमने, लेकिन दाल-आटे और नोन-मसाले के चक्कर में ऐसा डाल दिया कि दिमाग में कहानियाँ नहीं यही चीजें चक्कर मारती रहती हैं ।

लक्ष्मी – यह कहो न खुद में कोई प्रतिभा नहीं । मुझे दोष देकर क्या होता है । क्या और शादीशुदा लेखक कहानियाँ नहीं लिखते?

अनोखे – लिखते हैं, लेकिन उनकी औरतें उनकी प्रतिभा को स्फूर्त करती रहती हैं । तुम्हारी तरह मरने नहीं देतीं । उस जमाने की तो अब एक भी बात नहीं रही । फुटबाल और हॉकी का नंबर एक का खिलाड़ी था । शतरंज और ब्रिज में भी मेरी कोई बराबरी न कर पाता ।

लक्ष्मी – हाँ । तुम्हारे खेलों के बारे में हमेशा समाचारपत्रों में खबरें छपतीं, फोटो छपते ।

अनोखे – पज़ल छुड़ाने का शौक था वह भी मुझे शादी के बाद छोड़ देना पड़ा ।

लक्ष्मी – अच्छा हुआ। फालतू बातों में कितना समय बरबाद होता था।

अनोखे – समय, अरे हाँ, समय क्या हो गया? हम लोगों को दो की गाड़ी से जाना है न। ओह, एक बज गया। लक्ष्मी, जल्दी करो। तुमने कितना समय बरबाद कर दिया झगड़े में।

लक्ष्मी – समय मैंने बरबाद कर दिया या तुमने?

अनोखे – तुमने। क्योंकि झगड़ा तुमने बढ़ाया।

लक्ष्मी – हाँ। तुम बराबर चुप ही बैठे थे तब से।

अनोखे – तुम बातें ही करती रहोगी क्या? अब फौरन तैयार हो जाओ न।

लक्ष्मी – मुझे तैयारी करने में कितनी सी देर लगती है।······हाँ, लो यह तैयार हो गई।

अनोखे – अरे, यह क्या घडी में अभी भी एक ही बज रहा है। अरे, यह तो बंद है।

लक्ष्मी – अंदर की अलार्म घड़ी में देखो न कितने बजे हैं।

अनोखे – ओह, पौने दो हो रहे हैं। अब गाड़ी हमें किसी भी सूरत में नहीं मिल सकती।

लक्ष्मी – हम लोग कोई प्रोग्राम बनायें और वह पूरा हो जाए ऐसा कभी हुआ है। पिछले साल बंबई का प्रोग्राम बनाया था। वह आज तक पूरा हो रहा है।

अनोखे – वह तो उसी समय पूरा हो जाता लेकिन जाने के अगले दिन तुम्हारे भाईसाहब जो आ टपके थे।

लक्ष्मी – हाँ, प्रोग्राम फेल हुआ तो दोष मेरे भाईसाहब का।

अनोखे – तो क्या मैं अपने भाईसाहब को देता। आज अपने विवाह के दिन हम कितनी अच्छी जगह जा रहे थे। खैर मरने दो लक्ष्मी। हम अपना विवाह-दिन यहीं घर पर ही मनायेंगे।

लक्ष्मी– इसी तरह तू-तू मैं-मैं करते हुए।

अनोखे – हर गृहस्थी में यही होता है लक्ष्मी ।

लक्ष्मी – विवाह के दिन भी ।

अनोखे – मैं तुम्हारे लिए बढ़िया चाय तैयार करता हूँ । फिर तो खुश ।

(दरवाजे पर दस्तक)

लक्ष्मी – रहने दो चाय मैं बनाती हूँ । बाहर देखो कौन है ?

अनोखे – अच्छा ।……(दरवाजा खुलता है ।)

आवाज – साहब आपका तार ।

अनोखे – अरे तार । ··ओह, लक्ष्मी देखो तो अपने विवाह दिन पर तुम्हारे भाईसाहब ने बधाई का तार भेजा है। लिखते हैं—शुभ विवाह-दिन पर हार्दिक बधाइयाँ । नूतन वर्ष मंगलमय हो ।

लक्ष्मी – हाँ, प्रातः से ही काफी मंगलमय है ।

अनोखे – मंगलमय, हाँ मंगलमय ।